भगवान अंत्यकाल के बारे में बात कर रहे हैं

मनुष्य के लिए बुलावा

आंथोनी ए.एड्डी

पहले शब्द

ईसाई और गैर ईसाई लोगों की जीवन शैली में रहने वालो केलिये, एक शाश्वत विश्वास यानी इस घरती का जीवन को नित्य जीव से तुलना करें तो, इसकी स्थितिबहुत कमजोर की है । इसका समझने केलिये यह किताब लिखी गयी है ।

इस गहरे खड को पारकरने की रास्ता जो लोग जानते नही उन केलिये, शाश्वत सुझाव की तरह आगे बढने केलिये बुद्धि विकास पाने केलिये और, सभी बातों के बारे में समझने वाली किताब है, यह किताब ।

यह खड आजकल भगवान के पुत्र ईसू प्रभू के सूली पर यज से गाड दिया गया है । कृपा के रहने केलिये, न्याय केलिये, प्यार में कृपा को देखने केलिये, निर्दोष रक्ष एक अनोखे काम के लिये छलक किया गया और खोये गये लोगों को उनके पाप जीवन से मोडकर, साफसुधरे बने ।

तुम अपने मनकी भावनाओं को एक बार सोचे लो । जीवन तो है । वह पुराने कीचड से पैदा नही हुआ । एसा कभी नही होता है । उसको एक साधन की तरह समझना अच्छी बात नहीं । सिर्फ अपने आप सनायी गयी है ।

मनुष्य के मन में विचारों की समग्रता समझौता न होने से, जिन्दगी का सत्य जो है वह न्याय, स्वतंत्रता और नीति से भरे महत्वपूर्ण व्यक्ति नही तो जीवन रहना हैं मुश्किल है । वह जिंदगी के अनुभवों से ही मिलता है । इसलियें मनुष्य को अपने मन की विचार से राजी होना चाहिये ।

भगवान नही हैं यह वाक्य कौन बोलेगा । अन्युब से मैने एक सवाल पूछा । इस प्रश्न पर ध्यान दो वहाँ के पानीके घोडे के बारे में और पानी के मगर के बारे में भी विचार करो । यह आदमी की सझौतेकेलिये दिया गया है ।
(अच्युब गंथ ३८ से ४१ अध्याय, परिशुद्ध गंथ, किंग जेमरन फडि)

जिंदगी का कारण जिनको मालूम है, वे लोग इस सच्चाई को आसानी से मसझ सकते हैं । यह कोई असत्य की बात नही । समाधी के निकट रहनेवाले, एक मामूली मानव के जैसे सोचवाले, हमेशा नीति के बारे में शक करनेवाले अंध आदमी के विचार नहीं हैं ।

वह राशनी में प्रकट की गयी है । पूरे गवों से भरे परिसर से आयी । वह एक सेल जौसे रहती है । वह एक मामूली कण के रूप में रहती है । भगवान की स्थिति आसानी से समझ नही पा सकते हैं । इसका कारण क्या है ? इसके बारे में खूब सोच विचगरकर समझना है ।

भगवान

अंत्यकाल के बारे में

बात कर रहे हैं

मनुष्य के लिए बुलावा

पहला आवरण पृष्ट पर चित्र/फोटो

''भूमियुत्यान''

बिलयांडर्सु (क्रूमेंबर, अपोल्लो 8, दिसंबर 2, 1968)
चंद्रमंडल के ऊपर से अवतार हो रही भूमी को दिखा रही है।

सूचनाः इस दृश्य चंद्रमंडल में रहनेवाले व्यक्ति को ही दिखेगा। क्योंकि चाँद भूमी की चारों ओर एक ही पद्धति में भ्रमण करेगी। (यानी हमेशा चाँद की एक ही ओर भूमी के सामने रहेगी)

चाँद पर रहकर देखने वाले परिशीलक को भूमि नहीं दिखती है।

मूल : विकि पीडिया 2400 X 2400 पिक्सल फैल सैज 304 KB
File : NASA Apollo8 – Dec 24 - Earthrise.JPG

Original image size and realationship has been retained.

Black has been Cropped across the top of the image.

भगवान
अंत्यकाल के बारे में
बात कर रहे हैं

मनुष्य के फायदा के लिए की गयी जो है उस पर मनुष्य की स्वतंत्रता के लिए भगवान के बुलावे को सुनाने के लिए प्रेम भरित मनुष्य की हृदय को पहुँचने की शाश्वत अनुबंध होने के लिए, मनुष्य के शाश्वत जीवन प्राप्त होने के लिए।

मनुष्य के लिए बुलावा

मनुष्य के लिए बुलावा पक्का किया गया है
उसके समझौते को तुरंत लिया जाता है
इसके बजाय कुछ भी न चाहते हुए,
जो अगापे द्वारा पैदा हुइें हैं, उनके सिवाय सभी
सूली पर रखी गयी है।

आंथोनी ए.एड्डी
(रचनाकार)

For downloads and text searching capabilities of
His on-line Scrolls (texts) visit
The Website of The Lord
www.thewebsiteofthelord.org.nz

The following five titles are presently available in Telugu.
Book 3 in translation.

1. "God Speaks of His Return Introducess His Banner"
2. "God Speaks in His Scrolls on The Website of The Lord"
4. "God Speaks in His End-time Calls for Man"
5. "**God Speaks on His Eternity with Letters from The Son"**
6. "**God Speaks for His Bride via The Clouds of Conflict"**

Copyright 2011-2014 The Advent Charitable Trust
Hamilton, New Zealand
eMail via: www.thewebsiteofthelord.org.nz
All rights reserved worldwide.

ISBN: 978-0-9922547-0-4 Hindi soft Cover, 192pp2018)
also as:
ISBN: 978-0-9922547-1-1 (Hindi PDF, 194pp 2018)

Original English Manuscripts prepared on a 27 in iMac™©
with the use of Nisus®©writer Pro.

All trademarks tm and intellectual rights remain the property of their
respective owners.

मनुष्य के लिए अंत्यकाल के बुलावा

शुरू से ही, प्रभु ईसा मैं हूँ, मनुष्य से संबंध रखा हूँ।
उसके अस्थित्व खडे रखने तक
वह अपनी समस्याओं में, परिक्षाओं में दुविधा होते वक्त,
वह अपनी स्वास्थ्य के लिए कोशिश करते वक्त,
वह शैतान की आत्माओं के समूह से लडकर बचते वक्त,
वह आक़ल के लिए आशा करते रहते वक्त,
प्रभु ईसा मैं इस सृष्टी को सुरक्षित रखनेवाला हूँ।
इस जीवन में पिता के समान मदद करते हुए
इस जीवन की अस्थित्व को आदरण देते हुए
मनुष्य अपनी आत्मा को समझते हुए समझौत देनेवाले
मनुष्य भगवान को जानने के लिए आगे जाने की सहयोग देते हुए
मनुष्य अंत्यकाल के लिए सन्नद्ध होने केलिये उसको आगे ले
जानेवाला मैं हूँ।
प्रभू ईसा मैं हूँ
परिपूर्ण की स्थावर, मैं हूँ।
समाधान की कर्ता, मैं हूँ।
पाप की माफी के लिए संगतराश मैं हूँ।
संरक्षण देनेवाला हूँ।
नीतिमत्व को परिभाषित करनेवाला हूँ
भेडों केलिये अच्छा संरक्षक हूँ।
प्रभु ईसा मैं हूँ –
मानव जीवन की अंत्यकाल में रहे इस दिन के मनुष्य से मैं बात
करूंगा।
वह अंत्यकाल में है,
वे अपनी इच्छानुसार जीवन बिता रहे हैं,
अंत्यकाल की प्रस्ताव के कारण, उसका मंजिल होगी,

अंत्यकाल के गमन के अनुसार मनुष्य की स्वतंत्रता फैसला की जा रही है।

अंत्यकाल के प्रस्ताव के कारण, मनुष्य की नित्यंत्व की एक आवास रही है।

मंजिल की परिस्थितियाँ सीधी है और साफ की गयी है।

पाप की हालत को पुनः समीक्षा कीजिए।

कृपा की हालत को पुनः समीक्षा कीजिए।

क्यों कि मंजिल की परिस्थितियाँ अस्थिर नहीं रहेगा।

पाप की वाद–विवाद की जनकारी लेलो,

महिमान्वित कष्पा के बारे में जान लो

इसलिए मनुष्य को अपनी पाप के लिए मूल्य देना है या अमित कृपा को पाना हैं।

वह अंधेरी गहराई में फेंक देना है या प्रकाश में ला बैठना हैं। उनकी पूरे विवरण के लिये गौरव को प्राप्त करने के लिए उमग से रहना चाहिए।

या ईमानदारी सहित विश्वास के द्वारा कडी प्रतिष्टा को प्राप्त करना है।

मेरे लिए इंतजार कर रही सभी को शुभकामनाएँ दूँगा।

पाप में रहकर मुझे न जाननेवालों की और मेरा सूँह मोड लेता हूँ।

इस जीवन काल में जिसका नाम मेमने की जीव ग्रंथ में होता, वे ही योग्य है। उन लोगों को ही एक मौका, स्वीकार करने की जगह रहेगी।

जल्दी में खतम होनेवाले एक जीवन काल

मेरे वापस आने के पहले रह गयी एक जीवन काल,

दिन चलते ही खतम होने वीला एक जीवन काल

मनुष्य का जीवन काल भगवान से दिया गया है।

मनुष्य का जीवन काल जल्दी ही खतम हो जायेगा।

मनुष्य का जीवन काल उसके सन्नद्ध होने के लिए दी गयी।

वह भगवान की ज्ञान को पाने के लिए हैं।

इच्छानुसार यात्रा करने केलिये, आगे जाने केलिये गौरव प्रद निर्णय से भरा है।

भगवान से अंत्यकाल का दर्शन

प्रभु ईसा मैं हूँ, मेरे सेवक आंथोनी से, आज भूमी के बारे में हुई दर्शन से बात कर रहा हूँ।

मेरे आरोहण के लिए एक दर्शन

भगवान के किले को सूचित करने वाले एक दर्शन के साथ मैं बात कर रहा हूँ।

प्रभु ईसा मैं निश्चय ससे बात कर रहा हूँ।

साक्षी की बात बोल रहा हूँ।

मेरे सेवक आंथोनी के बारे में पिता का आशय,

उन्हें दर्शन प्राप्त होना है,

दर्शन को प्रकट करना है,

दर्शन को साक्षी भूत के रुपये रखना चाहिए, यही उनका आशय

क्यों कि यह दर्शन भगवान के सिंहासन स्थान से आ रहा हैं।

यह परिवर्तन होनेवाले रही अंत्यकाल के लिए हैं।

मनुष्य के श्रम की संबंधित है।

वह दुलहन के लिए है।

वह इस धरती की राजनीती नायक के लिए है।

वह भगवान से सन्नद्ध की गयी है।

आनेवाली प्रकाशि का दिन है।

भगवान के राज्य पालन के लिए है।

यह दर्शन त्रित्व के प्रकाश से आ रहा है।

वह प्रभु के आरोहण के लिए है।

वह परिशद्धलोगों को भगवान के निकट लाने केलिये

वह परिशुद्ध लोगों को परिवर्तन करने को,

वह भगवान की उग्र को बहाने केलिये

वह सफेद घोडे पर सवारी कर रहा व्यक्ति के बारे में,

वह धरती पर रहनेवाली सारी जनता को गवाह देने के बारे में रहगये हैं।

वह मेरी बाता की कामयाबी के बारे में है।

वह राजाओं के राजा की राजतिलक के बारे में हैं।

यह दर्शन मेरी आत्मा की मुद्रा के साथ आ रही हैं।

जिस तरह मैंने प्रकट कियां उस तरह वह कई लोगों के लिए हैं।
झुंड के भेडों के लिए
नित्वत्व की स्वागत है
शैतान के दनाव के लिए
अंत्यकाल में रहनेवालों को कृपा दिखाने के लिए
मेरा जनता को ऊँच रखने को
मेरी वधु को सन्नद्ध करने के लिए
आंथोनी ने एक दर्शन को प्राप्त किया था।
भगवान से सीधा जो बोलीगयी,
भगवान की सभी ग्रंथों में भरगयी है
प्रभु के काम–काज के द्वारा प्रकटित किया गया हैं ।
अंत्यकाल मूल्य की तरह प्रभु के सामन रखा गया है।
वधु संघ के लिए, आसन पीठ के सामने संपूर्णता के लिए निर्मित हुई है।
आंथोनी ने इस दर्शन को संपूर्ण रूप से लिखा है
इस दर्शन की उद्धेश्य को
इस दर्शन की उपदेश को लिखा हैं
इसलिये सभी लोगो के सामने वह
किसी भी प्रकार से गंदा नही है ।
कोई अतिशय नहीं हैं
मनुष्य की नाता के बिना रहेगी।
आंथोनी ने स्वयं जो सुना है उसीको लिखा है।
इसीलिए वह
बहुत मूल्य वान सत्य को प्रकटित करेगी।
प्रभु के आदेशों को सुरक्षित रखेगी।
अंत्यकाल की जनता की जिंदगीयों की साक्षी होगी।
आंथोनी इस दर्शन को संपूर्ण समझौते से प्राप्त किया हैं।
इस दर्शन को उसकी आशीर्वाद से
इस दर्शन को उसकी सूचनाओं से
इस दर्शन को उसके इच्छाओं से
इस दर्शन को उसकी बल प्रदर्शन से प्राप्त हुआ हैं।
आंथोनी अंत्यकाल के लिए भगवान को जोडकर, नित्वत्व के लिए वादा के संकलन के रिकार्ड से हैं।

VIII

नित्वत्व के लिए वादाएँ
प्रभु सेजुईह फलोगों के लिए – वादाएँ
पत्तर पर खडे रहने की वादाएँ
भगवान के ग्रंथ में सुरक्षित रखीगयी वादाएँ
सभी के लिए तथ किया गया, गठरी डालने केलिये, उसे स्थिर रखने को सन्नद्ध की गयी वादाएँ।
आंथेनी को भगवान से समीप संबंध हैं।
जीत की भाषा को ही बोलेंगे।
प्रभु की काम–काज को गौरव से, समग्रता से पूरा करेंगे।
दो रास्ताओं में संभाषण रहेगा
मंदिर में आत्मा की संचार कोसमझेगा।
भगवान के डर को हृदय में रखकर पैदल चलेगा।
मैहूँ ईसू प्रभु :

इस सारी दुनिया से बोल रहा हूँ।
जो छुपाकर अपमान का योग्य रहगया उससे बात कर रहा हूँ।
गौरव के लिए रखेंगये लाभों से बात करूंगा।
खराब हुए भोलापन सभर व्यक्तियों से बात करूंगा।
अपराध करके घुमनेवालों से बात करूंगा बिना शर्म से।

मनुष्य को समझने लायक अधिकार और ज्ञान की स्थायी से बात करूंगा।
सभी से बात करूंगा।
सभी को प्रकाश की और लौटाने केलिये, लौटाते है
किसी न किसी विधान में, न्याय के दरवाजा इधर उधर हिलने को समझना हैं।

भूमी पर भगवान की इच्छा को पूरा करने केलिये जरूरत के बारे में बात करेगा।

Printing History

Translation Details
Translated into Hindi
by
Smt. Sukanya Challa
Lecturer, B.Ed. College, Vijayawada.
Sri V. A. Lincon, M.A. Vijayawada.

Publishing Details:
Published in Hindi in 2018
4. "God Speaks to His End-time Calls for Man"
Soft Cover Print ISBN 978-0-9922547-0-4
By The Advent Charitable Trust, Hn, New Zealand
www.thewebsiteofthelord.org.nz

for eBook editions
Under the auspices of
Brother John Annavarapu,
Director:
REACHING FORWARD MINISTRIES
D.No. 23-20-7, Mother Theresa Nagar,
TENALI-522 201, Guntur Dist.,
Andhra Pradesh, South India.
Ph: 08644–220723, Cell: 99480 38559
eMail: reaching_4word@yahoo.co.in

ISBN 978-0-9922547-0-4

Type Setting & Printing:
SRI MITHRA PUBLICATIONS
Swimmingpool Road, Gandhinagar,
VIJAYAWADA - 520 003. Ph: 0866-2579145
eMail: srimithrapublications@gmail.com

मुद्रण विवरण

हिंदी अनुवादक :

श्रीमती सुकन्या चल्ला

हिंदी प्राध्यापिका

विजयवाडा, कृष्णा जिला, आन्ध्र प्रदेश,

मोबइल : 90305 95287

पर्यवेक्षक

श्री.व.अ. लिन्कन, एम.ए.

विजयवाडा : 99490 70757

प्रतियाँ :

हिंदी में प्रकाशन :

श्री जान अन्नवरपु,

रीचिंग फारवार्ड मिनिस्ट्रीस,

इ.न. 23–20–7, मदर थेरिसा नगर,

तेनाली – 522201, गुंटूर जिला,

आन्ध्र प्रदेश, दक्षिण भारत।

फोन : 08644–220723, मोबइल : 9948038559

टैप सेट्टिंग & मुद्रण :

श्री मित्रा पब्लिकेषन्स

स्विम्मिंगपूल रोड, गांधिनगर,

विजयवाडा - 520 003.

फोन - 0866 - 2579145

eMail: srimithrapublications@gmail.com

An English Word from "REACHING FORWARD MINISTRIES"

It is a great pleasure to present this book "God Speaks To His End-time Calls For Man" in Hindi, the non-regional national language used throughout India. It is initially scribed, through Divine dictation, by Anthony A Eddy. We are grateful to this child of God, as he encourages us all to declare our faith in God and for all who read to seek the gifts of God and the establishing of His divine relationship. To this end, we are involved with evangelism in rural and urban areas, church plantings, social improvements through orphanages, homes for widows, rehabilitation schemes, tribal schools, Street Children programmes, bore well water schemes and others. Major advances are enabled by The Holy Spirit as a result of the prayers and assistance of Brother Anthony A Eddy, a willing servant in his taskings within the vineyard of God. His ongoing efforts in visiting India, encouraging our pastoral commitments under the covering of the The Lord's ministry, as our beloved God-parents Adrienne J Eddy and Anthony A Eddy, are appreciated with our whole-hearted thanks due to this lovely family. We are thankful to Brother V. A. Lincoln, an elderly man, who oversaw the translation of this book into Hindi. We, in presenting this book, sincerely trust it will be a blessing to all those who read it. May they all delve deeply into these matters for they are of God.

Yours in Him

Brother **John Annavarapu**

Director

Reaching Forward Ministries

Tenali, Guntur Dist.

आभार समर्पण

भगवान अपनी कृपा के कारण आज का दिन हमें देकर, उसमें संतोष से बिताने की कृपा दिया है। क्योंकि उनका रास्ता प्रतिष्टात्मक है। मनुष्य के लिए उनकी प्रणाली बहुत बढिया हैं। मनुष्य की मंजिल प्रतिष्टात्मक और अधिक महिमान्वित भी हैं।

मनुष्य सत्य मार्ग मैं बढते हुए आगे चलें तो प्रभु खुश रहेंगे। समय आसन्न हान पर, ही अंत्यकाल की सन्नद्धता एक–एक व्यक्ति को अलग विधान में तय किया जा रही हैं।

प्रेमपूर्ण भगवान अपना पुत्र ईसु और परिशुद्धात्मा हमारे संचालक होते हैं, न्यूजिलांड में वैसे ही सारी दुनिया की सेवा को, उनके राज्य के विस्तार के लिए करने वाला कृषी को देखकर, इस परिवार का आदर कर, अशीर्वाद देगा।

मरनाता हे प्रभू आजाइए!

उनका राज्य ध्वज पहले,

2008 सितंबर 1 दिनांक, 10.30. मिनट को सोमवार, तेनाली के पास बुर्रिपालेम गॉव में पहली बार, राज्यध्वज जुलाई 31 रविवार के दिन।

रीचिंग फारवार्ड मिनिस्ट्रीस–तेनाली, आन्ध्र प्रदेश, इंडिया के सहयोग से पहलीबार आविष्कृत की गयी।

प्रस्तावना

इस दैविक बुलावा, सुझावों के साथ दिये गये सत्य, उनके अंतरार्थ की भावनाओं को हमें समझना है। क्योंकि अब वे । प्रधान विषय रहे।

इस बुलावा सिर्फ मैं ने खोजा नही या मैन नही लिखा इस बात की जानकारी दे रहा हूँ। एक प्रधान मूल से इनके पहले हुई अंशों पर निर्मित हुई है मगर इससे विशेष नहीं। ''प्रभु ईसू बोल रहे तो में सुन रहा हूँ'' इन शब्दों से शुरू करके, सहज विषयों को, यह रचनाकार दैविक बुलावों से लिख रहा हैं। मैं समझता हूँ प्रत्येक शब्द के आगे इस बात को लिखने की आवश्यकता शायद नहीं है। कृपया इसे दी गयी, लिखा गयी विषय के साक्षीभूत के समान लेने आवश्यकता है ।

रचनाकार की अभिप्राय इटालिक में लिखा गया हैं। इस तरफ और उस तरफ दो कोटेशन्स "....." जो है उनको दैविक मानना है। जीतिय संस्कृति के कारण, ब्रिटिष स्पेल्लिंग इस्तेमाल किया गया। पढने को समझने केलिये अनुकूल सजा गया है। हर एकको वेबसैट से सावधानी से लिया गया है इन बातों को पाने के पहले या बाद में और अब भी किसी प्रकार की विवरण किताब, अर्थ बताने वाली किताबकोंडी इस्तेमाल नहीं किया । आक्सफर्ड कन सैज् डिक्शनरी को कभी–कभी उपयोग करके दैविक बुलावे के शब्दों को पूरी तरह समझ लिया हूँ। भगवान सीधा मन में सुनाते वक्त लिखा हुआ हैं इसलिए विराम चिन्ह भिन्न रहेंगे। कभी–कभी बढी स्वर अक्षरों को और बडा पेरा के रूप में अलग करना जो है वह दैविक आत्मा से हुई है। चोटी–चोटी स्पेल्लिंग्स जो है वे रचनाकार के है।

वह कभी–कभी उपयोगा किया गया। कुछ स्वर को एक से अधिक अंश रहते है। वह संपूर्ण भाव को समझने के लिए ही हैं। बातें सुनने में और लिखने में बहुत ही ध्यान दिया गया। इसके फल स्वरूप यह सुंदर, दैविक से आविष्कृत किताब आ गया है। प्रत्येक शब्द जैसा सुना है वैसे की याने की कम करना कुछ जोडना, परिवर्तन करना या मुद्रणा को ठीक करना आदि न होने को बहुत ही ध्यान दी गयी।

इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को इस किताब पढने में परिशुद्धात्मा संचालन करेंगे।

विषय सूची

पहला आवरण पृष्ट पर चित्र	II
भगवान अंत्यकाल के बारे में बात कर रहे हैं	III
For downloads	IV
मनुष्य के लिए अंत्यकाल की बुलावा	V
भगवान से अंत्यकाल का दर्शन	VII
Printing History	X
मुद्रण विवरण	XI
An English word from	XII
आभारी समर्पण	XIII
प्रस्तावना	XIV
विषय सूची	XV
विषय सूची अकरादीक्रम	XIX
व्यक्तिगत विशय	XXIII

1.	अंत्यकाल में मानव का घेरी हुए परिसर	1
2.	अंत्यकाल में मरी वधु संघ की पवित्रता	6
3.	अंत्यकाल में विश्वास की कमी	8
4.	मेरा जनता के अंत्य दिन	10
5.	अंत्यकाल में खडी रही मेरी जनता	12
6.	अंत्यकाल में मनुष्य की जरूरी संपदा	15
7.	अंत्यकाल में मेरी आत्मा का अंतरंग में रहना	17
8.	अंत्यकाल की पवित्रीकरण	18
9.	अंत्यकाल में विश्वासों के लिए आहार	20

10. अंत्यकाल में भगवान से हृदय निवेदन 22
11. अंत्यकाल में प्रभू का आगमन 24
12. अंत्यकाल की जीवन व्यथा 26
13. अंत्यकाल की कुचक्र 28
14. अंत्यकाल में मनुष्य के संघर्ष 30
15. अंत्यकाल में अधिक हो गई मनुष्य की संपत्ति 33
16. अंत्यकाल में धोखेबाजी 35
17. अंत्यकाल में मनुष्य के काम–काज 38
18. अंत्यकाल की वाणी 41
19. अंत्यकाल में प्रभु की वेबसैट 43
20. अंत्यकाल की स्वीकृति योग्य स्थिति 45
21. अंत्यकाल में फिर पुष्टी को निश्चय करना 47
22. अंत्यकाल का श्रमानुभव 49
23. अंत्यकाल की शिकायत 51
24. आत्मा के बारमें जो दीन है वे धन्य हैं 53
25. मेरी आत्मा का सुगंध (2) 55
26. प्रातःकाल की शोभा 57
27. भूमि की समृद्धी 59
28. अंत्यकाल में मेरी आत्मा की कमियाँ 61
29. अंत्यकाल में समय से संबंधित ज्ञान 63
30. अंत्यकाल में मेरा जनता की दर्शन 65

31. मेरा जनता की शक्ति 67
32. अंत्यकाल की घूँघट की परदा 69
33. अंत्यकाल में भगवान की शक्ति 71
34. अंत्यकाल में मनुष्य की मर्त्यता 73
35. अंत्यकाल में फेंकी हुए जाल 75
36. अंत्यकाल में प्रभु की इच्छा 77
37. अंत्यकाल में मनुष्य का फैसला 79
38. अंत्यकालमे भगवान की परिशुद्धता (2) 81
39. अंत्यकाल में मानव का आनंदोत्सव 84
40. अंत्यकाल में भगवान की आधिक्यता 86
41. अंत्यकाल में भगवान की इनसाफ 88
42. अंत्यकाल में भगवान का उग्ररूप 90
43. अंत्यकाल में आशीर्वाद भरी धरती 92
44. अंत्यकाल में मेरी जनता की आवश्यकता 94
45. अंत्यकाल में भगवान का मुख्य दरवाजा 95
46. अंत्यकाल में पिन्तेकुस्त दिन 96
47. अंत्यकाल में मेरे बच्चों के आँसु 98
48. अंत्यकाल में मेरे सेवाकों की दैविक सेवा 100
49. अंत्यकाल में जीवन की समतुल्यता 101
50. अंत्य दिनों में मंजिल - मेरे मंदिर 104
51. अंत्यकाल में मजिली की उत्प्रेरक 106

52. अंत्यकाल में मेरे भेडों की चारा 108
53. अंत्यकाल में शैतान के काँटे 110
54. अंत्यकाल में भगवान के बादल 112
55. भगवान का वन 114
56. अंत्यकाल में मनुष्य की नादानी 116
57. अंत्यकाल में प्रेम की आधिक्यता 119
58. अंत्यकाल के व्यापार की लेनदेन 122
59. अंत्यकाल की परिज्ञान 125
60. अंत्यकाल में मानव की मुसीबतें 127
61. अंत्यकाल में एक जाती की दृढता 130
62. अंत्यकाल में मानव की होनेवाली बीमारी 132
63. अंत्यकाल में मधुमक्कियों की आवाज 134
64. अंत्यकाल में धरती पर गिलहरी 136
65. अंत्यकाल के वश में आनेवाले सागर 138
66. अंत्यकाल में सागर जल की सफ़ेदी रंग 140
67. अंत्यकाल में मनुष्य की चिल्लाहट 143
68. अंत्यकाल में मनुष्य के हाथ में गेंद 146
69. अंत्यकाल की रेगिस्थान की आवाज 148
70. अंत्यकाल में पुनरुज्जीवन प्राप्त करने का सवाल 151
71. अंत्यकाल में बहती हुई रही कृपा 159
72. अंत्यकाल में हृदय की कटाई 161

73. अंत्यकाल में मानव की समझौता 164

विषय सूची

अकरादीक्रम :

अ

1. अंत्यकाल में मानव की घेरी हुऐ परिसर 1
2. अंत्यकाल में मेरा वधु संघ की पवित्रता 6
3. अंत्यकाल में विश्वास की कमी 8
5. अंत्यकाल में खडी रही मेरी जनता 12
6. अंत्यकाल में मनुष्य की जरूरी संपदा 15
7. अंत्यकाल में मेरी आत्मा का अंतरंग में रहना 17
8. अंत्यकाल की पवित्रीकरण 18
9. अंत्यकाल में विश्वासों के लिए आहार 20
10. अंत्यकाल में भगवान से हृदय निवेदन 22
11. अंत्यकाल में प्रभु का आगमन 24
12. अंत्यकाल की जीवन व्यय 26
13. अंत्यकाल की कुचक्र 28
14. अंत्यकाल में मनुष्य की घर्षण 30
15. अंत्यकाल में अधिक हो गई मनुष्य की संपत्ति 33
16. अंत्यकाल में धोखाबाजी 35
17. अंत्यकाल में मनुष्य के काम–काज 38
18. अंत्यकाल की वाग 41

19. अंत्यकाल में प्रभु की वेबसैट 43
20. अंत्यकाल की स्वीकृति योग्य स्थिति 45
21. अंत्यकाल में फिर पुष्टी को निश्चय करना 47
22. अंत्यकाल श्रमानुभव 49
23. अंत्यकाल की शिकायत 51
28. अंत्यकाल में मेरी आत्मा की कमियाँ 61
29. अंत्यकाल में समय से संबंधित ज्ञान 63
30. अंत्यकाल में मेरा जनता की दर्शन 65
31. मेरी जनता की शत्कि 67
32. अंत्यकाल की घूँघट की परदा 69
33 अंत्यकाल में भगवान की शत्कि 71
34 अंत्यकाल में मनुष्य की मर्त्यता 73
35 अंत्यकाल में फेंके हुए जाल 75
36 अंत्यकाल में प्रभू की इच्छा 77
37 अंत्यकाल में मनुष्य का फैसला 79
38 अंत्यकाल में भगवान की परिशुद्दता 81
39 अंत्यकाल में मानव का आनंदोत्सव 84
40 अंत्यकाल में भगवान की आधिक्यता 86
41. अंत्यकाल में भगवान का इनसाफ 88
42. अंत्यकाल में भगवान का उग्ररूप 90
43. अंत्यकाल में आशीर्वाद भरी भूमि 92
44. अंत्यकाल में जनता की आवश्यकता 94
45. अंत्यकाल में भगवान का मुख्य दरवाजा 95

46. अंत्यकाल में पिन्तेकुस्त दिन 96
47. अंत्यकाल में मेरे बच्चों के आँसु 98
48. अंत्यकाल में मेरे सेवाकों की दैविक सेवा 100
49. अंत्यकाल में मानव जीवन की समतुल्यता 101
50. अंत्यदिनों में मंजिल - मेरे मंदिर 104
51. अंत्यकाल में मंजिल की उत्प्रेरक 106
52. अंत्यकाल में मेरे भेडों की चारा 108
53. अंत्यकाल में शैतान के काँटे 110
54. अंत्यकाल में भगवान के बादल 112
56. अंत्यकाल में मनुष्य की नादानी 116
57. अंत्यकाल में प्रेम की आधिक्यता 119
58. अंत्यकाल व्यापार की लेन–देन 122
59. अंत्यकाल की परिज्ञान 125
60. अंत्यकाल में मानव की मुसीबतें 127
61. अंत्यकाल में एक जाती की दृढता 130
62. अंत्यकाल में मानव की होनेवाली बीमारी 132
63. अंत्यकाल में मधुमक्कियों की आवज 134
64. अंत्यकाल में धरती पर गिलहरी 136
65. अंत्यकाल में वश में आनेवाले सागर 138
66. अंत्यकाल में सागर जल की सफेदी रंग 140
67. अंत्यकाल में मनुष्य की चिल्लाहट 143
68. अंत्यकाल में मनुष्य के हाथ में गेंद 146
69. अंत्यकाल की रेगिस्थान की आवाज 148

70. अंत्यकाल में पुनरुज्जीवन प्राप्त करने केलिये सवाल 151
71. अंत्यकाल में बहती हुई कृपा 159
72. अंत्यकाल में हृदय की कटाई 161
73. अंत्यकाल में मानव की समझौता 164

आ

24. आत्मा के बारे में जो दीन है वे धन्य है 53
26. प्रातःकाल की शोभा 57

म

04. मेरी जनता की अंत्यकाल 10
25. मेरी आत्मा की सुगंध 55
31. मेरी जनता की शक्ति 67

भ

27. भूमि की समृद्धी 59
38. अंत्यकाल में भगवान की परिशुद्धता (२) 81
55. भगवान का वन 114

व्यक्तिगत विषय

यह किताब मनुष्य को दी गयी निमंत्रण के बारे में कहेगी। मानव की अंत्यकाल प्रयोजन के लिए, अकल और प्रेम की विनती, पूरी तरह भरी किताब हैं।

जो आत्मा नहीं सुनने उन पर गडा– बिड आकर पेडेगी, जिसको विश्वास नहीं है उसको नाश आकर पहुँचेगी,

जो आत्मा नही सजती और आत्मा नही देख सकती फे से आदमी को, पाप का फायदा दिया जायेगा

पिता की वादा हर एक व्यक्ति पर आते ही, दी गयी आशीर्वाद प्राप्त होते ही, ऐसी समय यानी प्रभु कै आगमन के पहले।

सूचना : योवेल 2:28, 29 और प्रेरितों के काम 2:17–21

अगापे,

आंथोनी,

उनका सेवक और रचनाकार,

न्यूजिलांड । जून 11, 2012।

अंकित

प्रेमपूर्ण, विश्वास योग्य, रक्षक, सब के कार्यों पर प्रेम रखने वाले सभी को लौटाकर घर पहुंचाने की आशा से रहे हमारे भगवान को समर्पित है ।

उनकी चौथी किताब को भी उनके बचावा में लेलिये जो भगवान हैं मैं आभारी करने का सच्चा कारण है। क्योंकि मनुष्य की भक्ति केलिये वे ही कारण हैं।

भगवान अंत्यकाल के बारे में बात कर रहे हैं

अंत्यकाल में मनुष्य का आवृत, घेरे हुए परिसर

मौसम की बदलाव, धरती की चलन पर होनेवाले प्रभावों के बारे में बताति है। स्वाधीन में रहनेवाली सीमाओं को बढकर उत्पन्न परिवर्तनों के बारे में कहती है। इस महान सम्मिलित निर्धारित विषयों में घुसकर जाना भी बताती है।
पर्यावरण में होनेवाली परिवर्तन

अपना गमन बढाना है

अविश्वास को स्थापित करती है ।

मनुष्य की बुराई को बाहर प्रकट करती है।

मनुष्य की अकल को बाहर दिखायेगी ।
अपनी गलतियों को ठीक करने के लिए, दूसरों की ओर देखती है। इसके पहले की गई गलतियों की वजह से दर्दसहित उपदेशों को अभी भी ध्यान न देकर फिर तुरंतु वही गलती को करती है।

मनुष्य की बुराई

गिर जानेवाली एक इमारत को खडे करने के लिए प्रयत्न करते हुए उसी में थक जाने वाली स्थिात में रखती है।
वह चलनवाले रेत की अस्थित्व को स्वीकार करेगी।
वह खडी रखी पत्थर को नही रकोजीती है ।
वह उस क्षेत्र में या उस क्षेत्र पर फिर दुख प्राप्त करने के लिए कभी कोशिश नहीं करेगी।
मनुष्यों के द्वारा तात्कालिक रुप में छोडकर बाढ आनेवाली क्षेत्रों में मनुष्य को इमारतें बनाने का की प्रयत्न नहीं करनी चाहिए। अपनी समृद्धि न देनेवाली तीर प्रांतों को सागर के आक्रमित क्षेत्रों में, बच जाना, असाध्य क्षेत्रों में प्रभु की दीपों के प्रकाश फैलाने की जगह, मनुष्य के कार्यकलापों में विफल होकर, आनेवाली जल लहरों से, धरती कंपित होनेवाली जगह पर विश्वास नहीं रखनी चाहिए। मेरा संदेश, मेरा सलाह अंतर लेनेवाले स्थान में मेरे लोग का नहीं रहनी चाहिए।

साधारण ज्ञान, सज्जनों काये एक कार्यक्रम भिन्न होनेवाले प्रदेशों में मनुष्य को नहीं रहना चाहिए।
मेरे लोग मेरे उपदेश को सुनते हैं।

– मेरी आत्मा की अस्तित्व को जानते हैं
– भगवान को अपनी पिता जैसे जानते हैं
– मेरी आत्मा देनेवाली/तोफाओं को जानते है।
फिर भी
– उस दिन के सूक्ष्म जंतू से चलाकर वे किसी एक पर्वत की उपरितल को ले जाते हैं।
फिर भी
– वे खडे हुए उस क्षेत्र की चरित्र को वे किसी तरह फिक्र नहीं करते हैं।
तब भी
– वे अंत्यकाल केलिये सन्नद्ध होने के विषय को नहीं समझते।
– मेरे भेड अपनी बीच में रहगइ बकरियों के बारे में सोचते नहीं।
– सिर हिलाने मगर, मेरे संदेश को निर्लक्ष्य कर देते।
सिर्फ ओंठ से मानते हैं – परिवर्तन नहीं दिखाते है।
आखिर उनकी भलाई के लिए या – सन्नद्ध की बात भी होगी।
– उसी के अनुसार करने का मत होगा।
– अपने सामने आनेवाली भयंकर जो लोग भी स्वतंत्रतासे रहे वे पूर्ण रुपसे सहमत नही रहंगे मुसीबतो । के बारे में नहीं जानते हैं।
मेरे भगवान की सम्मुख रहकर भी अस्थिर मन से रहनेवाले मेरे लोगों को भयंकर परिस्थितियाँ सामने आजायेगी।
भगवान भोजन को नजदीक में आने के लिए देरी करनेवाली मेरा लोगों केलिए कितने भयंकर हालत रहगयी है।
कई सालों से मेरे लोगों के बीच में रह गये मनुष्यों को बहुत डर लग जाता है।
– वे अभी भी अलग भोजन को आदत नहीं हुआ। अबभी उन्होने भिन्न भोजन लेने की आदत नही पाया
- अब भी वे अपनी कवच को नहीं लिया है।
- अब भी मेरी आत्मा पढानेवाली सुझावों को आचरण करते नहीं।
- अब भी मेरी आत्म के देनेवाले तोफाओं को नहीं पहचानते है।
- अब भी उन्के करनेवाले कामों के बारे में नहीं सुना।
सिर्फ आना–जाना ही है यानी बहुत कमपरिवर्तन है ।
उत्तरदाइत्व को नहीं पहचाननेवालो की स्थिति भयानक है,
– जो अपनी सांगत्य के बारेमें नहीं सोचते है,

– जो भी अपनी बादा को फिक्र नहीं करते हैं,
– जो भी अपनी झूठों के बारे में फिक्र नहीं करते हैं।
– कोई भी अपनी कुशलता के बारे में नहीं सोचते हैं।
अपनी मन की परिवर्तन के लिये मैका खोया गया उन लोगों को दर्द है।
– दसवीं भाग के अर्पित न करनेवालों को
– कम से कम अर्पण नही देनेवालों की
– अपनी परिश्रम में प्रथम फल देने में बेपरवाही दिखानेवाली स्थिति बहुत ही भयानक है।

अपनी नित्य आवास के लिए सूली पर प्राण का त्याग करनेवाले भगवान से बिना उत्तरदायित्व से रहकर, उनकी कृपा के लिए इंतजार करनेवालों को कठिनाई है।

ज्ञान सहित व्यक्ति को कार्य को आगे लेना है।

जिसके पास ज्ञान है उनका अपनी भोजन को तय करना है।

जिसके पास ज्ञान है उनको समझना है कि अति शीघ्र में सेवा कार्यक्रम न होंगे उनको जलदी ही ।
ज्ञानी
– अपनी जीवन की जरुरतों की गणना को लिखकर रहना चाहिए।
– उसे प्राप्त करने के लिए
– अनेक आबादी से अलग करने के लिए
मेरे लोग अपने ऊपर शीघ्र में आनेवाली मुसीवतो को सामने करने के लिए तय हो रहे है।
संघ वधु के लिए तय हो रही उन अंत्य दिनों में
– बकरियाँ, बकरियाँ ही रहते हैं।
– बकरियाँ मेरे भेडों को छितर करने की कोशिश करती हैं।
– बकरियाँ अपनी अवरोध करने के लिए आवाज करते ही रहती है।
– बकरियाँ, एक दिन सूर्य की यात्रा से भी अधिक समय आते–जाते रहने के लिए कोशिश करती हैं।
मनुष्यों में जो बकरियाँ है, वे मेरे भेडों की आहार को नहीं बांट सकते हैं।
– दूसरों के भाग को से करने की कोशिश नहीं करेंगे।

भगवान की समूह में बुरी रंग से रहने के लिए कोशिश नहीं करेंगी। चंदा में रुकी गई भाग से हिस्से को माँगते नहीं।

मनुष्यों में बकरियाँ, भगवान की समूह में, मिलकर रहने के लिए कोशिश नहीं करेगी।

अंत्यकाल में फसल भगवान की निधियों में ले आयी लेकिन, बकरियाँ को उसको प्राप्त नहीं होता है।

क्यों कि उनमें अंधे आँखोंवाले हैं,
काने होकर भी न सुननेवाले हैं,
हाथ होकर भी काम न करनेवाले,
पैर होकर भी पैदल न जानेवाले,
मुँह होकर भी क्षमा नहीं माँगनेवाले,
ओंठ होकर भी साक्ष्य नहीं बोलनेवाले,
तोफयें होने पर भी उनसे फाइदा न उठानेवाले भी है।

भगवान के दल में रहकर ये सब बकरियों की तरह देखते हैं। आवाज करते है और पैदल आग जाती हैं। ये लोग शादी की दावत के लिए तैयार रहे मेमने के के सामने खडे नहीं होते। गर्मी में उपलब्ध न होनेवाले टंढी हवा की तरह, वश में न रहनेवाले शिष्य की तरह, ये लोग वादा के वश में न रहकर, उस उद्धेश्य के बिना रहते हैं। इसीलिए हमारे पिता भगवान के सामने वधु संघ होकर खडे रहने के लिए, मेरी आत्मा से तय हुई,

यह मेरी वधु संघ न्याय सम्मत करते वक्त,
यह मेरी वधु संघ पवित्र कर दी गई
यह मेरी वधु संघ शुद्ध कर दी गई
यह मेरी वधु संघ परिशुद्ध होकर,

हर एक आत्मा की भाषण, की घोषणा के अनुसार से रहनेवाली हर एक हृदय विखास से भग है । इसके बारे में पूरा जानता है।

मेमने के सम्मुख में, हमेशा के लिए, शुद्ध जनता होकर, आ गई समूह में, पुकार सुनाई देगी।

कह गई प्रवचन सफल होने के समय में, प्रभु ईसू की वधु संघ वहाँ समावेश होगी।

वक्त आते ही, अपनी भेडों तथा मेमनों को निराकरण न करने की स्थिति को देखेंगे।

भगवान से हर एक व्यक्ति की रह गई संबंध पर आधारित ईसू की वधु संघ निर्मित होगी।

हृदय में होनेवाली विचारों के अनुसार, उनकी देनेवाली तोफा रहती है। आत्मा से दी गई गवाह की तरह सफल होगी।

शरीर कैसे वश में रहेगा, उतना ही अधिक प्रत्येक आत्मा भी ऊपर पहुचती है। भिन्न भाषाओं के द्वारा कहा गई बातों के जैसे अपने भगवान के सम्मुख में रहना मानव की विधि है।

अंत्यकाल में मेरा वधु संघ की पवित्रता

इस संसार में मेरी संघ की अधिकार कुशल देकर, मनुष्यों को आगे ले जाने की मेरी आत्मा की, मेरी शुद्ध आत्मा के वश में रहेगी।

मेरी संघ की अधिकार इस अंत्यकाल में, तेजी से अधिकार की आवश्यकता रहेगी।

मनुष्यों की आवश्यक गवाहियों में तेजी,

मेरे समावेशों में भागालेने की होशियारी

मेरे पवित्र लोगों के प्रति इच्चुक रहने में

शैतान की समस्याओं में तेजी सुझाव

भगवान के बच्चों के संबंध कीविषयों में होशियार होनी चाहिए। मेरी संघ की निरीक्षणा, पिता के समक्ष में ले जाने के पहले,

पापों से विमुक्त होकर पवित्रतासे,

विचार में पवित्रता,

विश्वास में पवित्रता,

बातों में पवित्र होकर रहना चाहिए।

मूर्ति पूजा जो है,

किसी भी रुप में करने पर भी, मनुष्य को वधु संघ में भाग लेने नहीं देती है ।

अतः व्यक्ति में जिंदा हुआ पाप, इसके पहले का पाप, पाप के विचार, आदि मनुष्य के हृदय को दूर रखेंगे।

अतः मन की बदलाव जो है हृदय की पटी पर लिखी गई विषय न मिठाने की तरह होते तो, वह संघ से दूर रहेगा। पाप अगर हृदय में रहे तो, वह सूली को स्वीकार न करेगी और पिता के चि के स्वीकार न करने की स्थिति भगवान मनुष्य की दी गई शांती से उसे विरोध करना है।

मनुष्य के लिए बुलावा

पाप करनेवाले बुद्धिहीन व्यक्ति,

पाप में रहगई बकरी,

डर के बिना घूमनेवाला,

गौरव के बिना रहनेवाले भक्तिहीन,

अपनी आत्मा की नाश के लिए खाते–पीते रहता है।

उनके ओंठ पर प्रभु की प्याले से

अपनी जीवन के लिए जरुरी भोजन प्राप्त रहती है। इन लोगों को अपनी हृदय में विश्वास से संबंधित कठोर दृढता के आने तक, स्वर्ग में आवास योग्य नगह नहीं है। उनके जीवन में कृपा समृद्ध होकर जल सभी कल्मश को धोने की तरह पाप, विवाद, घाव, धो जायेगे।

ऐसे लोंगों के लिए ही सूली जो है बचावा केलिये बेंट किया है।

भाग लेनेवाली निंदा रहित हर मेमना इस में भागीदारी है।

इतना ही नहीं परिशुद्ध लोगों को अलग करनेवाल प्रभु के सामने किसी तरह की कठिनाई को सामना करने की जरुरत नहीं है।

इस धरती पर होनेवाला मेरा संघ, दूसरों केलिये मार्गदर्शन और पूरी तरह अधिकार पूर्ण है।

मनुष्य केलिये हर दिन अच्छा है।

मनुष्य की स्वातंत्रता की उपेक्षा नहीं करती है।

मनुष्य की दृष्टि में सस्ते चीज जो है, उनको नहीं छोडेगी। पश्चाताप की जकरत हुई तो उनका मिठाती नहीं है। उसी तरह की दूसरों की अनुभवों से मिलकर जाँच किया जायेगा।

मिने के कार्य पूरा होने के पहले ही प्रायश्चित के लिए देखती है। एक व्यक्ति के हृदय में खडे रहनेवाला पाप, हो तो। माफ नहीं करेगा। मेरा संघ की निरीक्षण जो है, मनुष्य के लिये लाभदायक है।

मनुष्य को धैर्य बनाने के लिए,

मनुष्य की मृत्य के उपरांत भगवान से होनेवाली मंजिल को देने के लिए, कृपा युग में मनुष्य को स्वाकार करने की हालत विश्वास सहित है।

अंत्यकाल में विश्वस की कमी

अंत्यकाल में आनेवाली समस्याओं के तूफाान, मनुष्य के हृदय संबंधित है।

वे उसके शरीर की रक्षा केलिये

वे उसकी आत्मा की रक्षा के लिए

वे उसके भगवान के साथ करने वाली यात्रा के लिए, होनेवाला अंत्यकाल तूफान। मनुष्य के पाप की एक गवाही।

शैतान की बुराई को,

भगवान की शक्ति की गवाही है। अंत्यकाल के तूफान, अंत्यकाल के चिह्न है।

कष्ट काल को यानी अनिवार्य रुप सें होनेवाली समस्याओं के निशान है।

अंत्यकाल के तूफान बहुत मुष्किल रहते है।

वे भगवान से रचित जिंदगी मे रहे लोगों केलिये हानिकारक हैं।

वे वाक्य की सफलता के लिए, बार बार नहीं होंगे।

कृपा युग में ही होते हैं।

आत्म परिवर्तन के बिना, अविश्वास आत्माओं को आनेवाली मष्त्यु के पहले ही आनेवाले हैं। मष्त्यु दूत के बारे में ध्यान से रहिए, वह जब आता है, तब तुमारे मन में शैतान की विचारों से भर देगा।

क्यों कि मनुष्य के हृदय में शैतान की प्रभाव, वैसे ही रखने केलिये आशा करेगा। मनुष्य के जीवन क्षेत्रों में मृत्यु का दूत का संचार करते समय, ध्यान से रहिए। अंत्यकाल के कष्टों में मृत्यु दूत की संचार करने की जगह में रहनेवाले आप सावधानी से रहिए।

मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार व्यतीत करनेवाले/पाप जीवन के विवरण से शायद आजायेंगे, श्सालिये मृत्यु दूत के बारे में ध्यान से रहिए, पाप हृदय को किसी न किसी प्रकार भगा देना ऐसे वक में विश्वास सहित कृपा, हमें बचाने की एक ही साधन है।

क्यों कि अपराध हमें बंधी हो जानेवाली मंजिल को बाँधकर रखे तो, प्रायश्चित हमें कृपा की ओर ले जाने की चाभी है।

मनुष्य की आत्मा को अपराध दुःख दिलाती तो, उनके परिशुद्ध; आत्मा उनके हृदय को पकडकर रहेगी। पाप प्रवृत्ति मनुष्य के व्यवहार में स्थिर हो जाते तो, कृपा जो है उनके ग्रहण से आगे रहुंगा। अपराध, मनुष्य को समाधी की ओर ले जाते तो, कृपा उसके विरुद्ध है।

विभिन्न संक्लिष्ट परिस्थितियों में भी कृपा मनुष्य के साथ रहेगी।

मेरी जनता के अंत्यकाल

मेरी जनता मेरी संदेश के बारे में सोचती नहीं।
अपने सामने जो है उसके प्रति हलती नहीं।
वे अपने जीवन पर रह गई प्रभावों के बारे में सोचते नहीं।
मेरी जनता जानकर की सहायता लेने के लिए तैयार है।
खडे रहने के लिए तथा युद्ध करने के लिए भी तैयार है।
वे लूट ले जाने के लिए भी तैयार है।
वे अपने घरों में खराब हो जायेंगे।
वे शैतान की शक्ति से बनाई हुई तूफान के द्वारा नाश होकर,
अपनी जीवन में दिवा स्वप्नों को देखनेवाले रहते हैं।
मेरी जनता अपराध भरित आत्माओं से पीछे किये जाते है।
जलन से भी आत्मा,
स्वार्थ सें भरी हुई आत्मा,
व्यभिचार की इच्छुक आत्मा,
खान–पान की आशा से भर आत्मा, आदि लक्षण के द्वारा पीढित होते हैं।
शहर चाल के साथ, निरुपयोग स्थिति में धरती पर रहे जंगल की तरह, सामना करने की शक्ति रहित रहने की वक्त में, अगर शक्ति है वही हक की तरह रहती है,
बंदूक की चोंगा से मनुष्य की उद्धेश्य को समा करने की वक्त आ जायेगी।
मेरी जनता को गबराहठ से इधर–उधर दौडनग नहीं।
वे अपने स्थान में ही खडे रहने की स्थिति,
अपना रक्षणा को समझकर खडे होने की स्थिति,
हमेशा दर्द की ओर न जाने के लिए,
लाभरहित में कमाने की आशा को छोडकर
अपने पास जो है, उसके अपने आप पूरी तरह से
गले लगाने की स्थिति में न रहनी चाहिए।

मेरे लोगों को आवश्यक स्थिति में समय को व्यतीत करना नहीं चाहिए। एक जिन्दगी को संकल्प के बिना बचाने की स्थिति में, भगवान निरुपयोग व्यक्तियों से बात करके विश्वास और सत् क्रियाओं से भर दिये तो तब,

दवाताँफ चारों ओर इकटट्ा होते वक्त, अद्भुत होकर, गवाही देने की तरह विश्वास सहित प्रार्थना बदलने की तरुण में, समय को व्यर्थ नहीं करनी चाहिए।

मेरे लोग अपनी जीवन की चरमांक तक पहुंच सकते हैं।

जिसको जाँचना है, जिसकी पता करना है उन्हे मालूम नही होगा।

अपना प्राप्त हुई चीजों के बारे में धन्यवाद बोलना भी भूल जाते हैं।

छोड दिये गये लोग, दबा गये लोगों के अनुभवों को समझते हुए

अपने पर्वतों से थकगये होंगे।

वे यात्रों से थक गये होंगे।

मेरी जनता, कोशिश करते वक्त, शक्ति पाते वक्त, आराम के लिए डूंढती होगी।

दबाव अनुभव करते समय, किसी प्रकार से भी मनुष्यों को नहीं रोक पाते तो,

दुश्मनों को सामने करते समय किला के दिवारों को बचाने में असमर्थ होगयी होंगी।

धैर्य से खडा होकर, बचाने में असमर्थ होने की स्थिति में पीछे हो जाने की स्थिति में

अपनी हार की स्थिति में डर की गति को फिक्र नहीं करने की स्थिति में,

संक्लिष्ट परिस्थिति में भगवान ने हमें छोड दिये करके समझ जायेंगे। भगवान के लोग भगवान की प्यारी हाथों में ही रहेंगे।

अपनी जनता को दियगये वादा की छाया में आवास होंगे।

भगवान के परिवार की संरक्षण में ही आवास होंगे।

देवदूताओं की संरक्षणा में ही रहेंगे।

अच्चे सवाले की रक्षणा में होनेवाली झुण्ड में रहेंगे।

नित्यजीव को तय करने की स्थिति में रहेंगे।

पिता के वादे में रहेंगे।

प्रभु की पुनः आगमन की अंत्यकाल में रहेंगे।

हमें तय करनेवाली एक नयी प्रारंभ स्थिति को मेरे नये निबंध में रहे भेड भुलाए गये हैं।

अंत्यकाल में खडी रही मेरी जनता

मेरी जनता अंत्यकाल में खडी रहने लिए एक आरामकी स्थिति को चाहिए।

रास्तों में रह गए झुंड,
लूट लेनेवाली समूह,
दिन रात इस्तेमाल करनेवाले हथियार को विरोध करनेवाले,
धमकानें के समीप में रहना,
पवित्र स्थल में रहनत,

बचाकर पूर्ण रूप से रहने के लिए, उसी स्थान को बनाके मेरे लोग, मेरे प्यारे मनुष्य के प्रकाश में, उन्हे इकट्टा करने को दिखना है।

अंत्यकाल में मेरे लोग खडे रहना जो है, जीवन की जरूरी चीजों को पुर्ण रूपमेंहोने पर आधारित है।

जरूरी चीजों की बचाव,
समृद्धि जल को होने की दशा
सभी जरूरी लोगों केलिये भोजन,
जरूरी कपडे,
पकाने की आहार पदार्थ,
बीमारी को भाग देने की तरह, स्वास्थ्य सूत्रों को पालन करने पर, आध ाारित है।

अंत्यकाल में मेरी जनता खडी होना जो है, अपने आप को समस्याओं से बचाने की सावधानी की हालत में होगी।

क्योंकि

– संसाधनों को चुनकर लेना साध्य नहीं हैं।
– इंधन सभी को जरूरी विलास चीज के रूप में बदलेगी।
– तूफान सब कुछ का नाश करेगा।
– अपनी आँखों के सामने ही मनुष्य की सारी सुसाधन व्यर्थ रहेंगे।
– उसमें उलझा हुए, कमजोरें को लोगों बचाने केलिये सहायक की जरूर है।
– घाय हुए व्यक्तियों को, चोट खाये व्यक्तियों की प्रथम चिकित्सा की जरूरत है।
– डरे हुए व्यक्तियों को, धैर्य को खोये हुए व्यक्तियों को आश्वासन देनेवाले की जरूरत है।
– सिद्ध न होनेवालों को, भयोत्पात ही रखवाली होगी।
– अपनी हालत को नही समझने वालो को रास्ता दिखाने की जरूरत है । को मार्गदर्शन जरूरी है।

अंत्यकाल में मेरी जनता खडे रहने के लिए उन कार्याक्रमों पर ध्यान रखना जरूरी है।

जरूरतों केलिये सही तैयारी नामके चाबी,

जरूरी आहार प्रदार्थ, सावधानी के लिए और जिंदा रहने केलिये सही हालत होना

इस्तेमाल करने केलिये कोई तक्लीफ न होने की तरह चीजों को सुरक्षित रखना,

उपकरण को नजदीक रखना

रास्ते को सुगम करने केलिये,

रास्ते को प्रकाश करने केलिये,

रास्ते को ढूँडने के लिए सही प्रकार तय होना जरूरी है।

अंत्यकाल में मेरी जनता खडे होना प्रधान है।

वह अंत्यकाल में हमारे विश्वास पर आधारित है।

मेरा अंत्यकाल की उपदेश को अनुकरण करने की ज्ञान पर आधारित है।

शैतान, एक साधु को सताने केलिये पैदाकरने वाले तूफानों को समझना।

समस्याओं के समय सुरक्षित तथा बचाने की विचार लेने में और उन्हें देखने को,

उनके बारे में सुनने को, उनहें समझने को,

उनको जानने को, अस्थिर स्थिति को समझने के लिए सुरक्षण चाहिए। होनेवाले विनाश को समझिए।

कष्टकाल में जीवन की समस्याओं में गिरादेने को समझना है।

अंत्यकाल में मेरी जनता खडे होना जो है प्रार्थना समय की वजह से सहायता मिलेगी।

परलोक भावनाओं की आदत करने के द्वारा, चेतावनी प्राप्त होने से,

भगवान से बात करने को समझने के कारण, वही एक आदत होने के कारण,

हर दिन उसको हढ रूप से होने से

मेरे परिशुद्ध लोग, अंत्यकाल में धरती पर होनेवाली अजीबवातों को समझकर रहना है।

जहरीले दांत के जन्म को, भयंकर तूफान, भूकंपों से, मनुष्य को कष्ट होना, लूट लेना, मृत्यु से हुई संपूर्ण स्थिति गतियों को मालूम होना चाहिए। उससे मेरी जनता पूर्ण निराश निस्पृह में नहीं छोडी जाती है ।

तीर के पास टूटा हुआ नाव केउपकरण की तरह नहीं होंगे।

घर गिरानेवाले, घर गिर ते समय की स्थिति में नहीं होंगे।

गगन से गिरं हुए शकल के द्वारा धाव, की तरह तेजी से आ रही सागर की लहर में पकड गई व्यक्तियों की तरह नही होगा, कंपित धरती पर मृत्यु के लिए छोड दिया गया समूह की तरह न होंगे।

मनुष्य की नाश की दशा से बचाकर बाकी जनता के गिनती में मेरा जनता होंगे।

अंत्यकाल में तुरही की आवाज से बचे हुए व्यक्तियों की खाता में मेरी जनता होंगी।

जीत के संगीत से मेघों पर आ रहे दूल्हे को स्वागत करने के लिए बच जाते हैं।

इसीलिए मेरी जनता

मेरे झुंड के भेड

भगवान की परिशुद्ध लोग है,

भगवान के बच्चे है,

मेरी आत्मा का मंदिर है,

वे अंत्यकाल में पहुँचते है।

मेरी आत्मा की अतः जीवन के अंत्यकाल में,

कृपा युग का अंत्यकाल

भगवान के सिंहासन के सामने खडे होने केलिये रूपांतर प्राप्त करने केलिये बुलावा देने की भुलाने की अंत्यकाल में मेरी जनता होंगी।

अंत्यकाल में मनुष्य की जरूरी संपदा

मनुष्य की जरूरतों केलिये पैसा, आदि, जल्द ही कम हो जा रहे हैं।

– देशों में आनवाली रही कमियों को देखने केलिये,

– आहार संपत्ति की अभाव को देखने के लिए

– कमियाँ ज्यादा रहने को देखने के लिए

– अकाल को प्रत्यक्ष देखने के लिए

दिन में जो समृद्धि रात मे भाग जाना देखना है। मनुष्य की जरूरी संपत्ति उडकर जाने की अभिप्राय से दबा जाती है ।

वह उडने के बजाय दबाके रख जाता है।

कई प्रदेशों में पूरीअभिवृद्धि जो है, उसको न समझने के कारण दबा जाती है।

मनुष्य की ऐश्वर्य प्रभाव रहित होगी।

जो तैयार नहीं उने व्यक्तियों का सामना करते वक्त

संरक्षण के लिए पुनश्चरण करते वक्त

इंटरनेट गलती से बनते वक्त

बराबर रहनेवाल पवित्रों का अंगीकार था निराकरण को देखने समय,

अविश्वासों से और विश्वास रखनेवालों से

जिसके पास कृपा हो, जिसके पास कृपा न हो, दोनों से निराकरण हो जाते तो तब प्रभाव रहित होगा।

मनुष्य की ऐश्वर्या– थोडी समय तक विपरीत रूप में रही होगी ।

– प्रतिबिंबित होने के लिए समय लगेगा।

– तलाश की विचार होगी।

– एक गिलहरी की तरह जमा करना होगा।

– जरूरत के समय वे नहीं मिल पायोंगे।

– सभी को खो जाते लो निराश आ जायेगी।

– लूट लेना बंद करके, जाँच करते वक्त आश्चर्य होंगे।

मनुष्य की ऐश्वर्य बुद्धिहीन की तरह व्यर्थ खर्च करने की स्थिति में,

शैतान से हाथ मिलाने की स्थिति को समझने से होनेवाली कभी

वैसे ही ज्ञानी भगवान से हाथ मिलकर रहनेवाले की तरह बडा की ऐश्वर्य स्थिति को जानता है।

मनुष्य जैसे होंगे वैसे ही अनुभव पाते हैं।

मनुष्य जिस प्रकार जीवन व्यतीत करता है, उसी प्रकार पुरस्कार प्राप्त करता है।

मनुष्य जो आशा करता है वैसे ही अपनी मंजिल को कमाते है।

अंत्यकाल में मेरी आत्मा का अंतरंग में रहना

अंत्यकाल में मेरी आत्मा अंतंरग में निवास करना जो है, वह अंत्यकाल की कृपा की सूचना है।

आज की संरक्षण का अंत्यकाल,

सभी विषयों की विषयसूची से भरा अंत्यकाल

मेरी आत्मा के उपदेश से संबंधित अंत्यकाल,

मेरा आत्मा की पुरस्कार से संबंधित अंत्यकाल,

मेरी वधु संघ को तय करने क अंत्यकाल

मेरी वधु संघ की अशाश्त स्थिति का अंत्यकाल,

धरती पर मेरा प्रशासन की मूलता की अंत्यकाल, अंत्यकाल में मेरी आत्मा अंतरंग में निवास करना जो है वह आत्मा संपूर्णता पाने का शुरुआत है।

मेरी आत्मा की पूर्णता जो है वह मेरी जनता की तैयारी है।

मेरी आत्मा की पूर्णता जो है, वह मेरी वधु संघ का शरीर है।

अंत्यकाल में मेरी आत्मा अंतरंग में रहना जो है, वह तुरही ध्वनी की आवाज की सूची है।

वह – हमला करने वाले से संबंधित बादल को उकसाना है।

वह – देखने योग्य क्षेत्र को सन्नद्ध करना है।

अंत्यकाल में मेरी आत्म अंतरग में आवास करना जो है, राजाओं के राजा को सिंहासन पर स्वागत करता है।

मनुष्य नित्यत्व में बदलने केलिये निमंत्रण करता है

तारों के लिए तैयार की गई क्षेत्रों को निमंत्रण करता है

अंत्यकाल की पवित्रीकरण

अंत्यकाल की मेरे शुद्धलोगों की शुद्धीकरण, मेरी जनता पर आयेगी।

अंत्यकाल में मेरी वधुसंघ को शुद्ध करते समय, इस युग का अंत नजदीक होगा।

पूरी कृपा से मेरी जनता को सन्नद्ध करने केलिये तैयार की गई।

फरभी कृपा को पानेवाले की शुद्धता के लिए, उनको अपनी गिनती को पोंछने को उपदेश दिया गया है।

भगवान की कृपा सम्मुख में पूर्ण रूप से प्रायश्चित करने के इंतजाम कर रहे हैं।

घंटो की ग्लास में रखी गई रेत की तरह नीती में बीत जानेवाली हर एक रात दिखा दे रही है।

अतः दिन में ही ज्ञान से काम करना है, यानी ज्ञानी लोगों को सिखाता है।

प्रकाश के पैदा होते समय शैतान खुशी से अपनी हाथों को नहीं साफ करता है।

क्योंकि दिन के अंत में कृपा पूर्ण न होगी।

मनुष्य के अनुकूल का पर हो वह पूर्ण नहीं होती है।

किसी एक समय बिताते वक्त वह पूर्ण नहीं होती।

विश्वास की सम्मुख में कृपा दिखाथी देती है

कृपा जो है, प्रभु के आने के समय से अंत होगी।

प्रभु की दूसरी आगमन से पूरी होगी।

कान ज्ञान को जब सुनसकते

आँखें ज्ञान को जब देखते,

गवाही से विश्वास दृढ होते वक्त,

उसी दिन विश्वासी के रूप में बदलगए नये लोग, अभी भी अपने खाते को पूरी तरह से साफ नही निराशा से विलाप करेंगे।

अतः बहुत धीरे से अभिप्राय करनेवाले लोग अपने आप संरंक्षण की घेरे को करनेवाले,

अपनी इंद्रियों के अतीत शक्ति किसी भगवान को प्राप्त नहीं, करके समझनेवाले अनजाने लोग।

न्यायपीठ के सामने अपने पाप सडी रहने के कारण, उचित मूल्य को अदा करते हैं।

अंत्यकाल में मेरी वधु संघ को शुद्ध करने के कारण अपवित्र लोगों की अपवित्रता नहीं दिखायेगी।

आत्मा, जीवात्म को पकडने के कारण आत्म स्वेच्चानुसार नहीं घूमती है।

मेरी आत्मा जो परिपूर्णता परलोक की बातों को स्वीकार करती है इसलिये विरोधभाव नहीं रहती है।

मेरी वधु संघ की तरह पवित्रता को प्रकटित करनेवाले लोग हैं, वे भगवान के मंदिर में आविष्कार की गई पद्धति में ही होंगे।

अंत्यकाल में मेरी वधु संघ की पवित्रता जो है वह बडतपन का साधक है तथा किसी प्रकार की समस्याएँ उसमें नही रहती है।

वह चालक है और प्रायश्चित के वश में आयेगी।

वह मंजिल को पानेवाली है और यकीन से भरी है। अंत्यकाल में मेरी वधु संघ की शुद्धीकरण जो है बार–बार हो रही है।

वह साध्य है और माफ करनेवाली है।

वह प्रेम पूर्ण है और स्वीकार योग्य है।

अंत्यकाल की मेरी वधु संघ को शुद्धीकरण जो है, वह भगवान से डरती है और परिशुद्धता के लिए हुई दृढ इच्छा से रहती है।

वह प्रभु के हर मंदिर में होनेवाली हो परिशुद्धता का निशान है। मेरा वधु की अंत्यकाल की शुद्धता, प्रायश्चित, पवित्रता को पाते हुए, रात के रात संभावित होनेवाले हैं।

अंत्यकाल में विश्व्वासियों के लिए आहार

अंत्यकाल में विश्वासियों के आहार को एक प्रकार की विशेषता है। ठीक करने का काम है।
एक परिष्कार की जरूरी कार्यक्रम है।
मेरा संघ पूरा करनेवाला कार्यक्रम है।
अंत्यकाल में विश्वासियों क आहार जो है वह कई लोगों की संबंधित है।
कम होने वाले दिनों के बारे में बात करता है।
कई दिनों तक निमंत्रण के विचार करने पर भी, जन समूहों के बारे में बात करना है।
एक अनोखी संख्या में शिष्यों को सन्नद्ध करनेवाले मेरे संदेश को पढानेवाली गुरुओं के बारे में बताता है।
अंत्यकाल की कटाई के लिए सेवा में भाग लेनेवाली मेरी जनता के बारे में बात करता है।
अंत्यकाल के विश्वासियों का आहार जो है, पूर्ण रूप से उनकी आत्माओं को संतुष्टि करता है।
वह, उसे स्पष्ट करने की वजह से, होशियारी प्रश्नों के द्वारा,
मेरी आत्मा की पुरस्कार के रूप में प्राप्त हुई विश्वास के द्वारा,
भगवान की चित्त जिसको कोई व्यक्ति भी नाश नहीं कर सकता है,
मनुष्य की हृदय हठ रहकर
सत्य के लिए आशा पोकर, उचित सम्मति से प्रकटित होगी।
एक के बाद एक भावना साथ में आते वक्र
भगवान की दृष्टी समागम मनुष्य को ज्ञात होते वक्त, अंत्यकाल के विश्वासियों का आहार मिल जायेगा।
मनुष्य का सीखना, नीति, रक्षा, पाप की माफी के मार्ग, मेरी आत्मा की प्रत्यक्ष मार्ग में, सजीव भगवान का एक आलय की तरह शरीर का बदलाव होने के लिये, भगवान की सम्मुख में, फिर मनुष्य के मार्ग की तलाश है।
खुशी की मंजिल जो है शाश्वत जीव की रास्ता होकर, दुनिया की रीति में प्रभु की शिष्य जो हैए उस मनुष्य की सन्नद्ध की रास्ता होना जरूरी है ।

मनुष्य के लिए बुलावा

अंत्यकाल विश्वासियों का आहार, दो प्रकार के गति पर जायेगा। नए करार के द्वारा भगवान का बच्चा अब्रहाम, भगवान से, सृष्टिकर्त भगवान से व्यक्तिगत संबंध,

मनुष्य की आवास योग्य तैयारी को, भगवान से होनेवाला चुनाव, मंजिल का चुनना।

प्यार में,
दोस्ती में
विज्ञान में,
समझने में,
गौरव में,
सम्मति में रहने केलिये चलेगा

अंत्यकाल के विश्वासियों का आहार, भगवान के साथ चलने की स्थिति को प्राप्त करेगा।

जीव के लिए अन्वेषण,
आत्मा के लिए अन्वेषण,

मनुष्य के शरीर के लिए अन्वेषण, प्रदान होगी। आप अपने भगवान को जानने केलिये मनुष्य अंत्यकाल की अभिवृद्धि के लिए साथ जायेगा।

अंत्यकाल में भगवान से हृदय निवेदन

अंत्यकाल निवेदक भगवान के ध्यान की सूची में मिल जायेगा।
भगवान को, अपनी भाषाओं के एक चंदादार मानता है ।
अपने अवगत साम्राज्य में, भगवान, को जानता है।
हृदय निवेदन का जो समय है, वह समस्याओं का समय है।
प्रार्थना की उत्तर प्राप्त होनेवाली तरुण
बहुत गहराई संबंध बढाने का समय,
संपर्क का अंत्यकाल जो है, दृढ दैविक स्नेह का समय है।
पिता को 'पापा' कहकर, 'डाडी' कहकर
उनके पैरों के पास बैटने की तरह,
उनके सम्मुख में, पास रहने की तरह डाडी कहकर बुलाना होगा।
अभिनय करना दूर होते तो,
पाप, घमंड का प्रवेश न होते तो,
आत्म की प्रत्यक्षता/को लेकर कृपा की सुविधा के समय होगा।
एसे लोगों को प्यारे भगवान खुषी से आशीर्वाद देते हुए अपनोते हैं।
शिष्ट आत्मा के अर्पण को सुनेगा।
द्वेष रहित हृदय को नई रूप से स्वागत करेगा।
ऐसी लोगो को, विश्वास पर आधारित हुई सभी बातों से भरी सूली का स्वास्थ्य रहेगा।
नए करार पर आधारित सभी स्वीकृतियों से जोड कर,
कृपा से भरी वृद्धि की स्थिति रहेगी।
कयोंकि इसी प्रकार के लोगों के लिए ईसू आये है।
सूली पर उन्होंने दर्द को बर्दाश्त अनुभव किया,
मनुष्य की आत्मा पर आधारित होकर ईसू ने कृपा को दिया।
पिता ने नए करार की सथापना की मनुष्य और भगवान के बीच अनुसंधान के रास्ते को दिखाया।

इस तरह के लोगों की आत्मा में एक मंदिर को सन्नद्ध करके, परिशुद्ध आत्मा की उपदेश, जीव जो है वह गिनती के लिए स्वीकृत करता है।

ऐसे ही लोगों के लिए–

अपने आलयों को पूर्ण रूप से शुद्ध करके, उपयोग के लिए रख कर,
पिता के वादे को पूर्ण रूप से लेकर परिशुद्ध आत्मा आयेगी।
इस तरह मिलनेवाला यह अंत्यकाल, तारों के अंदर ले जानेवाला है।
इसी लोगों को ही– इस अंत्यकाल को स्वागत करना है,

केलिये कई जनता अंत्यकाल को समझ लेना है। मुख्य अंश के रूप में इस अंत्यकाल को होना है। इस अंत्यकाल के भगवान का समर्पक, उसके हृदय में हठ होकर खडा हुआ है। अपने निर्णय के अनुसार, मंजिल तक जरूर पहुँच सकता है और ईसी बात को जोर से बोल सकते हैं।

अंत्यकाल में प्रभू का आगमन

अंत्यकाल का प्रभु आगमन, कई लोगों पर प्रभाव दिखायेगी।

क्योंकि कई लोग आशा से इंतजार करनेवाले हैं,

कुछ लोग अनुमान सहित हृदय से है

अभी देखनेवाली और सुननेवाली विषयों को ''नहीं, न होगा'' ऐसी बोलनेवाले एक समय के पालक है इतना ही नहीं आश्चर्य चकित लोग भी हैं।

अंत्यकाल का प्रभु का आगमन जो है, कष्ट समय के बाद आयेगी, जो लोग यह कहकर कि बहुत आसान है I उसी की उच्च स्थिति, संसार को हिला देने की बात को समझ सकेंगे।

मनुष्य की निर्माणों को छोटे–छोटे टुकडों करते हैं।

मनुष्य के अपनी इच्छानुसार की गई पापों की समूहों को धरती से मिठानेवाला है यह आगमन।

मेरा जनता का परीक्षाकाल जो है, हमेशा धोखा ही बहने की तरह

न्याय के बिना रहनेवाली स्थिति,

सहायता के लिए चिल्लाने की पुकारों को न सुनने की स्थिति,

जरूरी चीजें खरीदने को भी नहीं मिलते, मनुष्य के विकर नही मिलेंगी

सन्नद नहीं होनेवालों के ऊपर मृत्यु और विनाश जल्दी आने के समय में,

भगवान का क्रोध बुरी लोगों पर कूदने का समय,

वे जिस प्रकार सन्नद हुये है उसी प्रकार सफलता भी भगवान के परिशुद्ध लोगों पर आजायेगी,

उन्के समझ के अनुसार परिशुद्ध लोगों की प्रार्थना जीवन के अनुसार आ जायेगी,

अंत्यकाल के प्रभु के आगमन को कृपा की अंत की तरह देख सकते हैं।

अनंत नयी सदी को प्रारंभ लगती है ।

मनुष्य के काल उसकी मूर्थ स्थिति में समाप्त हो जायेगी।

अब नई कालगमन से परिणामों से, कालगमन बदल जा रहा है।

मनुष्य का शरीर, फिर पुनर्थान हुआ इसू के शरीर की तरह बदलने की सूचना को दिखायेगी।

मनुष्य के जीवन काल में हुए अपवित्रताओं से बदलकर, पवित्र धरती के रूप में इस के धरती के बदलने की सूचना है।

भगवान की राज्य प्रत्यक्षता के लायक धरती, अपनी समृद्धि से उत्पन्न करेगी।

मनुष्य के लिए बुलावा

भगवान राज्य में नीति पालन करने को, शैतान की शक्ति को पूरी तरह नष्ट करने को, उस धरती पर अंत्यकाल प्रभु का आगमन रहेगा। दया और न्याय के साथ मनुष्य उस धरती में जीवित रहेगा।

उनके सिंहासन से, अपने स्थान से नियमित कामों को करने के लिए धरती के लोग इकट्टा हो जायेंगे।

बुढापन जो है पूर्व चरित्र होकर रह जायेगी।

मनुष्य के चेहरे में रोने की आँसू नही रहेगी ।

मौके के लिए इंतजार करके अभिवृद्धि होना जो है इसके बाद आत्मा को तडपायेंगी नही ।

भगवान के परिवार में, कुशल, और सुरक्षा होकर मनुष्य का हृदय खडा हो जाता है।

उनके राज्य में नागरिक, भगवान के नित्य जीव के साथ, नित्य प्रेम, और आदर को प्राप्त करेंगे।

क्योंकि वे अपनी वधु को पहुँचेंगे, उनकी वधु उनसे मिलेंगी ।

अंत्यकाल की जीवन व्यय

अंत्यकाल की जीवन व्यय पर नजर डालने से मनुष्य को जो जरूरी है वे नहीं मिलेंगे।

मनुष्य की जरूरतों की कमी होगी।

पूछे हुए मूल्य को देने की इच्चा नहीं होने के कारण खाली हुए धान्यगार को दिखाते है।

जरूरी चीजें उचित समय में न देकर खाली करते हुए मनुष्य के द्वारा तय किया गये आहार की कमी को पारकर जाने की मौका नही हुई स्थिति को देखते हैं।

सोने के बजाय जरूरी चीजों को बाजार में मिलते की स्थिति रहेगी।

अपनी कागजों परके प्रमाणों को वे सभी देश विश्वास खोकर विनिमय की विषय में कीमत नहीं होगी।

अंत्यकाल की जीव व्यथ चीजें के बदले नुकसान की परिहार को प्राप्त होने के विषय में बहुत कठिनाइयों को देखते है।

स्थिरता होनेवाला मूल्य प्राप्त होने को

अपने सामने रखी गई लाभदायक स्थिति को पाने में बहुत कठिनाईयाँ आ जायेगी।

अंत्यकाल का जीवन व्यय मनुष्य के धन को बढायेगा।

उस समयक देने वालों के पास खाता उस समय के उधार देनेवालों का दिपान बठेगा ।

ऋण, पूछने पर नही दिया तो, क्रोध से जवाबि दिये तो उस समय के उधार देनेवालों का द्विपान बठेगा दर्द भरित चेहरा प्रदर्शित होगा।

दी गई वादाएँ आगे जाकर, भविष्य में वे विघ्न हो जयेगी।

मनुष्य की ज्ञान का सीमा लाध कर, उसके वश में रह गई ज्ञान खतम हो जायेगी।

जरूरी चीजों अंत्यकाल जीवन व्यय में बदलेगी।

किसी प्रकार के संबंध न होकर मूल्य बदल जायेगी।

बाद में आनेवाली मूल्यों की समांतर, उस दिन का मूल्य बदल जायेगी।

बाद में आनेवाली मूल्यों के बराबर, उस दिन की मूल्य बदल जायेंगी।

उसकी लाभदायक मूल्यों को उपयोग करेगां

उन्हें प्रोत्साहित करेगे,

फाइदा उठाने को चीजों की रवाणा होते वक्त, चीजें न मिलने की स्थिति रहती है।

रवाणा सुविधा की अभाव, उत्पत्ति की अभाव,
आहारोत्पत्ति में स्वार्थ अचानक बढ़कर, चीजें न मिलना।
धरती पर जल सुविधा की बदलाव के कारण, कृषी को जल की अभाव से रूक जाना।
मनुष्य की वाणिज्य, व्यापार का लेन–देन पूरे होने के लिए अंत्यकाल की जीवन व्यथ, अंत्यकाल परिसरों के कारण प्रभावित होगी।
युद्धों की वजह से, तूफानों की वजह से,
होने वाले रोग, अकाल, तुफान और
प्रतिकूल पर्यावरण परिस्थिति देश में हो तो,
व्यापार में केंद्रिकृत अधिकार के कारण,
सुंदर क्षेत्रों की वाणिज्य कारणों से,
यंत्रों की तरह बदलने के कारण,
अफसोस होनेवालों की, उपवास रहने के कारण,
मूल्य के द्वारा भी आयेगी, इसी को मनुष्य की स्वेच्चा के कारण–
मनुष्य की दुराशा न होने पर या सन्नद्ध का अभाव के कारण,
आगे की सोच नहीं होने की वजह, जल्दी से सामने करने के विषय को
नहीं समझने की वजह से, भावी सूचनाओं को, सावधान की उपेक्षा करना उनकी तीव्र गति को नही समझना,
आनेवाली अंत्यकाल को प्रकटित करते हुए परिस्थितियों को दिखानेवालों से अंत्यकाल भरी हुई है।

अंत्यकाल की कुचक्र

अंत्यकाल में कुचक्र जो हैं, मनुष्य के विचार और एक मनुष्य की विचारों से आपसी प्रतिकूल रहते हैं।

मनुश्य के विचारों से शैतान के विचारों को लगे रहे विरोधभाव स्थिर हो जाते हैं।

भगवान की चित्त से मनुष्य की भावनाएँ विरोध करके नष्ट को अनुभव करेगी।

अंत्यकाल कुचक्र जो है, दूसरों पर जाना, हार जाना, आदि की ओर भ्रमण कर रहेंगे।

देने के लिए उध्देशित किए गए, उनमें से कुछ स्वीकार किए गए।

विरोध की गयी और उनके वजह से लग गये विनाश और मृत्यु

भय और आस्वासन आदि उनकी सम्मिलित समय वही है। अंत्यकाल की कुचक्र जो हैं, बुरी आदतें और रोग

बुराई और व्यथाएँ

कठिनाइयाँ और उनके कारण

पाप करनेवाले तथा उनकी प्रोत्साहन करनेवाले आदि उनके बारे में बात करना।

अंत्यकाल की कुचक्र उपेक्षा करनेवाले और निश्चय सहित लोगों के बारे में बात करेगी।

लोकाचार के अनुसार रहनेवाले और पवित्र लोग,

गलती करनेवाले और भोले व्यक्ति

अपनी इच्छानुसार रहनेवाले और माफ करनेवाले,

रास्ता छोडकर जानेवाली पापी और सुरक्षित लोग,

असावधानी से रहनेवाले और सावधान से रहनेवाले,

लोग और नित्य जीव की दशा होनेवाले आदि लोगों के बारे में बात करना।

अंत्यकाल की कुचक्र, मनुष्य की हृदय विचार को सूचित करेगी।

एक जीवन पर जो मुद्रित करना है उसी को सूचित करेगी।

देवदूत विषयों को स्थापित करेगी।

इसमें लिखने केलिये उपेक्षित की गई एक खाली कागज को निश्चय करेगी।

एक व्यक्ति का शरीर अब भी भूसंबंधित होते हुए, आत्मा जो चाहते है, उन सभी विशयों के आगे संचार कर रही एक आत्मा को दिखायेगी।

मनुष्य के लिए बुलावा

अंत्यकाल की कुचक्र अपनी समूह में इक्ठटा होनेवालों से आनेवाले भगवान की स्तुति की प्रतिध्वनियों से भरी रहेगी।

एक प्रत्येक दिन को इंतजार करनेवालों के लिए,

आनेवाली समय के बारे में जिसको मालूम है, उनके लिए, विशेष गौरवमय महान शादी उत्सव केलिये सन्नध्द होनेवालों के लिए,

देखीगई भागवान के हाथ के नीचे रहनेवालों को,

पिता का वादा, पुत्र का नय अधिनिथम करार,

परिशुध्द आत्मा की संदेश, उस कृपा काल में रहेगी।

ऐसे लोग विश्वास गृह में आवास करने के लिए

वादा की गयी आवास में,

दुनिया को दी गई ईसाई प्रकाश में आवास करते है। ऐसी लोग परिशुद्ध पोशकों से रख गये हैं।

आहत गवाही लोगों केलिये वह वादा शरीर में, खून में गलती की गई व्यक्तियों के लिए मुक्ति केलिये की गयी वादा है।

फिर उठ गये साम्राट की आगमन की वादा दियेगये लोगों की वादा है।

अंत्यकाल में मनुष्य के संघर्ष

अंत्यकाल में मनुष्य के संघर्श, मनुश्य की अंतरंग में जो अनागरिकता है उसे प्रकटित करेगी।

मनुष्य की जीत होने केलिये, पार करने को, पूर्व में हो गयी प्रतीकार लेने की तरह उठ जायेगा।

जलन के वजह आगई विचारों से, दुराशा के द्वारा अपनी शक्ति को बढाने की उद्धेश्य से, दूसरों की निस्सहाय स्थिति में उनकी खेती को खींच ने की दशा होने वाली है।

स्वीकृत न होने के कारण ऊपर आखरी चेतावनी को प्रकटित करना।

धोखे से रहस्य में दूसरों पर सगडा प्रकटित करके उसको छेठना।

जिंदगी से औरो के संबधित बहुत सारे जरूरतों को बढ़ाना।

हिंसा सहित शस्त्रों को बढाने में होनेवाली सूचना और संपर्क रहेंगे।

दूसरों पर हमला करके नाश करने की परिस्थिति, आशाएँ पूर्ण रूप से नाश होने तक घर को जलाकर भस्म करना,

सही समय में मनुष्य पर जहिर को वमन करना, भोले व्यक्तियों की प्राणों के साथ गाँव को नाश करने के बह्मो की ध्वनियाँ,

नगरों में भंयकर हिंसा करना, भयंकर खून की दागें हुआ।

दीवारों के ऊपर से अपनी तरह उठ जानेवालों की स्थिति,

अंत्यकाल की संघर्श मनुष्य की आकर्षण को मिठा देगी।

वह युग परिस्थितियों को बलिदान हुए लोग सहकार दिया।

वे उस पशु की अधीकार को, आनेवाली कठिनाइयाँ, अवरोधों को जबरदस्त शक्ति से देखेंगे।

रात की अंधेरी में इक्ठटा करना।

अंत्यकाल जनता के संघर्ष शाश्वत नही है, क्यों कि निश्चय जो है, वह पूरी तरह से नही दिखाएगी।

निश्चयता जो है जहाँ पूरी तरह से कम हो जायेगी

अपमान के प्रतीक, रंग कम हो जाते हैं

हृदय में, आत्मीयताओं को एक नरक दिखाने की जगह, अधिकार की झगडे में युध्द कीठाणु ज्यादा तरह कहाँ फैलायेगी,

जहाँ, सिर्फ मृत्यों के सिवाय कोई अधिकार नहीं, मृत्यु के दर्दों में, रहते हैं, वहाँ जनता की, जाती की, और भाषा की प्रधानता के माध्यम में, जहाँ जनता में सारे लोग अपने आप नाश होने को सनध्द हो जाते हैं, हर एक व्यक्ति हाथ शैतान शक्ति के वश में रह गया, उनके कान भगवान के बुलावे से अनुकूल, सुनने की पसंद जैसे रहती है।

अंत्यकाल में मनुष्य की सभी संघर्ष एक तुफान जैसा है।

भगवान की सम्मुख में दृढ रूप से धक्का दी जायेगी।

मनुष्य की दिखावट को लेकर, मनुष्य की झूटों से भरा हुआ शरीर वाला, नाश होनेवाली दर्शन पर, षैतान के साथ देकर सिर झुका कर, लाल घोडा पर आनेवाले की तरह दिखाकर, उस सफेद घोडे को, उसके ऊपर से कृषक से चलकर, उस पील हो रही घोडे को देखनेवाले, अपनी विस्तृति केलिये बनाई हुयी जगह में मनुष्य की कठिनाईयों को बढाने केलिये, मनुष्य केलिये मृत्यु को ही रखवाले की तरह, रखने को, तूफान की सृष्टी की।

अंत्यकाल की संघर्ष, मौत हुई व्यक्तियों को समा करने को भी समय न होगा।

युद्ध में भाग लेने वाले को मृत्य जकी गीत सुनाई देंगी।

आत्मा की अस्वस्थकारक क्रिमी से शरीर खराब हो जायेगी।

पहला मृत्यु और दूसरे मृत्यु को सामने करते हुए अंत हो जायेंगे।

मनुष्य अंत्यकाल संघर्ष को, इस युद्ध बढने का कारण जगह और मनुष्य की हक जो है उनके बदलने के बारे में मनुष्य को पता नही चलेगा।

अंत्यकाल की संघर्ष न्याय के लिए उपयोग नही होगा।

नीति को कायम करने को, बुरायी के पहले शांती स्थापना नहीं होगी।

मनुष्य के कार्यक्रमों के कारण प्रतिकार के लिये कोई हक् नहीं रहते हैं।

अंत्यकाल संघर्ष जो है वे बहुत भेदों से रहते हैं।

भंयकर स्थिति में, वधशाला की अस्थित्व में,

विवाद उठाने में,

मनुष्य को, युध्द बनाने की विषय में,

नेतृत्व में और फायिदा उठाने की बुरी आदमी केलिये भलाई के विषय में फ़रक़ रहेगी।

अतः भोले व्यक्तियों ने मरने तक़ पीडित होकर, भगवान की परिशुध्द लोग डर लगाकर आहत साक्षी हो रहे हैं।

इसीलिए ईसा की वधु संघ को सन्नद्ध करने को धरती केलिये यही ठीक़ समय है।

अंत्यकाल में अधिक हो गई मनुष्य की संपत्ति

अंत्यकाल में अपनी जरूरतों से भी अधिक ऐश्वर्य इकट्ठा की गई है उसकी गवाही–भाग्य जो है प्रातः काल की बरफ की तरह सूख जायेगी, उसी प्रकार भाग्य भी सूख जायेगी।

सूर्योदय के पहले होने की तरह होगी।

शाम होने पर वह दिखाई नहीं दिया।

किसी कारण के बिना कमाई अंत्यकाल की विस्तृत दौलत

धूप की गरमी को रास्ते की अलकतार जैसे पिघलीरही है।

नाल से अवरोध के बिना निकल जानेवाले पानी की तरह

किसी प्रकार की परिकर से उस पानी को रोकने में असफल होने की स्थिति है।

उछल कर आनेवाले जल से रही जल प्रपात में धोते समय सभी अशुद्धता चली जायेगी।

इसलिये अंत्यकाल में मनुष्य का ऐश्वर्य – वह किस प्रकार के दबावकरने से आयी हो, किस प्रकार की हीन बुध्दी की वजह से कमाई है, उस ऐश्वर्य की कीमत उसकी नेट्वर्क के आधारित है।

भाग्य से परीक्षा में परिवर्तन के कारण की स्थायी रहेगी।

अंत्यकाल की अधिक ऐश्वर्य सामान्य रूप में हमेशा नहीं मिलेगी।

कुछ ही बार वह सधर्म होगी

केवल कुछ ही समय आशीर्वाद रहेगी।

अंत्यकाल की अत्यधिक दौलत– कमाते वक्त साधारण रूप से दिखायी जायेगी।

उसे खर्च करते वक्त, संघ में दिखायी देती है। आमतौर पर यह और जायेगी। उसकी नही रवो जाने की स्थिति में यह मालूम नही कि उसका आगमन कैसे होने की स्थिति हुई।

अंत्यकाल में अगर अत्यधिक ऐश्वर्य रही तो मनुष्य की इज्ज़त गैरव को नाश करेगी। मनुष्य सही मौके को समझकर आदर से कमाई सेपदा का सम्मान होगा ।

अंत्यकाल की अत्यधिक ऐश्वर्य जो है, आनंद ही जीवन लक्ष्य मानकर उसे खर्च करने में एक सवाल रहेगा ।

कई लोगों के बीच में भांटते वक्त

जब जिंदगी खतरे में होता, तो उसे बचात वक्त

टुकडे करने की लक्ष्य से मनुष्य के सामने वह रखा गया समय में,

न्याय प्राप्त नही होते वक्त, पीछे जाने के समय, उसी को बचाना ही मुख्य लक्ष्य होते समय, एक सवाल की तरह लगेगा।

अंत्यकाल की अत्यधिक ऐश्वर्य, नीती मार्ग में जाते समय, सही रीति में उसे इस्तेमाल करना होगा।

सत्य को ढूंडने की हृदय की वजह से

अपनी मंजिल को जानते हुए आत्मा के द्वारा,

अच्छी और बुरायियों को समझने के मनुष्य का लक्षण होकर, उस मूल्य की भेदों को समझने के कारण यह ऐश्वर्य सुरक्षित रख जायेगी।

अंत्यकाल में धोखेबाजी

अंत्यकाल की धोखेबाजी बढ़कर, वृद्धि हो रही है।
धोखेबाजी को धरती पर आरंभ करेगी।
अन्याय से संपादित फल की सच्ची मतलब समझ जायेगी।
अंत्यकाल की धोखेबाजी दुनिया भर वृध्दि हो जायेगी।
गिनना हमारे वश में नहीं होगा की इतनी जगहों में वह दिखायी देगी।
वह विस्तृत रूप में प्रवेश हो जायेगी।
मनुष्य की आदरणीय सभी विषयों में दिखेगा।
अंत्यकाल की धोखेबाजी मनुष्य की समग्रता को नाश करेगी।
सच्चापन विषयों को झिंझोडना।
झूठ को बढाना।
धोखेबाजी की दृढ़ नींव।
बेईमानी को बढाती है।
बहुत कुचक्रों के मई का घर जैसे विस्तृत होगी।
कमाने के लिए आसानी रास्तों को ढूंढना।
मनुष्य के मेहनत से काम करने की पद्धति को बदल जाती है।
विश्वास उत्पन्न करके बाद में बदल देना,
जिंदगी के अनेक आकर्षणों की बार मनुष्य को खीचती है।
सप्ताहांत में आत्मा की आराम के बारे में सोचने की इंरादा देती हैं।
जिंदगी में अनेक विचारों की ओर नहीं मुडकर ध्यान देने की आवश्यकता है।

एक विषय विपरीत होने के बाद, सही रास्ते को चुनने से, लालची व्यक्तियों से, बहुत सारे प्रयोजनों को लोगों आशा करने की धोखेबाजी से, जिंदगी में व्यर्थ लोगों से सावधानी रहना है।

अंत्यकाल की धोखाबाज जो है धोखाबाजी को सामने लाकर विस्तृत रूप से चलने की तरह करेगी।

मनुष्य में होनेवाली विचारों पर प्रश्न,
दरवाज डगमगा होने से, एक संदेशक दिया गया तो,
एक लिफाफ पर मुद्रण डालने से,
भोजन समय में दूरवाणी की आने से,
यह वाक्य कि मुझे माफ करना रास्ता में सुनने से
एक भिक्षा बरतन से सन्नद्ध होते वक्त,

भोलापन में व्यक्ति की एक हस्ताक्षर से एक कांट्राक्ट के कार्य को स्वीकार करते वक्त,

मूल्य बिना समझ के, कागज पर हस्ताक्षर करते वक्त धोखाबाजी आगे आकर खाडा होगी।

बहुत सारे कार्यक्रम होते समय अंत्यकाल की धोखाबाज बढेगी।

परिस्थिति अगर बदलगयी तो

नयी पद्धतियों में कोर्य करते वक्त

उन से संबंध नहीं होता तो,

मौका खाजाने के बाद पीछा करते,

भोजन प्रदार्थ आगे रखे तभी उन्हे स्वीकार नही करना

परीक्षाफं नही हतने से को नहीं समझना,

विषय मालूम होते समयए ज्ञान नहीं होना,

बुद्धिमान व्यक्तियों से सुझाव नहीं लेते समय, यह धोखाबाज बढ जायेगी।

अंत्यकाल की धोखाबाज जिस जगह विश्वास नहीं है वहाँ रहेगी।

मित्र के रूप में स्वीकार करते वक्त

जल्दी जिसव्यक्ति को समझते है उनको स्वीकर करते वक्त, बहुत ऐश्वर्य होते वक, विवेचन खोते वक्त

जो प्राप्त हुई है उसका कारण समझेबिना छोडना,

अनुभव एक प्रकार की विशेषता को रखते वक्त,

फिर प्राप्त होने की अभिप्राय से, बदलाव जो है बहुत असभ्य दिखाते वक्त,

एक कमरे में, दीप, या चाबी के बिना रखने के विषय को छुपा कर रखना है।

मनुष्य के लिए बुलावा

विश्वास की मूल शक्ति के बारे में ध्यान से रहिए।
आशा करने की विधान से,
परिस्थितियों में होने वाली बदलाव से संबंधित वादा के कारण
दूरी रह गयी संदर्भ,
ऋण के बारे में,
शुल्क के बारे में,
अमानत के बारे में, पुरस्कार के बारे में,
पैसे की बदलाव,
वाणिज्य कार्ड की बदलाव के बारे में,
वादा की गयी स्कीम को जानने वाले,
वास्तव में वेतन न मिलने के दिन में
सही व्यक्तियों के पालन में रहकर,
अपनी जुड से अंडों को खाये बिना
उनको और एक रहस्य अलग जुड में बदलाव कर रही है।

अंत्यकाल में मनुष्य के काम-काज

अंत्यकाल में हमारी जनता के काम–काज, अपनी विषयों को उनके पद्धति में देना।

अपने प्रभाव से वे इस्तेमाल की गयी है।

उनकी क्रियाशील विषय में रखा गया है।

विचारों को, सहज विषयों का विवरण करनेवाले व्यक्ति, उसमें आनेवाली समस्याएँ, बहुत विचारों से रहते हैं।

मनुष्य विचार के बिना आहार लेते ही, उचित यातायत की संबंध रखता है।

वह मनुष्य के मन में विषय को चाहते ही उनको सफलीकृत कर देगी।

मनुष्य के हृदय में छुपाकर रह गयी असभ्यता को प्रतिबिंबित करेगी।

अंत्यकाल में स्वतंत्रता से खर्च करने का लक्षण जो है, सजीव भगवान की आत्मा से अलग हो कर विच्चिन्न स्थिति को प्रतिफलित करेगी।

अंत्यकाल के काम–काज, अपनी मूल/स्त्रोत जो है स्वर्ग से अनुग्रहित की गयी है।

क्रम पध्दति में रखना जो है, स्वर्ग से उतार कर आई हो,

प्रवचन स्वर्ग से आने की तरह समझना है।

अंत्यकाल काम–काज, मनुष्य के मन को दी गयी स्वर्ग अभिनय के कारण रहेगी।

अंत्यकाल की रंग मंच पर प्रदर्शित करने को लिखे अभिनयकर्ताओं को एक मौका जैसे समय है।

दया भरित अच्ची गीत को सुनानेवाली संगीत परिकर से आनेवाली आहट की कारण की तरह रहेगी।

अंत्यकाल की खबर को शैतान की स्वर मिलकर रहेगी।

अंदर छुपगयी शैतान की स्वर, जादूगरनी की शक्ति, पहले से आरही मूर्ती पूजाओं की शाप, विचित्र कहानियों में दिखा रही पागल की क्रियाएँ, हृदय के बिना दुष्ट से मिलकर पिंड करके और बुरी लोगों की सूचनाओं को मिलाकर, सत्य से, विश्वास से किसी संबंध के बिना, समग्रता को नाश करके खुशी लेने की स्थिति में भूत अधिकार करने की स्थिति रहेगी।

अंत्यकाल की परिस्थितियाँ, आश्चर्य करते हुए सामने आयेगी।

अर्थ के बिना आयेगी।

अविश्वास के साथ रहनेवाली समूहों से आयेगी।

सन्नद्ध नहीं होनेवालों पर, बुरी उपदेश प्राप्त हुए लोगों पर बिना आत्म रक्षण के व्यक्तियों पर आयेगा।

मनुष्य के अंत्यकाल के काम काज मृत्यु सहित रहेगा।

परीक्षा के लिए अनुभव होना,

मनुष्य की वधा को गवाही

संघ में नहीं होने देती है ।

कडी श्रम का कारण हो जायेगी।

मनुष्य के अंत्यकाल के काम काज, मनुष्य अपनी गलतियों को मानने की तरह करेगी।

मनुष्य की धोखेबाजी को आहवान करना।

मनुष्य की झठे बातों को

डराना, न सहित मिले दर्द,

जीने के लिए किये जाने वाली झूठी वादा,

मृत्यु की पीढा को बुलाना।

अंत्यकाल कें कामकाज, मनुष्य का स्वतंत्र इच्छाओं को दृढ रखने को पैदा हुई धोखेबाजी को स्वीकृति करेंगे।

भयंकर कठिनाई के संबंधित परिकर, मनुष्य के चेहरे पर मृत्यु के घूंघट को बुलायेगी। मृत्यू, गंध, खराब होनेवाली शरीर, हड्डियों को निकालना चाहती है।

मनुष्य के अंत्यकाल कें काम काज – मर गये लोगों की गिनती से शुरू होगा।

मर गये लोगों की समा धि करने से,

हृदयों को दया से भरने से,

नाश करने का रोग बढने की वजह से, अग्नी समान भूमि से सिंहासन की कमरे से देव दूत का सेवा पध्दति में शुरू होगा।

अंत्यकाल के काम काज, पूर्ण इच्छा से भाग लेनेवालों की मदद करने की इच्छुक हृदयों को काम किये बिना दूर करना।

अंत्यकाल के काम काज, एक पौराणिक लडायी को स्थापित करेंगे।

धरती पर इक्टटा हुआ बुराई को मिठाना।

पुनर्जन्म की पहले ही जरूरी प्रक्षालण को करना।

नयी शुरूआत के पहले, एक निश्चय स्थिति में मनुष्य परिवर्तन होने के लिए ही आगे आ जाना।

अंत्यकाल के काम काज जिंदा होने की संबंधित स्मृतियाँ धाराहीन हो जायेगा।

सभी दृष्यों की संबंधित स्मृतियों को,

बंध की गई अभिलेखों को,

खुली गई अभिलेखों को,

परिशद्ध आत्मा की प्रत्यक्षता के द्वारा होनेवाली भगवान की दृष्टी गति को कम कर देगी।

मनुष्य के जीवन काल में जीव के लिए मुद्रा सहित मेमन जीव ग्रंथ को सूखी कर देगी।

अंत्यकाल की वाणी

अंत्यकाल में, मैं अपनी बात करुँगा।
मनुष्य की परिसर सफल होने के समय से संबंधित है।
मनुष्य के धर्म विषय का,
मनुष्यों का विभिन्न विश्वासों का,
मेरी आत्मा का तलवार, वादा के अनुसार पाते ही, अंदर घुस जाते ही संपन्न करने को,
सत्य के प्रदर्शन का नाश करना,
अनेक पीढीयों से, सजीव हो, प्रेममय हो भगवान में निक्षिप्त हुई सभी को भगवान से
प्रकटित होकर, सुनाकर, पहले ही बताकर,
गवाही होकर, पवित्र होकर, प्रत्यक्ष होकर
अंगीकार समय में जरूरत हुए तो मनुष्य से समझने के लिए, स्वतंत्र पर्यावरण में, कृपा सामने आकर प्रत्यक्ष होते हो, अंत्यकाल की बात सुनाई देगा।
अंत्यकाल की बातें, विविध प्रकार की आवाजों से रहेगी।
दूसरों पर आधारित बहुत विषय,
बहुत बुद्धिहीनता से
अधिक अकल के साथ,
अधिक विचारों के साथ,
अधिक बोध के साथ,
मनुष्य की भूसंबंधित जीवन में जल्दी से जो संभवित है उस केलिए विविध आवाज रहेंगी।
अंत्यकाल जो है पूरे धरती भर बात करेगी।
सभी सागरों में,
धरती और गगन सभी में
परिस्थितियों में होनवाले विचित्र परिवर्तन के बारे में बात करेगी।
मनुष्य की आश्चर्य सहित धरोहार के बारे में,
जो चीजों पसंद है उनसे गिरगयी चीजों के बारे में,
आहार के लिए परिसर को शुध्द करके सन्नद्ध करने को।
विश्वास और सत्य की पसंद मिलने की जगह ढूँढने के लिए, बात करेगी।

भगवान अंत्यकाल के बारे में बात कर रहे हैं

अंत्यकाल, एक दिन से संबंधित होकर बडे विषयों से नजदीक होकर बात करेगी।

इंतजार करने के एक दिन से
प्रवाचित कर रहे एक दिन से
बढ़ी अधिकार हुई एक दिन से
स्थापित की गई अधिकार होनेवाले एक दिन से
अनुचरगण के साथ रहे साम्राट से
साम्राज्य के साथ रहे साम्राट से
राजाधिकार खो गये साम्राट से

होनेवाली घटनाओं को पहले ही प्रकटित करने सामार्थ्य हुए साम्राट से बात करेगी।

अंत्यकाल जान नाश के बारे में बात करना।

नाश हुआ लोगों के लिए दुखःद विषयों से परिशुध्द व्यक्तियों के प्राण त्याग के बारे में,

सुरक्षित व्यक्तियों के आनंद कार्यक्रमों से,
चली गयी व्यक्तियों की ज्ञात की कोशिशों से,
एक ज्ञान दीप से जला हुआ विश्वास सहित हृदय से बात करेगी
अंत्यकाल बडी आशाओं के बारे में बोलेगी।
मंजिल को पहुँचने वाले मनुष्य की तरह,
भगवान की महत्वपूर्ण प्रणाली में बडी मील का पत्थर पहुंचने की तरह,
वादा की गयी तरह जैसे फिर जन्म लेने को नजदीक होना,
एक विशेषता हुई परिसर किसी प्रकार के परिवर्तन के बिना रहना,
नित्यजीव पर ध्यान होकर मंजिल में विशेषता को,
प्रेमपूर्ण भगवान की प्रत्यक्षता में बदलने को,
अपनी परिशुध्द लोगों को ज्ञात हुई, पूर्ण स्वास्थ्य के विषयों को बोलेगी।

अंत्यकाल में प्रभु की वेबसैट

प्रभु की वेबसैट की दृढ पूर्ण परिवर्तन हो रही है।
समय में ही परिहार अदा करने के धर्म से मुक्ति के लिए, हृदयपूर्ण थोफाओं को देने के लिए
मनुष्य कृपा की योग्य होते हुए
संपूर्ण होते हुए
इस भव्य शुभवार्ता को प्रकटित करेगी।
प्रभु की वेबसैठ प्रकटित होकर विवरणात्मक रुप में बाहर पहुँचेगी।
आत्मा की संचालन को पूरा करेगी।
सत्य के प्रमाण को जानती है।
प्रभु की वेब सैठ जो है अतीत को लेकर भविष्य में जोडेगी। मिला देती है।
वर्तमान को समझने की तरह मिलाती है।
मनुष्य की लक्ष्य को उसके स्वतंत्रपूर्ण हृदय को जोड देती है।
शाप को अपनी मूल से जोडती है।
आशीर्वाद को पालन से जोड देती है।
ज्ञान के खडेहोने की तरह ज्ञान को विनती से मिलायेगी। प्रभु की वेबसैठ जो है प्रेमपूर्ण भगवान के ज्ञान पर अपनी सावधानी रखेगी।
सन्नद्ध होने पर अधिक दबाव रखेगी।
खुले हुए दरवाज पर दबाव को,
संदर्भ के असार ज्ञान पर दबाव रखना।
परलोक से संबंधित संबंधों पर दबाव,
मंजिल को चुनने में दबाव,
आनेवाली उत्तरदायित्वों पर दबाव,
मनुष्य के अपने शाश्वत जीवन पर रखा गया दुबाव को दिखाती है।
मनुष्य अपने भगवान से परिचित करने पर उस वेब सैठ खडी होगी। उस दिन का ज्ञान कमा कर, आध्यात्मिक संबंध को स्थापित करेगी। मनुष्य की बोध में भगवान का प्रेम और एक बार फिर से ले आयेगी। वह बुराहे से दबाकर वश में न आयेगी।
उसकी दृषि से मनुष्य का आदर नहीं करती है ।
उस पद्धति में रह गयी पाप को माफ नहीं पायेगी।
उस पद्दति में जो पाप रह गये उनकी माफ नहीं मिलती है

वह मनुष्य को नीती की ओर ले जायेगी।

वह अपनी गर्व छोडने केलिये
व्यवहार में समग्रता को प्राप्त होने केलिये,
उसकी आत्मा को परिशुद्धात्मा के हाथों में सौंपने को,
उसके मंजिल अपनी इच्छा के अनुसार छोडने को,
शिष्य के रुप में बडे होने को
बकरियाँ को पीछे की ओर छोडने को,

भेड के पिछवाडे में, गडरिये से मिलने के लिए, आनेवाले प्रकाश के पालन में, घमंड को छोडकर समग्रता को उपलब्द करने को

लोगों को परिशुद्धात्मा के पास संरक्षित रखने को, वह मंजिल को समझने की तरह,

बकरी को पीछे छोडने केलिये
भेड की समूह में आनेवाली प्रकाश के राज्यमें शामिल होने को
परिशुद्ध प्रकाश पालन में सामने करनेवाला अच्चा पालन,

आशा भरित इस संसार को, रक्षा की सुवार्ता को, प्रभु की वेब सैठ जोर से सुनायेगी।

पुनर्जन्म को ढूँढने की हिसाब से फिर जन्म लिये लोगों को, प्रोत्साहन देने को

मूर्ति पूजा को छोडकर साक्षी की तरह रहने केलिये,
देवदूत खुशी लेते समय, सबसे पहले स्वीकृत होने को,
सजीव भागवान की ज्ञान की जरूरत जानने के लिए,
सूली के संदेश से मनुष्य का मन भर ने को,
पापों की क्षमा की सच्ची संबंध को

कृपा सहित भगवान की सम्मुख में नित्यत्व के लिए कोशिश करना हमें समझ सकते हैं।

अंत्यकाल की स्वीकृति योग्य स्थिति

अंत्यकाल की सम्मति जो है, वह ऐतिहासिक योग्य है। अंत्यकाल एक साथ सम्मति जो है वह असाध्य है।

वह अपने मौका को आगे करके साबित है। जो हम चाहते हैं वह उसके अनुकूल नहीं करके साबित किया।

अंत्यकाल की सम्मति जो है लोकतंत्र की सौंदर्यता को समझेगी।

विरोध को छोडने की तरह मानव सरकार दिखते है । कठिन दशा के बाद धर्म संबंधित हिंसा को दूर कराना देखते हैं।

पिता की चित्त फिर स्थापित होकर धरती पर राज्य पालन का आरंभ दशा रहेगा।

शिष्य की प्रार्थनाओं का उत्तर मिलने से,

पिता की आशीर्वचन से, पुत्र की राज्य नीती,

शांतिपूर्ण रहेगा और संघ वधु आजायेगी।

अंत्यकाल की एक साथ सम्मति जो है, कुचक्र व्यक्तियों को हठाना मालूम होगा।

सेना को हठाना,

मनुष्यों पर प्रेरित कर व्यर्थ हुई शास्त्रों को नाश करके हठाना।

जलन, धोखे बाजी के अचल जैसे अधिकार जगह को हठा है।

कारागर में रही बडी जनता को सेवा न करेगी।

जिन लोगों ने दया, प्रेम, को नहीं जानते हैं, उस जगह प्रकाशित होनेवालों की सेवा करेगी।

डर से, आपेस में झगडा रख कर उचित मूल्य को आयोजन करनेवालों की सेवा नहीं करेगी।

कल की स्थिति को, वैसे ही रखनेवालों की सेवा नहीं करेगी।

पहले ही फैसला की गयी परिणामों को पाने की भाग्य वाला क्रीडाओं की सेवा नही करेगी।

सिर्फ पैसा से ही प्रवेश पाने के घरों की सेवा नहीं करेगी।

दूसरों पर अपराध लगवाने वाले स्वार्थी मनुष्य की सेवा नहीं करेगी।

अंत्यकाल की एक साथ सम्मति जो है नियंताओं को दबाकर रखेगी।
भूखों की पुकार को अपेक्षा करनेवालों का सामना नहीं करेगी।
दूसरे नाम से रखते हुए, छपी हुई अन्याय का सामना नहीं करेगी।
जिसकी कीमत खो गयी है – ऐसी चीज को फिर कीमत नहीं देगी।
विरोधी भावनावों को उचित शांतियुत सामरस्यता को नहीं दिखायेगी।
मनुष्य की खुशी को सरक्षित नहीं रखेगी।

अंत्यकाल में फिर पुष्टी को निश्चय करना

अंत्यकाल पुष्टी को फिर साबित करना जो है, वह मुक्ति को निश्चय करना है।

गलती को सुधारन जो है उससे स्वतंत्रता की प्राप्त होती है।

वह अपने स्थान में रखने को जानता है।

जीवन स्थिति गति की निश्चयता को, मनुष्य को घडी की जरूरत नही रहती।

उसकी आवश्यकता नहीं होते वक्त,

धरती पर होनेवाले जीवजल को, निर्देशक के रूप में, इससे आगे नहीं रह जायेगा।

आजीविका को खो जाने के बारे में सूचित करता है।

उससे संबंधित मुख्य विषयों को खो जाने का सूचना देता है।

मुख्य अनुसंधानिक पिन खो जाये तो रहगयी संबंध तोड गयी तो तब उसके बारे में सूचित करता है।

वह आत्मा की स्वतंत्रता देता है।

अंतरात्मा को, मनुश्य की शरीर को मुक्ति देगी।

दूसरों की आधिपत्य से,

अधिकार चलाने की स्थिति से,

मनुष्य की चालक से सृजन करने की सुझाव नहीं रहते समय

मनुष्य को मौका न होने की स्थिति से, मुक्ति देगी।

अंत्यकाल पुष्टी की साबित करना जो है, परिवर्तन के बारे में विलापवट करेगी।

अपनी स्थिति को खो जाने के बारे में, इतिहास को बदलने द्वथ कारण,

जल को पूरे जीवन सयम की हिसांब करके जीवन काल क्षण–क्षण कम होते हुए, दूसरी ओर जाने के कारण,

जिंदगी की एक नवीनता को ले आनेवाले नयी विषयों के बारे में बात करेगा।

समझ होने के कारण, तय होने की जरूरत को समझने के कारण, देवदूत की आवहनाओं के बारे में बात करेगा।

मनुष्य की आवहन के कारण,

कृपा के लिए दी गयी बुलावा के कारण बात करेगा।

अंत्यकाल में फिर साबित हुई है–

मनुष्य को, सजीव भगवान नियमित की गयी प्रवचनों के बारे में बात करेगी।

मनुष्य को दी गयी समय से स्वतंत्र प्राप्ती की संबंधित प्रवचन को,

मनुष्य को पहचानने केलिये रखा गया प्रकाश से संबंधित प्रवचन को,

मनुष्य की प्रोत्साहन के लिए प्रभु की सम्मुख में रखा गयी सत्य से संबंधित प्रवचन को,

मनुष्य के फाइदा के लिए उसके परिसर को प्रकाशित करने के द्वारा मनुष्य पर होनेवाले प्रभाव से संबंधित प्रवचन को,

अभी भी मनुष्य के हृदय में छुपाकर रहे पाप के प्रतिफल के रूप में भगवान के क्रोध, मनुष्यों के ऊपर आयेगी, करके, बोलने के प्रवचन से बताता है।

भगवान के लिये सन्नद्ध हुई लोगों से बात करता है।

भेड समूह से भेडों के बारे में बोलता है।

पवित्रता को प्राप्त हुई क्रइस्ट की वधुसंघ के बारे में बोलता है।

कृपा युग के अंत के बारे में बोलता है।

अपनी कृपा बाहुओं को प्रसार करके इंतजार करने के प्रेममय भगवान के बारे में बात करता है।

अंत्यकाल के श्रमानुभव

अंत्यकाल का श्रमानुभव जो है, तेजी से होनवाली विशेष परिस्थितियों का क्रम है।

धरती पर होनेवाली मनुष्य के नाश का अनुभव है।

स्वतंत्रता की इच्छा जो है, विस्तष्त रूप में बदलगयी है।

उचित अधिकार के बिना रहगये धर संबंधी कार्यक्रम अंत्यकाल का श्रमानुभव बंधन को खोलकर, मुक्ती प्रदान करेगी।

जुआ को हटा करके छोड देगी।

निश्चय नही करेगी और निकाल देगी।

अलग होना जो है, उसी भोजन को चित्रित करेगी।

अनेक भोजनों में मीठे पथार्थों को परोसता है।

कुत्तों के निये भी उपयोग न होनेवाली टुकडों को मेज से खाली कर देगा।

कम हुआ पेट को दिखायी नहीं देगी, दूर करेगी।

बहती हुए जलपात को जाने नहीं देगा।

जीव जल से भरी नदीयों की अपेक्ष नहीं करेगा।

मनुष्य को आग में रहने के अनुभव को,

मनुष्य को टंडा में काँप होने की,

मनुष्य को हवा मे झांक कर देखने का कारण क्यों न समझ जाता है ?

मनुष्य के परिसर को बदलना

एक बार प्रकाश था अब अंधेरा करना

एक बार एकता रहे तो अभी हिंसा को,

एक बार भांटि थी तो, अब उपद्रव से भरी हुई है।

एक बार अच्छा पालन है तो अब जगडाँए हैं।

एक बार पालन है तो अब बिना पालन के दिन है।

एक बार पुष्टी आहार है तो अब उपवास है।

एक बार विश्वास है तो अब धोखेबाजी है। हस्ताक्षर करके मृत्यु खबर को उचित समय में बंद की गयी है।

दिन, रात एक रूप में देखने से एक हप्ते में जो की गयी है वह हजारों रीती में इस धरती पर फैली हुई है ।

दुष्मनी की भावना को बढाने को

शत्रुता बढाने के लिए,

नाश हुआ आत्माओं को जलाने को,

शरीर, प्राण और आत्मा की विमुक्ति के लिए कभी कोशिश न करनेवाले रहते हैं।

अंत्यकाल श्रमानुभव जो है, मनुष्य और भगवान दोनों की सच्ची संबंध ा को प्रकटित करने केलिये सूचित करेगी।

भेड बहुत दिनों से इंतजार कानेवाली जगहों को बंद कर जाते हैं।

प्रवचन के द्वारा प्रकटित की गयी इंतजार कर रहे कोशिशों का अनुभव है।

भगवान के सिंहासन मंदिर से प्रकशित की गयी विषयों को,

मनुष्य के सामने नियमों को दिखाते के लिए,

शाश्वत मजिल के लिये आगे बढनेवाले मूल्यवान लोगों से मिले हुए मनुष्यों के नजदीक हो जाते हैं।

अंत्यकाल की शिकायत

अंत्यकाल की शिकायत जो है इस धरती को घेरने के लिए जल्दी कर रही है।

बहुत दूरी प्रांतों से जल्दी ही सुनाई देगी।

तुरंत मनुष्य के कान–देशों में होनेवाली कोलाहल के बारे में,

जनता बातों से भर जायेगा।

अपनी भेडों को नाम से बुलानेवाले उस भगवान से श्रद्धा रहित लोगों से संसार भर जायेगा।

मनुष्य की समझौते को दुन्दुला कर जायेगी।

शैतान की आवाज को सुनने देती है ।

भगवान की सम्मुख में मनुष्य की आवाज गंभीर हो जायेगी।

सुनने के उचित विषयों को नहीं सुनाती है।

बचत रखने के उचित विषयों को नहीं सुनाती है।

मनुष्य की याद नहीं रखने की बाते नहीं सुनायेगी।

अंत्यकाल शिकायत जो है, अनुकूल मन को ही दर्शित करेगी।

क्रोध स्वभाव, क्षमा रहित गुण वालों को भी दर्शित करेगी।

एक कपडे के किनारों की चारों ओर लिपित कर रहेगी।

पूरे रंद्र सहित कपडा,

कीटाणुओं से पकडी गयी एक कपडा

कभी भी खून से साफ नहीं की गयी कपडा,

सत्य जो है वह छोडी गयी अपवित्र पेशा वह समस्याओं के समाधान को नहीं ढूंडती है।

सही या अच्ची सूझाव को वह नहीं सुनेगी।

खराब हुई हड्डी को भी नहीं छोडकर खाते ही रहेगी।

अंत्यकाल में शिकायत जो है मनुष्य की कान पकडकर झुका येगी।

जनता के सुनने लिये धीरे–धीरे बात करने को अनुकरण करेगी।

बार–बार, उसी को ही बोलने नहीं देने केलिये मनुष्य की मुँह को बंद करेगी।

उसकी मूल्य को नाश करने की कोशिश करेगी।

उसकी मूल्य के विषय में नाश को ढूँडती है।

बहुत दबाव के काम रहनेवालों से अधिक तर दखल नहीं करेगी।

आत्मा की प्रयोजन होने की तरह अभिवृद्धि होने में दखल नहीं करेगी।

स्वार्थ के लिए सहन के साथ भार से भरकर, मदद करनेवालों को बलहीन करेगी।

संबंधित सभी विषयों को प्रकट करने की उपेक्षा करेगी।

ऊँची अभिप्राय से बने सभी उद्धेश्यों को नाश करेगी।

मनुष्य की बुराई को दृढ़ करेगी।

धरती पर भगवान की परिशुद्ध जगह को खींचने के लिये दुष्टट भावानाओं के साथ चलेगी।

जीव सहित नित्य भगवान के सम्मुख में नहीं लौटने के लिये को दुष्ट के साथ सहमतहोती है।

आग में जलनेवाली सभी को अंत्यकाल की शिकायत एक जगह पर एकत्रित करेगी।

हृदय बदल गयी है इस बात को साबित करने केलिये एक विवरण होना है

सभी खोकर अंधेरे में प्राण तडपाने वालों को,

मन की बदलाव के लिये सही विषय जाँच नहीं करे तो,

जंजीर से बंध करके कारागार में रहगये लोगों को, इस कृपा युग में सजीव ईसा से परिपूर्ण अंगीकार से नहीं तो, ऐसे लोगों को बंद करेगी।

आत्मा के बारे में जो दीन हैं वे धन्य हैं

आत्मा में जो दीन हैं, वे धन्य हैं, क्यों कि उनकी आत्माएँ उनके प्राण को चलायेगा।

उनकी आत्माएँ ऊपर ले जाएगीं।

उनके प्राण तथा आत्माओं का बल देनेवाली उपदेशों से

देवदूत की करनेवाली आवाज उनकी आत्माओं को सुनाएगी।

आत्मा के विषय में जो दीन है वे धन्य है, क्यों कि – वे जीत हो सकेंगे।

– वे परिशुद्ध जगहों में रहेंगे।

– वे परिशुद्ध वाक्यों में रहेंगे।

क्योंकि – वे शिष्य होने के लिये परितप्त हुए है।

एक पुरस्कार के लिए वे प्यास होकर रहेंगे।

वे जीवजल नदी की प्रवाहित हो रही शुध्द जल की झरने के पास ले जायेंगे। वहाँ वे और प्यासी नही होगी।

क्यों कि –अपनी आत्मा की संपन्न स्थिति में खुशी से रहेंगे।

अपनी आत्माएँ उछल कर नाचने की तरह खुशी में रहेंगी।

अपने भगवान की सच्छाइ में आनंद से रहेंगे।

अपने चेहरे में आनंद से रहनेवाले धन्य है।

वे स्तुति से, अपनी मूह को भरकर रहेंगे।

प्रत्येक अक्षर मेरा आत्मा का संदेश के रूप में दी जायेगी।

भगवान के साथ धैर्य से चलते हैं। इसीलिए आत्मा में जो दीन है वे धन्य है।

इस विश्व में होनेवाली विज्ञान से एक विद्यार्थी की तरह परिश्रम करेंगे।

भगवान की परिशुध्दता को अपनी चालक स्थिति से वे स्वीकृत करेंगे

अपनी भगवान से संबंधित ज्ञान की वजह से वे धन्य हैं।

वरदान से भरी हुई आत्मा प्रत्यक्षता के वजह से वे धन्य हैं।

अपनी आँखों को सूर्य प्रकाश की तरह प्रकाशित कांति को देनेवाली प्रतिष्टा के वजह से वे धन्य है।

भगवान के साथ खाने की क्षण को पाते है इसीलिए वे धन्य हैं।

बहती हुइ जीव नदी को अपने भाई देखते हैं इसीलिए वे धन्य हैं।

प्रत्येक आत्मा को, पाप से मुक्त करके, माफी जो है उससे भगवान की कृपा से अभिशक्त होते हैं। इसलिये वे धन्य हैं।

वे कहाँ खडे हों, पूरी तरह से इसलिये जानते हैं।

जिंदगी मे सभी परीक्षाओं को जानता है।

हर दिन उन्हें व्याप्त होनेवाली भिन्न अनुभवों को पुरी तरह जानते हैं।

भगवान के हाथ के काम के कारण, उनके हाथ फैलाकर दी गयी स्वागत के कारण,

हृदय परिवर्तन के कारण, उनके ऊपर दिखाई गयी मार्गदर्शक लक्षण से

जरूरी में पडगये लोगों पर प्यारे भगवान के प्रभाव को पूर्ण रूप से जानने के कारण, जो दीन है वे धन्य है।

मेरी आत्मा की सुगंध (२)

मेरी आत्मा की सुगंध संसार को आश्चर्य करेगी,
पूरी तरह से जानने को जगायेगी,
उसकी मूल देखने को कोशिश करके
संसार को जगायेगी।
मेरी आत्मा की सुगंध पुत्र का पुनरुद्धान की व्याप्त नहीं घूमेगी,
बाहर आने वाली खुशबु को नहीं लगायेगा,
अपनी सुविधा को अच्छे दिनों में अदृश्य करके खराब नही करेगी।
मेरी आत्मा की खुशबू जो है सम्मुख के चिन्ह है,
निर्धारण का चिन्ह ही है।
आत्म विषय में सभी कुशल है इस विषयको बोलने का चिन्ह
दिन–रात बचा रही आत्मा की चिन्ह है,
स्वच्छ पटी के साथ दी गयी कृपा की चिन्ह है।
फुरसत के दिनो काल में वह आयेगी,
इंतजार करते वक्त वह आयेगी,
प्रभु के मंदिर को, परिशुद्धता जो है, वह खुलने में आयेगी।
मेरी आत्मा की सुंगध ढूँढनेवाली आत्मा को दी जायेगी।
खुल गयी हृदय को, विश्वास पात्र सेवक को पुरस्कार के रूप में प्राप्त होगा।
संसार में रह रहने वाली बदबु को निकालेगी,
कमीज के ऊपर की दागाओं को निकालेगी,
पुत्र का अभिलेखों की कीमत को साबित करेगी।
वह धीरे–धीरे जानती है,
मनुष्य की नाक की रंध्रों में भगवान के प्रेम संदेश को भेजेगा,
भगवान की शांती, त्रित्व में रहे एकत्व भगवान से आयेगी।
वह भगवान की इच्छा को करायेगी,
शांत रहनेवाले को, पुनः ऐकय होनेवाले केलिये सेवा करते हैं।
भगवान के परिवार के मंदिर का दर्शन करेगा।
मेरी आत्मा की सुगंध, मनुष्य की अंतरंग स्थिति को बाहर दिखाने की स्थिति है।

प्रेम बंधनों में बंध की गयी। इस स्थिति केलिये वह बाह्य चिह्न है।

सजीव भगवान की आत्मा की सम्मुख मनुष्य को स्वागत बोलने की बाह्य चिन्ह है।

मेरी आत्मा की सुगंध मालून करना, और गौरव भी देना है।

बहुत डर के साथ गौरव देना है,

प्रतिष्टा की उचित जगह के रूप में, भगवान के मंदिर को, धन्यवाद के साथ स्वीकार करना जो है वह सुगंध है।

वह मनुष्य की उन्नति को चाहती है,

विश्वास के वजह से प्राप्त होनेवाली प्रतिष्टा और गौरव को समझायेगी ।

वह अपनी उचित स्थायी अलंकार करने को सिखायेगी,

मनुष्य के जीवन काल में यह एक प्रतिष्टा है,

वे अपनी स्थायी को पहुंचने के बाद मिलनेवाली आनंद को अनुभव करके, अपने भगवान के सम्मुख में जायेंगे।

रचनाकार की अभिप्राय :

मेरी आत्मा का सुगंध' जो है दूसरी किताब को भी पढिए।

भगवान अपनी विश्वासियों के साथ बात करते हैं। प्रभु की वेबसैट में, 86 पेज में है। वह बिना पैसे ही खुलेगी।

प्रातःकाल की शोभा

प्रातःकाल की शोभा हर दिन मनुष्य नही देखने की स्थिति,
खाली गृह में खेलते वक्त नही दिखायी देगी,
उस दिन की कार्यक्रम के लिए परदा खुलेगी।
सूर्योदय प्रकाश से प्रतिष्टा के पेशों से वह सजाई है ।
प्रातःकाल के द्वीप जैसे आ गयी धरती की प्रकाश से अलंकृत है।
आग पर दिखा गयी बादल से, आ गयी प्रतिष्टा को पहनेगी।
प्रातःकाल की शोभा, रात में दिखायी गयी सुंदर पेशा की पहनाव से रहेगी,
प्रातःकाल में दिखाये गये सुंदर नारियाँ,
मौसम में धरती अलंकृत किये गये सुंदर डिब्बों से,
उसकी चित्र को सफेद प्रकाश से भर के रखने की डिब्बे से,
एक संमुद्र के किनारे में शोभा और उसकी विस्तार से रह गयी सुंदरता से,
वृक्ष बढाने की जगह से, स्वच्छ जल प्रवाह को भेजने से आनेवाली शोभा काफी है,
सुबह का प्रकाश, दिन की रोषिणी को खा जायेगी,
पुत्र के सिर पर रह गयी रोषिणी को मिला देगी,
मनुष्य का समय बिताने में वह नहीं दिखायी देगी,
सुबह की रोशिणी उपेक्षा करने के लिए नहीं है,
वह आत्मा को जगाने के लिए है।
आँखे आश्चर्य से भरीहोने के लिये तिल मिलाहट की स्थिति में रहेंगे।
आँखें उसे की प्रशंसा करते वक्त,
सृश्टी चित्र को देख कर आँखे आश्चर्य पाने की तरह है।
सुबह की शोभा जो है काल और कालांश पर आधारित है।
वर्तमान और आज की धरती की परिस्थितियों की वजह से अधारित होगी।
विश्वास सहित और विश्वास रहित लोगों पर रहेगा।
प्रातः की प्रकाश जो है सृष्टी में एक भाग है,
मनुष्य को भगवान की देनेवाली गवाह में भाग है,
मनुष्य के जीवन में पहले ही रहेगी,
वह निर्माण में लगातार बदलती रहती है ।
वह वैविद्य सहित है और संतोष जनक है।

वह याद में रहेगी और चलित भी है,
वह वृध्दि होनेवाली है और विचित्र भी है,
प्रातःकाल की शोभा, कल की दुखों को मिठायेगी,
विचार के वजह से होनेवाली व्यथा को मिठायेगी,
मानव जीवन में रही अनेक कोशिशों को,
पाप की असुंदरता को,
कुर्व्यवहार के दृश्य को मिठायेगी,
चिरकाल की मुद्रा को,
इस संसार को प्यार करनेवाला भगवान मिठायेगा,
प्रातः काल की शोभा जो है, वह कृपा प्रकटित करने की तरह होगी,
कृपा को सामने करने की तरह है,
कृपा प्रकटित होकर सन्नद्ध रह जायेगी।
जिंदगी में होनेवाले कडक–चमक को जानती है।
तख्ती को साफ करना जानती है,
आत्मा की गंदगी को जानती है,
आत्मा के पवन से होनेवाली शांती को जानता है,
आत्मा पर होनेवाली कष्ट जानती है,
भगवान की माफी को जानती है,
सुबह की शोभा भगवान को अपनाना है, क्योंकि मनुष्य उसे देखते वक्त आश्चर्य हो जायेंगे।

प्रातःकाल की सुंदरता, प्यारे भगवान के अनुग्रह से चेहरा चमकती है।

भूमी की समृद्धि

भूमि की समृध्दि मनुष्य की इच्छा के अनुसार प्राप्त होगी।
भूमी का संपत्ति– उचित रूप में सही लोगों की अनुसरण करेगी।
बलवान के लिये – धनवाना के लिए
लालची लोगों के लिए – धैर्य सहित काम करनेवालों के लिये
ज्यादा तरह दुष्ट लोगों के साथ रहती है
भूमि की संपत्ति –बलवान, शक्ति सहित लोगों को पहुंचेगी,
धैर्य वान और ध्यान से रहनेवालो को,
खींचकर लेनेवाले को और सागर के चोरों को
दूसरों की भलाई करनेवालों को और चालक लोगों को,
घृणास्पद व्यवहार से रहने वालों को और गहराई से विचार करनेवालों को पहुंचेगी।
भूमि की समृध्दि जो है, कष्ट में रहने वालों की तथा व्यर्थ लोगों को न पहुंचेगी,
अशक्त लोगों को, असमर्थ लोगों को,
खुशी न होनेवालों की और आशावह न होनेवालों की
बुद्धिहीन लोगों को और अलग की गयी लोगों को,
नाश करने वाले को और इच्छा रखने वालो को प्राप्त नहीं होगी।
भूमी की संपत्ति – मनुष्य की खर्च करने की तरीके को जाँच करेगी।
–अंदाजा न हुई कार्यक्रम के आगे देख–रेखा को परिशीलन करेगी,
जरूरी न आने के पहले ही, छुपा के रखे
जगहों में रखने के विषय को परिशीलन करेगी।
भूमि की समृध्दि, हर एक जरूरी को भी पूरा करेगी।
उचित स्थान में दूकान को रखेगी,
हमेशा उसे सन्नद्ध कर रखेगी,
उसे उपयोग करने केलिये सही रूप में रखेगी,
उचित काम–काज के लिए दूकान को तय करेगी,
दुकानों को मनुष्य का एक वंशानुक्रम की संपत्ति जैसे रखेगी।
मनुष्य के खाना में भाग बंटती है ।
उसे पहचानने की शक्ति को बंटती है ।

उसे ठंडा करने की शकित से रहेंगी
उसे गरम करने को शक्ति भी होती है,
हाथों से इस्तेमाल करने की वजह से प्रकाश करने की ताकत रहती है।
व्यापार के लिये उन चीजों को सन्नद्ध करने की शक्ति होती है।
धरती पर रह गयी संपत्ति, ऊपर की ओर दिखाने की शक्ति सहित रसायन रहेंगी।
मिलने केलिये और मापन करने की योग्य रसायन,
कलाखंड केलिये जरूरी रसायन,
तारों के लिए,
चंद्र के लिए,
मनुष्य की ज्ञात ग्रह के लिए जो जरूरी है, वे मिलेगी।
धरती पर रही संपत्ति, निग्रह शक्ति से भरे मानव मेथ केलिये काम आती है।
भगवान की ज्ञान की वजह से ग्रहित ज्ञान से परिष्कार दिखाने के काम में आयेगी।
जरूरत पडे तो उचित सच अभिप्राय के साथ काम कर सकती है।
अंतर दृष्टी सहित निर्मित कार्यक्रम
परिस्थितियों के कारण तुरंतु बदल जा सकती है
मनुष्य की आलोचनाओं से, मनुष्य से निर्धारित विषय, धरती की संपत्ति मनुष्य की जरूरतों के लिये काफी है।
इस संसार की ध्वनी बहुत सुनाते वक्त, भगवान की इच्छानुसार होनेवाले एक कार्यक्रम के साथ हो जायेगी।
धरती की संपत्ति मनुष्य को दिन भर के लिये काफी है,
मनुष्य की इच्छाओं को,
मनुष्य की अभिवृद्धि के लिये काफी है।
धरती पर समृद्धि जो है
मनुष्य की अंत अनेक, पूरे होने तक काफी है।
तब सभी फिर मूल्यांकन की जायेगी।

अंत्यकाल में मेरी आत्मा की कमियाँ

मनुष्य की सन्नद में उपेक्षा की गयी अवकाश आत्मा की अंत्यकाल की कमियों के रूप में दिखता है।
वादा से संबंधित ध्यान नहीं रहे मौके को
रिश्ते नाते के बारे में ध्यान नहीं दिये गये मौकें को
मंजिल को चुनने में ध्यान नहीं दिये गये मौका को
हिस्से के बारे में ध्यान नहीं दिये गये मौका
धीरे–धीरे प्रेरित होने में ध्यान नहीं दिये गये मौका दिखेगा।
सभी जातियों में,
सभी संस्कृतियों में,
सभी वर्गों में से दिखेगा।
अविश्वास के द्वारा,
असंपूर्ण विश्वास के द्वारा,
विश्वास की कमी के द्वारा दिखते है।
अंत्यकाल की आत्मा की कमियाँ हर एक पूरी हो जायेगी।
मन की बदलाव से पूरी हो जाती हैं।
पूर्ण बंधन के वजह से पूरी हो जाती हैं।
एक गवाही के द्वारा पूरा हो जायेगा।
अंत्यकाल की आत्मा की कमियाँ, रास्ता छोडकर घूमने की आत्मा की आवाहन को पूरी करने का और एक रहेगी।
मदद् के लिए करनेवाले आर्तनाद को पाप की गुलामी से बचाने में रहेंगे।
अंत्यकाल की मेरी आत्मा का कमियाँ जो है, धरती भर मनुष्य की रक्षा केलिये समृद्धि दिलाने को रहेगी।
अंत्यकाल की आत्मा की कमियाँ, आत्मा के लिए, जीव के लिए एक मंदिर का सृजन करने की उचित आह्वान प्राप्त है।
उसमें मेरी आत्मा मनुष्य के साथ रहने केलिये
एक संबंध को ले आने केलिये
जीव ग्रंथ में लिखने को, उचित लक्षण रहने की आह्वान मिलेगी।
धरती पर बलवान व्यक्ति से, अंत्यकाल में मेरी आत्मा की कमियाँ हिला जाती हैं।
व्यतिरेक दूताओं के वजह से,

आत्मा को पारकर उसके पहले की स्थिति को जाने के लिये मनुष्य के सहयोग अंगीकार के लिए,

खाली घर का

उस मुख्य प्रदेश को उनको आह्वान देने आह्वानित करने की आशा से इंतजार कर रही भगवान के प्रेम से, वे बदल जायेंगे।

अंत्यकाल में मेरी आत्मा की कमियों को कालांत के अंदर ही अदृश्य होना चाहिए। कालांत के बाद वे नाश नहीं हो जायेंगी।

अंत्यकाल में मेरी आत्मा की कमियाँ भर्ती होते वक्त, भूत की कामों को रोक सकता है।

शैतान की बडे आयोजनों को

गलती की गयी लोगों की निरीक्षण को बदलेगा।

अंत्यकाल की आत्मा की कमियाँ जो है मनुष्य को सन्नद्ध देने के बारे में बात करेगा।

मनुष्य परिशुद्ध संभव को सन्नद्ध करने का कृपा दिखाने को

भगवान के पालन कमरे से आनेवाली खबर को जानने केलिए,

कोई भी नाश नहीं होने की सूचनायें

मनुष्य की आत्मा को बंद करकी, उसके आत्मा की मृत्यु को चाहते हुए रहने की दशा का रोकने की सूचना के लिए

अंत्यकाल की आत्मा की कमियाँ सुधार होकर, बहुत खुशी से हर एक मनुष्य को एक मंदिर के रूप में करने के लिये जीव ग्रंथ में नाम लिखाना चाहिए।

सजीव भगवान से अच्छे नाते को रख कर, रहने के लिये तैयार की गयी।

अंत्यकाल में समय से संबंधित ज्ञान

काल की सूचना न होते वक्त, काम, सफल एक दूसरे से संबंधित नहीं रहेगा।

उसमें किसी एक रूप में देख सकते हैं।

नाटक का रचयिता रचित क्षेत्र के उचित तरीके में आधारित होकर देख सकते हैं।

सफल चाहिए, इसलिए, वास्तव की अस्थित्व में कारण को इकट्टा करना है।

कारण होना है, इसलिए, वास्तव की अस्थित्व में सफलता की आशा करना है।

क्रम की प्रधान्यता रहे तो, पहला व्यक्ति, आखरी व्यक्ति हो जाएगा, और आखरी व्यक्ति पहला भी हो जायेगा।

सृष्टि में ''मैं हूँ'' शब्द ही पहला और अंत भी है।

अल्फा और ओमेगा

प्रारंभ और अंत

इसीलिए वह मनुष्य के समय से ज्यादा काम जिंदा रहेगा।

गगन भगवान की महिमा को सुनाते वक्त, उसी क्रम में अनेक विषय गुजार चलेगा।

उसी तरह शाश्वत जो है उसे ग्रहण करने की तरह यानी वास्तविक रूप में इस जिंदगी की उचित दीनत्व से ग्रहण कर रहना चाहिए।

धरती पर रही संस्कृतियों को ऊपर की संस्कृतियाँ बहुत भिन्न है। समझौते से उन्हे काफी रखने की कोशिश करते वक्त, इस जीवन पद्धति को इस संसार की आचरण से ऊपर केसंसार की संस्कृति से सहमति नहीं कर सकते।

अतः सात मुद्राओं से अनुसंधान की गयी कार्यक्रम,

सात बर्तनों को उपादित की गयी कार्य,

सात दूताओं से किये गये कार्य, मनुष्य को जानने की तरहए स्वर्ग में नहीं हो सकता।

फिर भी मनुष्य धरती पर रहते ही, मेरे संदेश के द्वारा उनकी समझौता के लिए वर्णन की गयी है।

अंत्यकाल में मेरी जनता का दर्शन

मेरा जनता के दर्शन, कारण के बिना नहीं है।
भगवान की अस्थित्व से उनकी रचना होनी चाहिए।
मेरी जनता का मूल्यवान दर्शन – प्रोत्साहित करने को
पवित्र होने को और गवाही के लिए है।
वे जिंदगी में परिवर्तन लाने को
एक आत्मा को एक सिसिले में रखने को
एक आत्मा को, ऊपर की दिशा में पकडने के लिए है।
वे मिट्टी में मिलजाने के लिए नहीं
एक स्मृति चिह्न पर रखने के लिए नहीं
अपेक्षा करके छोडने के लिए नहीं
वे हमेशा दिखने वाले नहीं
सब लोगों की ज्ञात नहीं
सिर्फ एक संदेश के लिए चुनी गयी नहीं।
वे उनको समझने के योग्य हैं ।
एक लिखित पूर्वक अभिलेख रह गयी है।
अभिवृद्धि मार्ग के उचित है।
विचार को लगाने के उचित है।
उत्तर के रूप मे एक प्रार्थना का उचित है।
वे आत्मीय विषय को, शारीर संबंध में बोलेगा।
भगवान की आवाज से बोलने की योग्य विषय
मनुष्य के स्वागत के कमरे से बात करेगा।
वे बदलते हुए मौके को व्यतिरेक दिशा में सोचने के उचित है।
मेरा संदेशानुसार स्वीकृत होने का योग्य है
कृपा के स्थान में स्वीकृत करने के योग्य है।

वे भगवान की विशालता को मानव को लानेवाले ही है।

एक अंत्यकाल के संदेश को विवरण पूर्ण से लायेगी।

भगवान के चित्त पर एकीकृत होने का ध्यान देगी।

अंत्यकाल में मेरा जनता के दर्शन, बादल से भरी

ऋतु के लिए सुरक्षित रखे गये।

आनेवाले अंतिम दिनों से वर्षा के लिए अनेक उपदेश इकट्टा हो जायेंग।

अंत्यकाल में सन्नद्ध रहने के लिए संरक्षित रखा गयी है।

मैं अपने वधु संघ के मूल्यों को स्थायी रखने केलिये अंत्यकाल में मेरी जनता की दर्शन स्थायी हो जाएगा।

मेरे लौटकर आने में जो मूल्य रहे,

उनके राज्य पालन के मूल्य को

सन्नद्ध की गयी उस दूताओं को मूल्य को

पिता के अंगीकार से संबंधित मूल्य को

पुत्र की सन्नद्ध से आनेवाले मूल्य को

मनुष्य की कमियों की आत्माओं के लिए मेरी आत्मा का सन्नद्ध के मूल्य को स्थायी की जायेगी।

मेरी जनता की शक्ति

मेरी जनता की शक्ति को उन्नति अभिवृद्धि होनी चाहिए
तुरंतु हिलाने को तैयार रहना चाहिए
ईसा के साथ पालन करने के लिये जरूरी होनेवाली शक्ति को बढानी चाहिए।
मेरी जनता की शक्ति सिर्फ प्रकाशित मात्र नहीं है।
वह सत्य और सन्नद्ध है
वह स्थिर और निश्चय है
वह समझौता तो सकती और मूल्यवान भी है ।
मेरी प्रजा की शक्ति, नीति युक्त और चलानेवाली है
वह क्रम सहित है और श्रम करनेवाली है
वह सहनशील है और छोडनेवाली है
वह नई तरह शुरु होनेवाली है और न्याय सहित है।
मेरी जनता की शक्ति सभी तरीके से सोचनेवाली और कानून से जुडी हुई है ।
सूचित करनेवाली है और स्थायी होनेवाली है।
मदद् करनेवाली और मदद् होनेवाली है
बहुत व्याकुल और पवित्र है।
मेरी प्रजा की शक्ति स्थिर होगा और विभाजन करेगी।
बुलायेगी और निर्णय करेगी
प्रश्न पूचेगी और स्थिर करेगी।
सुनेगी और दूसरों के बतायेगी।
मेरी जनता की शक्ति भगवान के हृदय से आयेगी
भगवान की महिमा को मजबूत करेगी।
भगवान की जाननेवाली एक राज्य की प्रतिष्टा को बढायेगी।
मेरा प्रजा की शक्ति को बुरायी से संबंधी कोई उद्धेश्य नहीं है।
भगवान को मालूम हुए बिना कोई भी प्रणालि नहीं रहती है
पाप से संबंधित लक्षणों से संबंध नहीं रहेगी।
मेरा जनता की शक्ति आशिर्वाद और भगवान से स्थिर है।
भगवान की सिंहासन की जगह से प्राप्त हुई है
मनुष्य के प्रति भगवान को जो प्यार है वह बढती है ।

मेरी प्रजा की शक्ति एक ही रह गयी। इतना ही नहीं स्थिर रह गयी है।
वह बहुत गहराई विचार भरे से हैं और शांत दिलायेगी।
अधीकृत है और शक्ति को खो जाती है ।
इकट्टा होने केलिये की और विचार सहित रहेगी।
मेरी प्रजा की शक्ति जो है अंदर घुसकर जायेगी और शांत रहेगी।
केन्द्रीकृत रहेगी और उडेगी ।
निर्माण करेगी और उन्नति की प्राप्ति होगी।
टुकडा करेगी और मिलायेगी ।
मेरी प्रजा की शक्ति जो है चारों ओर व्याप्त होती है और मिलायेगी ।
निर्माण करेगी और चटक जायेगी।
मेरा मानकर पूछती है और मेरा नहीं बोलकर छोड देती है।
चारों ओर रहेगी और संभालेगी।
मेरी प्रजा की शक्ति जो है वह जायेगी और गायब होकर फेंक देगी।
आश्वासन देती है और मजबूत करती है।
जबरदस्त बनायेगी और ठीक कर देगी ।
जगह में फ़ेलाता है और खाली करेगी।
मेरी प्रजा की शक्ति कभी कभी प्रवेश करेगी और पीछे आजायेगी।
जरूरी के कारण
भगवान की इच्छानुसार, वैसे हो जायेगी।
मेरी प्रजा की शक्ति जो है अनेक शताब्दियों से इंतजार करनेवाली है ।
वह भगवान की वादा के वजह से आयेगी।
लक्ष्य में हुआ रहनेवाले प्रकाश को सन्नद्ध करने के कारण रहेगी।
मेरी प्रजा की शक्ति जो है सृष्टी से संबंधित करचालन जैसे है।
वह अपनी भगवान की अस्थित्व को जानती हैं।
वधु संघ की शादी में, पवित्र लोगों के समूह में इस्तेमाल किया गया पुत्र के स्वास्थ्य को जानता है।

अंत्यकाल का घूँघट की परदा

घूँघट की परदा शताब्दियों से अपनी स्थान में थी।

भगवान के आश्चर्य कार्य को बचाने को,

उन्हे मुक्ति करने तक सुरक्षित रखने को वहाँ रहेगी।

आँखों की पलके आँखों पर पूरी तरह बंद कर रखने की तरह यह घूँघट की परदा रहती है।

आत्मा की किडिकियों पर डाली गयी परदा की तरह रोशनी को प्रसार न होने की अंधेरी की तरह है।

एक रंगमंच पर रही अंधेरी को थोडी–थोडी मुक्त करने की तरह, परदे को निकालने की तरह निकाल सकते हैं।

एक अश्व के ऊपर से प्रकाश को भेजने की तरह, उसको मौका दे सकते हैं।

एक घर की छप्पर पर रह गयी आकाशदीप जैसे मौका दे सकते हैं।

एक कुएँ में नीचे भाग से मौका होने की तरह है।

एक टेलिस्कोप तंग गली से मौका होने की तरह है।

इस घूँघट की परदा – मनुष्य की उद्धेश्य को नियंत्रण में लायेगी।

और एक राज्य केलिये इंतजार करने की सुझाव को नियंत्रण में रखेगी।

धुआँ से रही परदे पर धुआ को नियंत्रण में रखेगी।

बरफ से रही दिन में धुंआ वह नियंत्रण करेगी।

बहुत बरफ की सुबह सूर्य के लिए इंतजार करते हुए बरफ को नियंत्रण करेगी।

घूँघट की परदा के कारण बाहर लाने को सन्नद्ध करते हैं।

पिता की अंगीकार रहेगी।

पुत्र की अंगीकार रहेगी।

उस घूँघट को हिलाने में, आत्मा को सन्नद्ध करने में, स्थिर रखने को, तैयार रहेगी।

घूँघट की परदा, मनुष्य के ज्ञान केलिये प्रकाश और, आवाज दोनों मिलाके एक ही बार हिलने की तरह, की गयी।

भगवान की इच्छानुसार हिलाने के मानव के मन को एक कांति पुंज की तरह, इस घूँघट की परदा रहेगी।

इस घूँघट की परदा जो है कार्यक्रम में हिलनेवाली और चलनेवाली है। वह छोडने को सन्नद्ध की गयी है।

अंत्यकाल की सूचना के लिए उसे परिवर्तन करना ही है।

अंत्यकाल के आगमन के लिए

प्रभु अंत्यकाल में आरोहण होने के लिये वह तय की गयी है।

अंत्यकाल में भगवाल की शक्ति

अंत्यकाल में भगवान की शक्ति अपने आपको इस्तेमाल करने के लिए ही नहीं।
भगवान मनुष्य को ध्यान से देखने केलिये ही नहीं।
वह बुराई पर नजर डालने केलिये ही परिमित नहीं है।
कृपा को प्रकटित करने को ही परिमित नहीं।
अब से धरती पर ही परिमित होनवाली नहीं हैं।
उनका राज्य अयेगी, इसीलिए इतना ही नहीं
पिता, पुत्र ही परिमित से नही रहते है।
अंत्यकाल भगवान की शक्ति सभी को देखने को बहिर्गत करना है।
सभी को सुनाते हुए बहिर्गत करना है।
सभी को जानने केलिये बहिर्गत करना है।
अंत्यकाल में भगवान की शक्ति, भगवान के क्रोध को मनुष्य पर न डालती है।
कृपा दिखाने के द्वारा मनुष्य पर क्रोध न डालती है।
चारों ओर व्याप्त हुई गवाहों द्वारा, भगवान के।
क्रोध को मिटो देगा।
अकल से उसे काठ कर देगी।
विश्वास में रहनेवालों पर क्रोध को न आने देती है।
भगवान के समक्ष में मूर्तियों के वश में रहनेवालों के ऊपर नहीं आने देती है।

अंत्यकाल की भगवान की ताकत ऐसे लोगों को, अपनी समाधियों को ले जाएगी।

गलती करने वाके मंजिल की ओर इकट्ठा करेगी।
दूसरी मृत्यु की ओर इकट्ठा करेगी।
मन बदलाव के बिना होनवालों को नाश की ओर ले जायेगी।
नए अधिनियम से दूर करके, नाश को सैंपेगी।

अंत्यकाल की भगवान की शक्ति जो है पकड कर नाश करेगी।
सन्नद्ध करके बचाएगी।
न्याय दिखाकर पवित्र करेगी।
अंत्यकाल की भगवान की शक्ति में पाप विमोचना होकरए फिर शक्ति देगी।
बुलाएगी, स्वागत करेगी।
उन्हें काम में लगायेगी और करेगी।

अंत्यकाल की भगवान की शक्ति सहमत है और गौरव भी देती है।
पुरस्कार देगी, सीमाओं में रखेगी।
अंदर लायेगी और सुरक्षित रखेगी।
अंत्यकाल की भगवान की शक्ति – जीव ग्रन्थ में जिन व्यक्तियों के नाम रहे उन के लिए भगवान की गद्धी रहनेवाली जगह को तय करेगी।

अंत्यकाल में मनुष्य की मर्त्यता

अंत्यकाल के मनुष्य की मर्त्यता इतिहास में एक खास घाट की तरह देखती है।
इतिहास जो है भगवान से फिर होने की तरह देखती है।
इतिहास को नित्यजीव तक जाने की तरह देखना है।
अंत्यकाल मनुष्य की मर्त्यता जो है शाश्वत जीव को ले जायेगी।
भगवान के सामने पहुँचने के मार्ग को खुलेगी।
नरक के द्वार को खुलेगी।
अंत्यकाल में मनुष्य की मर्त्यता, भगवान परिशुद्धों को, आत्मा को खोजाने वालों से, जीव को खोजानेवालों से, शरीर को भी खोजानेवालों को पकडेगी।
अंत्यकाल के मानव की मर्त्यता – सन्नद्ध होने के समय में है।
तत्काल भय को दबाकर, मृत्यु न होने के लिए,
नये जीवन की नयी मापन सहित ज्ञान को जिंदगी में होने को,
गगन और ताराओं को मित्र बनकर नये विषय को पकडने केलिये
हो गयी और होनेवाला जो अंशों से वर्तमान जो है
दी गयी भविष्यत कार्यक्रमों से ठीक तुलना करके
उनसे मिलने को दिया गया एक मौका को।
आजकन की पद्धतियों को ग्रहण कर समयानुसार ग्रहित पद्धतियों को,
मनुष्य की अस्थित्व से संबंधित वातावरण को स्थापित कर
भगवान के परिवार में एक सभ्य की तरह मनुष्य रहने को है।
अंत्याकाल में मर्त्यता जो है भगवान की रास्ताओं को खोजने के लिए सूचनाओं से ही है।
विश्वास के द्वारा नित्य होनेवालों को, काल क्रम में मार्ग से,
विछलित वालों को ग्रहण करने को समझौता बढाने को, मूलाधार है।
मनुष्य को आनेवाली अनुभवों को संबंधित मूलधार,
भगवान की अद्‌भुतों से गिर गयी मूलाधार,
बदलगयी मानव की परिस्थितियों के मूलाधार,
शक्ति और आधार दिखाने की आधार है,
कितने भी यातायात करके मनुष्य की विचार ग्रहण करने की आधार ही है।

अंत्यकाल में मनुष्य की मर्त्यता स्वाभाव जो है वर्तमान में उसके रहने पर प्रभाव रहता है।

वह चुनने की तरह मंजिल पर प्रकाश या अंधेरी आने देती है।

भेडों को उत्तर देगी।

बकरों की रक्षण संबंधी ज्ञान देगी।

अविश्वासों को विश्वास दिलायेगी।

विषय न प्राप्त होनेवालों को, पूरी निबद्धता देगी।

अंत्यकाल में मनुष्य की मर्त्य स्वभाव –

हर जगह समृध्दि कृपा को देती है।

पहले ही रहनेवाली कृपा देती है।

युगांत के पहले, सन्नद्ध हुए लोगों की दी गयी वादा, पकडकर कृपा के पात्र करेगी।

मानव की अंत्यकाल की मर्त्यता जो है एक सिंहद्वार की तरह नजदीक होगी।

एक नये आरंभ की तरह नजदीक होगी।

समयानुसार नजदीक होगी।

दो राज्यों की चाबियों को, अपनी पुत्र को पितासे दी गयी चाबियों को होकर नजदीक होगी। यानी वह परलोक मार्ग को खोलने को या नरक के मार्ग को दिखाने को खोल जायेगी।

मनुष्य की स्वेच्चा सहित उद्धेश्य जो है गौरव प्राप्त करने को या मर्यादापूर्वक होने को नजदीक होगी।

अंत्यकाल मर्त्यता जो है, अंत्यकाल की फसल को व्याप्त करेगी।

इंतजार कर रही आधुनिक परिशुध्दों को समावेश करेगी।

प्रभु ईसा के प्रकाश के लिये अपनी आत्मा को तय करके स्वागत करेगी।

अंत्यकाल में फेंके हुए जाल

अंत्यकाल का जाल फेंकना जो है अत्यावश्यक सीढी होकर रही है।
बुलावा के अंत की जानकारी देनेवाली सीढी।
मनुष्य की आधिक्य निर्णय को ठीक करने की उचित सीडी हैं।
अंत्यकाल का जाल फेंकना जो है
सरक जाने वाले नीचे गिर जाने की तरह,
असमर्थ व्यक्ति तारे को तीक्षण देखने की तरह,
माँस खानेवाला धरती पर धान को झाडने की तरह
आलसी लोगों को बहुत कम स्थान में पोषण करने के यात्रिकों को तेजी से अपनी रास्ते पर जाने की तरह करेगा।
अपने जगहों में रहनेवालों को इकट्ठा करेगा।
अपनी जिंदगी में परिवर्तन चाहने वाले लोगों के लिए आशा रख कर,
और बडी जीवन हक् को चाहनेवालों को इकट्ठा करना।
अंत्यकाल की जाल फेंकना जो है, वह चाहनेवालों
को, उसके ध्यान में रहनेवालों को इकट्ठा करेगा।
खुशी से त्योहार की वातावरण में रहनेवालों को
खुशी लोग और दुःखद लोगों को
गलती करनेवालों को और खल नायक को
गंदे कपडेवालों, और शुध्द कपडे वालों को,
नायक के पीछे जानेवालों को और नायक को भी इकट्ठा करेगा।
हमेशा शाप देनेवाले को और अनुमान व्यक्ति,
पापी और परिशुध्द व्यक्ति
बिना धर्मवाला और धर्म सहित व्यक्ति
मूर्तियों की पूजा करनेवाले और भोले व्यक्तियों को,
खुशी से रहगयी व्यक्ति और घमंड व्यक्ति,
घूमनेवाला और घाव हुआ व्यक्ति, सभी को इकट्ठा करेगा।
वह जीवजल देती है।
राजाओं का राजा, राजा के राजा को एक भूमिका,
दृढ निर्णय करने के लिए निज व्यक्ति को इच्छा रहती,
आज को मनुष्य को बंधनों से पकडने की स्थिती।

जनता को वह भगवान की सच्ची स्वरूप को दिखाएगी।

आत्मा को ताजा आहार देना

अंतरंग को अच्ची विचार देना

शरीर को अच्ची सावधानी देना उसकी काम है।

वह–प्यार से हुया कार्य है

मनुष्य से प्रशंसा नहीं चाहती

सभी को एक उन्नत स्थायी को उठायेगी।

वह–आत्मा की भूख को मिटाता है ।

अंतरंग के प्यास को पूरा करेगी।

अंदर जो है उसे निरिक्षण करेगी।

अंत्यकाल का जाल डालना जो है उत्तर बताएगी और उत्तर को दिलायोगी।

रोकेगी और खुलेगी

बहिर्गत करेगी और बदलायोगी

रूप देगी और रूप के लिए बनेगी।

निर्माण करेगी और दृढ से खडा रखेगी

सहकार देगी और बोध करेगी

अंत्यकाल जाल डालना जो है नयी पेशाओं से काफी होने की तरह आत्मा को सन्नद्ध करेगी।

मनुष्य के अंतरंग को चलाने के लिए आत्म को

सन्नद्ध करेगी।

मनुष्य की आत्मा को भगवान की आत्मा से मिलाने केलिये सही विधान में सन्नध्द करेगी।

समाधी से रूपांतर प्राप्त करने की तरह मनुष्य को शरीर को सन्नद्ध करेगी।

वह – सत्य संबंधी ज्ञान को पाने की इच्छा को ले जायेगी।

भगवान से संबंध साधित करने को

समाधी के बाद सच्ची जिंदगी को पाने केलिये तैयार रखेगी ।

वह – भगवान की सहज सिद्ध प्यार को सन्नद्ध करेगी।

अंत्यकाल जाल डालना जो है भगवान के परिवार को अपना लेने के लिए जरूरी प्रतिस्पंदना के लिए बलावा देगी।

अंत्यकाल में प्रभु की इच्छा

अंत्यकाल प्रभु की इच्छा जो है – वहे धरती को सींचती है ।

जल्दी नये जीवन को लाने केलिये,

जल्दी ही रोगिस्थान और निरूपयोग धरतियों को फल भरित करने की इरादा है ।

वह –प्रभु की विजय सुनाद है

– कृपा सिद्ध समय है

– आनंद से भरी बडी आवाज है

– देवताओं की चिल्लाहट

– आत्मा की सुगंध

– पिता का प्रमाण

– भगवान के बच्चों पर बरसाता है।

अंत्यकाल के भगवान की इच्छा जो है – उनके पुरागमन को व्याप्त करके आयेगी।

उनकी स्थायी को बढायेगी।

उनकी अस्थित्व को बडी स्थायी को ले जायेगी।

उनकी प्रतिष्टा पर निर्माण होगा।

जयशील हुए बादलों पर वधु संघ को उठाकर पकडेगा।

बहुत ऊपर तक षालेमु को पहुँचाती है ।

अंत्यकाल के प्रभु की इच्छा जो है, परिशुद्धों का विशेषता को बदल देती है।

परिशुद्ध व्यक्तियों की विश्वास को गौरव देगी।

परिशुद्ध व्यक्तियों की दृश्य को बढायोगी।

मनुष्य को दी गयी बुलाओं को सुनायेगी।

मनुष्य से भगवान का यात्रा आगे बढेयेगी।

वह–पिता की स्वास्थ्य को ले जायेगी।

आत्मा की समग्रता को,

भगवान के पुत्र के धरती पर आने की आगमन को तेजी करेगी।

वह – स्थापित करेगी और परिशुद्ध भी करेगी

आनंदित होगी और प्रकटित करेगी।

प्रकटित करेगी और अधिकार से बोलेगी।

अंत्यकाल में प्रभु की इच्छा – धरती पर सफेद घोडे पर आनेवाले व्यक्ति को देखेगी।

चुनने के लिए दिये गये तीरकमान को देखेगी।
हृदय की जरूरी प्रसंगों की संपूर्ती को देखेगी।
अंत्यकाल के प्रभु की इच्छा जो है मनुष्य की शक्ति कों पार करके, समभाक्तव प्राप्त करेगी।
मकुट नीचे उतार ने की स्थिति को देखेगी।
हर एक अपनी अंत्यकाल सुंदरता के लिए,
धरती को सुंदर बनाने के व्यक्ति के सामने की विवाह की वधु की तरह खडे होने का दृश्थ को देखेगी।
वह – धरती को फिर स्थायी सुंदरता से सजाती है ।
फिर भरेगी और ठीक करेगी।
चीजों को नवीनता में ले आयेगी।
विरोध भाव मिटा करके स्वीकारता ले आयेगी।
तक्लीफ की दशा से माफ करने की दिशा को ले जायेगी।
मनुष्य के लिए भगवान को अपने सिंहासन पर रहने देती है ।
भगवान के साथ उनके बगीचे के अंदर मनुष्य को ले जायेगी।
नीति और शांति के साथ मित्रता लायेगा ।
अंत्यकाल के प्रभु की इच्छा शैतान से विमुक्त करके, ऊंचे स्थान पर ले जायेगी।

अंत्यकाल में मनुष्य का फैसला

अंत्यकाल में मनुष्य की निर्णयात्मकता जो है धरती पर और धरती भर उनके अस्तित्व के बारे में बोलेगी।

शारीरिक रूप से और आत्मा में भी,

इस जमाने के विधान में और आध्यात्मिकता में उनकी अस्थित्व के बारे में जानकारी देगी।

वह – उनका बल की परीक्षा करेगा।

उनका सन्नद्धता के बारे में,

पूरी तरह स्वतंत्रता के कारण उनका मानसिक स्थिति की परीक्षा करेगी।

वह – उसके ज्ञान से बद्ध होने केलिये

दूसरों की मार्गें को बद्ध होन को,

भागवान के मार्गों के बारे में बात करेगी।

वह –शैतान के पाप और कष्टों को दिखाती है ।

भूतों की गलतीयों को मिला सकती है।

भूतों की गलतियों को बहिर्गत कर सकता है।

अंत्यकाल में मनुष्य का निर्णय जो है वह मनुष्य की अधीन में रहेगा।

शैतान की अधीन में,

भगवान की अधीन में रह सकते है।

अंत्यकाल में मनुष्य का निर्णय जो है – भगवान की महिमा के लिए ही रहेगी।

भगवान से जाने को उचित रूप में चलना चाहिए।

भगवान से परिशुद्ध रहने की सुविधा होनी चाहिए।

वह– भगवान के विचार शक्ति को उचित तरीके में निर्णय नहीं हुए तो अुसविधा होगी।

भगवान की ज्ञान से कमी हो या,

इस जीवन में भगवान की प्रत्यक्षता के बिना, रहना नही होगा।

अंत्यकाल के मनुष्य का निश्चय जो है, मानव के अंत्यकाल में जितना चाहिए उतना ज्ञान नहीं रहे तो बहुत नुक्सान होगा ।

अंत्यकाल के चिह्नों को ग्रहण करके, सन्नद्ध न होना जो है वही रहेगा।

उनका इंसाफ देते समय मनुष्य भयानक कष्टों को सामने करने के लिए भविष्य भावना न होती है ।

अंत्यकाल में मनुष्य का फैसला जो है – वह मनुष्य के छे (6) प्रकार के गतिविधियों को संभालने की ज्ञान से,

हर एक की ज्ञान, वह नाश होने की स्थिति निग्रह रहता है।

द्वार के पास खडे हुए व्यक्ति की नाच संभालने को उनका इंसाफ करते वक्त

जो अपने आप को कंपित होते हैं

अपनी निर्लक्ष्यता के कारण होनेवाले परिणामों को कौन विचार करते हैं,

सिर्फ पाप में ही रहकर कौन मर जाते हैं उनको

उस निर्णय के अनुसार संभव होगी।

मनुष्य की निर्णयात्मकता जो है – पवित्र लोग, और दैविक लोगों को ढूंढना है।

आशीर्वाद पानेवाले और नीति मान लोगे

सत्य पंथा में चलनेवाले लोग और जो लोग आत्मा में रोषनी भरे लोग ।

जीव ग्रंथ में प्रवेश करने के लिये शांती निवास करने की तरह,

जो भगवान से बाँधे हुए स्थिति को प्रकटित करेगी,

स्वर्ग के प्रभु को, स्वर्ग को, धरती को भी मैं ही हाँ करके बोलने वालों के बारे में प्रकटित करेगा,

वह उसी जीवन को चाहता है।

अंत्यकाल में भगवान की परिशुद्धता (२)

भगवान की परिशुध्दता जो है वह बहुत सावधान रहेगी
संतृप्त होकर रोकनेवाली नहीं।
जिस जगह उसे गौरव नहीं है उससे संबंध नही रखेगी।
हृदय में भय नही तो ज्ञान से सिखाने की कोशिश नहीं करेगी।
भगवान की परिशुद्धता–शांति से प्रकटित होगी।
प्रभु के लिए इंतजार करनेवाले को जानकारी होगी।
एक मेज पर बिछा हुआ सफेद पेशक की
तरह आत्मा के साथ रहेगी।
भगवान की परिशुध्दता–वह पीछे नहीं रहेंगी ।
वह घुसकर नहीं जायेगी।
शिष्टता से भरे नीतिवान उसे पहुंचते है।
भगवान को जाननेवाले उसे पहुंचते है।
एक गहराई संबंध रही तो उसे पहुंचते है।

भगवान की परिशुद्धता – किस प्रकार से करने पर भी मानव के पापें को ध्यान देगी।
दैव पीठ पर क्या भी क्यों न आये उससे श्रद्धा रखेगी।

भगवान की परिशुद्धता जो है – आत्मा त्याग को जानती है।
आत्म त्याग केलिये पुरस्कार देगी।
आत्म त्याग को पूरी करने के लिए जिस प्यार की जरूरत है उसे समझ सकती है।
मनुष्य परिपूर्ण नहीं रहें तो उनमें छपी हुई रहस्य को जानती है।
अपमान होनवालों को भी जानते हैं।
पुरस्कार ले आनेवाले को भी जानते हैं।

भगवान के पुत्र के बगीचे में काम करने की योग्यता को खो जानेवाले सभी को जानती है।

भगवान की परिशुद्धता – मनुष्य पर रह गई रहगयी ओस को भी देख सकती है।
मनुष्य की धुँए की परदाओं के द्वारा
मनुष्यों की झूठों में देख सकती है।

मनुष्य अपनी बर्फ परतों में खडे रहते वक्त भगवान की परिशुद्धता नहीं पहुँचती है।

उनके धुँए के परत फैल जाते वक्त,

परिताप रहित झूठ के जंगल में पहुंचेगा।

भगवान की परिशुद्धता जो है – नये जन्म के जल से पवित्रता के लिए नहाने तक वह भक्ति की अभिनय करनेवालों को और बुद्धिहीन केलिए नहीं आयेगी।

भगवान की परिशुद्धता जो है सावधानी से मर्यादा पूर्वक पूछनेवाली नही।

जितना जानना है वह सब जानते हैं।

भूलेगा नहीं।

विश्वास सहित हृदय से इस होने में अनुकूल तथा

प्रतिकूलताओं को प्रकट करने में देरी नहीं करेगी।

मन के दर्द से चिल्लाने में,

गुस्से में जोर से चिल्लाने में,

धोखेबाजी के बारे में छोटी सी आवाज की

मेरी आत्मा की ताकत से, संपूर्ण बल से बोलनेवाले मूँह की बात को निर्लक्ष्य करेगी।

मनुष्य पूर्ण रूप से सन्नद्ध की गयी स्थिति में भगवान की परिशुध्दता स्थिर रहेगी।

आत्मा की सन्नद्धता में,

उसका अंतरंग संसिद्ध रहे तो

शरीर संसिद्ध रहकर ठीक तरह से रहे तो

भय से, सावधानी से, ठीक तरह से संबंध रखकर रहते हैं।

भगवान की इच्छानुसार अंगीकार प्राप्त हुए विषय से भगवान की परिशुद्धता सहमती रहती है।

जल्दीबाजी से बच जाना नहीं होगा।

अभी ही मनुष्य की जरूरतें जल्दी से जानकारी होनवाले विषय मालूम हुए हैं।

भगवान की परिशुद्धता स्थिर है, स्थिर रहेगी और स्थिर ही रहेगी।

कल, आज और हमेशा के लिये वह खडी रहेगी।
इसके पेहले गलतियाँ देखा है।
देख रहा है, देख सकेगा।
भगवान की परिशुद्धता जो है उसकी स्थाई को दिखायी।
अपनी सृष्टी के लिये
धरती पर रहने की स्थायी को बनायेगा।

रचनाकार बता रहा है :

(2) ऐसी (2) को रखे तो उसी नाम से और एक अध्याय इससे पहल है। भगवान की परिशुद्धता जो है उस किताब को भी देखिए। कागज 344 में यानी भगवान अपनी पुनः आगमन में ''आत्मा से बात करेंगे'' किताब भी देखिए। Website of the Lord में भी देख सकते है।

अंत्यकाल में मानब का आनंदोत्सव

अंत्यकाल में मानव का आनंदोत्सव – पुरस्कार कार्यक्रम है ।
वह सफलता से दी गयी नजरानाओं का कार्यक्रम।
मनुष्य की स्वतंत्रता को गौरव देने का कार्यक्रम।
अंत्यकाल मानव का आनंदोत्सव जो है कांटे किरीट पहने हुए राजा के समक्ष में होगी।
सूली को कील से मारा गया राजा
कृपा को बांटनेवाला राजा
भगवान और मानव के बीच सयोध्य देनेवाला राजा
मनुष्य के लिए जिंदगी को त्याग किया गया राजा के समक्ष में होगी।
अंत्यकाल के मानव का आनंदोत्सव – पिता हमें प्यार किया गाया त्यागशील पुत्र से होगा।
स्वेच्चा से करने की सत्य वर्तन की वजह से हुआ।
कृपा समृध्दि के द्वारा हुई न्याय की वजह से,
मेरी आत्म साक्षी के द्वारा हुई सुझाओं के कारण,
प्रवक्ताओं को दी गयी भगवान की पुरस्कार के द्वारा,
प्रेमपूर्ण भगवान से करनेवाली आत्मैक्य से हुई है।
अंत्यकाल में मानव की आनंदोत्सव जो है – भगवान अपने सेवकों पर दिया गया भगवान के महिमा को ध्यान देगी।
अपनी सेवकों पर दिखगई भगवान की प्रतिष्ट को देखेगी।
अपनी सेवकों से बाँटी गयी भगवान की स्वास्थ्य को,
अपनी सेवकों पर प्रकटित की गयी भगवान के प्यार को समझेगी ।
अंत्यकाल के मानव की आनंदोत्सव – पुरस्कार की संपूर्णता को,
ज्ञान की परिपूर्णता को,
अपनी स्वस्थ्य परिपूर्ण रूप से लाने केलिये,
जिंदगी की परिपूर्णता,
भगवान के घर में विश्वास के द्वारा, आनांदोत्सव में छपी हुई भगवान की परिपूर्ण अस्थित्व को देखेगा।
वह एक परिपूर्णता के लिये दी गयी वादा है।
सन्नध्द की गयी जगह को जाने के लिए खुला रखा द्वार है,
जाति के अंत के संबंधित रेखा है ।

मनुष्य के लिए बुलावा

जीवन गमन में कमाये मार्ग के द्वारा सन्नद्ध की गयी पुरस्कार,
सन्नद्ध की सूचनाएँ, झंडे के द्वारा घर का स्वागत करना है।
अंत्यकाल के मानव का आनंदोत्सव जो है – सभी मिलाकर एकता से प्रकटित होनेवाले पदक को देखती है ।

जीत से, तारे के बीच में उन्हें आविष्कृत करना।
अंत्यकाल के मानव का आनंदोत्सव जो है – भगवान पर विश्वास को स्वीकृत करेगी।

वधु संघ की प्रत्यक्षता को,
मनुष्य को दिये गये समय में भगवान के संध की स्थिति को दिखायेगी।

अंत्यकाल में भगवान की आधिक्यता

अंत्यकाल में भगवान की बढत – अपने परिशुद्ध लोगों के जीवन के द्वारा स्थिर होगी।

अंत्यकाल में भगवान की बढत – रेगिस्तान में रहनेवाले जनता के द्वारा उल्टा पल्टा की तरह भ्रमित होगी।

– पाप के पुरातन बल से विरोध करने पर भी वह ज्ञात होगा।
– उनके इच्चानुसार निर्मित होगी या खो जायेगी।
– परिशुद्धात्मा की स्थापन के कारण होगी।
– धरती पर फिर दृढ होगी।

– शैतान की राज्याधिकार समाप्त होकर, फिर से भगवान की बढत स्थपित होगी।

– मनुष्य की झूठे बाते बहिर्गत होकर रहते समय, धरती पर शैतान की अधिकार फिर से उमंग लेती है ।

– शताब्दियों के पालन में होनेवाली झूठें

एकता के लिए अनुसरण की गयी झूठ
भयंकर परिस्थितियों से भरे घर से की गयी खून के वादा के लिये
सहमत झूठ की ओर शैतान देखेगा।
अंत्यकाल में भगवान की बढत – मनुष्य की मूर्ति पूजा को पूछेंगी।
मनुष्य धरती पर, साथी लोने से की गयी पाप को,
दूसरों को दबा किया गया कार्य के अनुसार रहेगा ।
गुलाम करने को,
ठीक तरह से व्यवहार करने में होनेवाला भयानक वातावरण,
शक्तिमान लोगों की शक्ति को,
स्वार्थी लोगों की कुचक्रों को,
लालच लोगों के वन को,
चोटे लोगों को नाश करना,
दुश्मनी आने की तरह निर्वाह करेगी।

अंत्यकाल में भगवान की बढत – नीतिवान लोगों को गौरव देना,
समग्र न्याय को,
एक महान राज्य को स्थापित करने को वे देखेंगे।
अंत्यकाल में भगवान की बढत में – झूठ गायब हो जाती हैं।

सत्य स्थापित होगी।
जन जीवन के परिसर में बढिया लक्षणों को सूचित करेगी।
परिशुद्ध लोगों के परिसरों में बढ़िया लक्षणों को सूचित करेगा।
डरजानेवालों को धैर्य, कायर लोगों को डर लायेगी।

वह–ठीक करेगी, साबित करेगी,

– समृध्दि देती है, कमी भी देती है ।
– ऊपर लाकर रखेगी, सिखाएगी।

अंत्यकाल में भगवान की बढत – प्रेम सहित लोगों की साक्षीभूत रहेगी।
झुंड में रहनेवालों के बारे में ध्यान से रहेगी।
गुरूगु के साथ गेहू को भी दाँय करेगी।
मेषों से अपनी भेडों को अलग करेगी।
वह – पिता की परिपूर्ण चित्त प्रकार राज्य को पर्यवेक्षण करेगी।
पुत्र के प्रकाश में,
आत्मा की परिपूर्णता में पर्यवेक्षण करेगा।

अंत्यकाल में भगवान की बढ़त – शक्ति, महिमा को उत्पन्न करेगी।
बढत और प्रभाव
इसांफ और कठिनाइयों को उत्पन्न करेगी।

अंत्यकाल में भगवान की बढ़त – देव पुत्र पालन की अनुकूल इस धरती को सन्नद्ध करेगी।

अंत्यकाल में भगवान का इंसाफ

भगवान का न्याय इंसाफ – आत्मा में डर को उत्पन्न करेगा।
अंतरंग में भय को पैदा करेगा।
मनुष्य की चेहरे में भय दिखायेगा ।
भगवान का न्याय इंसाफ – अलग करके खडा रखेगा,
टुकडा करके अलग करेगी,
गलती को पकडकर कारगार के अंदर भेजता है ।
रुकेगा और डारायेगा,
बात करने की मौका नहीं देगा और अलग करेगा।
इकट्ठा करके, संरक्षित रखेगा।
विषयों को ठीक करके, उन्हें मूल्य देता है,
फेंकेगा और इक्टठा करेगा,
अधिकारिक रूप में निर्वाहण करेगा।
धरती पर भगवान से दूर रहनेवालों को जाँच करेगा।
गलती पर रहे लोगों को नाश करेगा ।
अभिलेख लिखनेवालों को भी विशेष रखेगा।
खराब हुए लोगों को और एक बार ठीक तरह से देखेगा।
हमेशा जगडा करनेवालों को दंडा देता है।
अन्याय के लोगें पर दोष का आरोपण करेगा।
हमेशा खुशी में रहनेवाले लोगों को इकट्ठा करेगा।
जबरदस्त से आनंद लेने के लोगों को चुनकर काटेगा।
कामातिरिक्तु लोगों को अलग करेगा,
एक जिंदगी को मृत्यु उत्पन्न करेगा,
एक जगह को श्रम उत्पन्न करेगा,
स्पष्टता से रहनेवाले लोगों को अत्यधिक श्रम उत्पन्न करेगी।
निशब्द आत्मा की एकांत को बढायेगी।
शरीर में घाव बढने के कारण आ गयी दुःख के कारण ज्यादा प्रार्थना करेगा ।
भगवान का न्यय इंसाफ जो है – झूठ बोलनेवालों की भाषा को कम करेगा।
कमजोर लोगों के बल को और भी कम करेगा।
बुद्धिहीन लोगों की कमजोरी को और भी कम करेगा।

भगवान के धर्म का इंसाफ के कारणों के बीच में घूमते रहता है ।
मानसिक आंदोलन से ग्रस्त भरे लोगों के बीच में घूमता है ।
गवाहों के वजह दृढ़ होते रहेगा।

भगवान का इंसाफ – मनुष्य को चूहों के बीच में छोडेगा।
मनुष्य को बाकी लोगों के बीच में,
कमजोरियों के बीच में छोड दिया जायेगा।

भगवान की न्याय इंसाफ – विवादों के बीच में पूरा होगा।
पकड गयी लोगों पर पूरा होगा।
ध्यान से रहनेवालों के बीच में पूरा बोगा।
काबू में आ गये लोगों के बीच में,
हरे हुए लोगों के बीच में
स्वीकृत लोगों के बीच में पूरा किया जायेगा,

भगवान का न्याय इंसाफ – ज्ञान संपत्ति पर पूरा किया जायेगा,
पुरस्कार की भूभाग पर,
स्वास्थ्य प्राप्त करने में,
सहज रूप से भगवान से दिये गये वादा के
जरीये रक्षण
प्राप्त हुए लोगों से पूरा हो जायेगा।

अंत्यकाल में भगवान का उग्ररूप

अंत्यकाल भगवान का गुस्सा धरती के रूप को बदल देता है।
जिम्मेदारी जो है उस पर्वतों को हिलाएगा।
मनुष्य के लक्षणों को बदल देता है।
अंत्यकाल के भगवान का क्रोध जो है वह धरती की शक्ती को कम करेगा।
भगवान से हुई विभिन्न परिस्थितियों को निकाल देगी।
भगवान के परिशुद्ध लोगों के अंत्यकाल के विश्वासों को सवाल करता है ।
भगवान का क्रोध, बर्तनों को खाली करेगी, प्रवचन को संपन्न करेगा।
खोह जगहों को पानी से भरेगा, ऊँची जगह को जलायेगी।
विश्वास को गिनकर, शिष्य के पद को बढायेगी।
दर्द से संकट परिस्थिति में रह गये लोगों को गिनती है, युद्ध वीरों को भेजेगी,
जान से भरे लोगों की परवाह करेगी भगवान के ज्ञान लोगों को सुरक्षित रखेगी,
प्रतिष्टा के लिए रखी गयी स्वतंत्रता को प्रकटित करेगी।
पूरी मर्यादा के लिए, रखी गयी स्वतंत्रता के लिए, गवाही देगी।
ठीक तरह से गौरव न देनेवालों को गलत लोग के नामसे प्रकट करेगी,
शिष्ट लोगों को ऊँचे पद पर रखेगी।
धरती पर युद्धों के खिलाफ़ रहेगी
विश्वास को खराब करने वाली उद्योगों को चलानेवाले नायक को डरायेगी,
शैतान की प्रकटित पत्रों का अंत करेगी
साधु संतों की जगहों को बचायेगी
रोखनेवालों को लपेट करके, शक्ति का अभिनय करन वाले लोगों को निकाल देती है।
घमंड लोगों को निकाल देती है।
घमंड लोगों को ढूँढेगी, मूर्ती पूजा करनेवालों को पहचानेगी,
चिन्तासे भरे लोगों को छोडकर, वश में न आनेवालों को मिटा देती है ।
ईमानदारी लोगों की सेवा करेगी, विशवास भरे लोगों को स्थिर रखेगी।
दोस्ती रखनेवाले लोगों को चलाती, मन बदलाव के लोगों की मदद करेगी।
हृष्दय बाकी हुआ लोागें को भरायेगी, खाती हृदय को भरपूर्ण करेगी, कमजोरआत्मा के लोगों को दृढ़ करेगी।

भगवान के अंत्यकाल का गुस्सा, वधु संघ के लिए इस धरती को शुद्ध करेगा,

राजाओं के राजा के लिये राज्य को बढायेगा।

अंत्यकाल में आशीर्बाद भरी धरती

मैं जो प्रभू हूँ
अपनी धरती को नजदीक आते समय, मेरे सेवक से बोल रहा हूँ।
मैं अपने सेवकों से बात कर रहा हूँ
वे मेरे प्रदेशों में आने के लिए सन्नद्ध रहते वक्त
मेरी जगहों में भरी हुई सभी को प्राप्त होने केलिये
मेरी जगहों को इकट्ठा किया गया सभी को प्राप्त करने में
उसमें मुख्य पदार्थों से
मूव्यवान आभूषणों से
मेरी आत्मा के लिए मंदिर के रूप में जो है उसे प्राप्त करने आ रहा हूँ।
मैं, प्रभु अपने सेवकों को आज पूछ रहा हूँ।
मेरे परिशुद्ध लोगों की आत्मा में रही आग के कणों को वे प्रज्वलित करने को,
मनुष्य के दुश्मन की दृढ जगहों में लगातार कोशिश करने केलिये,
अंधेरी में प्राणी के रिलाफ असुविधा देनेवाले शाप को निकालने के लिये
मेरी जगहों में रही अंधेरी में गुलामी से जो लोग सताये जाते हैं,
दैविक आत्माओं को, मानव की आत्मा पकडकर रहती है,
क्या, इस तरह दैविक आत्मा को जीत करके मानव की आत्मा को नाश करने की स्थिति को ला सकती है ?
अपनी अस्थित्व को अंत्यकाल बुलावों के द्वारा, वे काम
करते हुए जगहों में, मेरी आत्मा के नेतृत्व में
मेरे सेवक स्वतंत्र है,
मेरे सेवक मुक्ति प्राप्त होकर रहे हैं
मेरे सेवक अंदर ले जानेवाले भी हैं

मनुष्य के लिए बुलावा

मेरी आत्मा से शुध्द करनेवाली जगह मेरे सेवक जानते है।

प्रभु की पवित्र मंदिर प्रांगण में किसी प्रकार की झगडा
न होते हुए, किसी भी प्रकार के प्रभाव को न डालते हुए,
भूत को कमजोर करने के लिये मेरे सेवक शक्ति प्राप्त करेंगे।

मेरे सेवक वादा की गयी भूमी पर निर्माण करने के लिये
विमुक्त होने की शक्ति से है, इससे गृह पवित्र हो जायेंगे।

टूट हुए लोागें की विमुक्त करते हैं
बीमार लोग स्वस्थ हो जायेंगे।

विश्वास में कमजोर लोग अपनी जिंदगी में मेरी आत्मा के बारे में गवाही देकर

दृढ शक्ति से – देखते हैं
– सुनते हैं
– विश्वास करते हैं

मेरे सेवक
धीरज से विरोध करते हैं
एक ही मन से,
भगवान के प्रबंधों से
इसके वजह से भूत अपनी विस्तर लेकर दूसरे प्रदेशों को भाग जाते है,
अंधेरी को जीतने में, मेरे सेवक तैयार है। अस्त्रों से संपन्न रहे है।
आशीर्वाद भरी अपनी जगहों में, अपनी पैरों के चिन्ह,
ठीक दिखने की तरह, उन्हें सभी लोग समझने की तरह
जाने के लिये वे तैयार किये गये हैं।

अंत्यकाल में मेरी जनता की आवश्यकता

मेरी जनता को मेरी आत्मा की परिपूर्णता की जानकारी होनी चाहिए

– वे कौन सी विषयों को नहीं जानते है उन्हें उनको समझाना है।

– अपनी ओंटों पर, भगवान की भाषा पद को रखकर रहना चाहिए।

मेरा जनता – इसके पहले ही भगवान से जो संभाषण रखे उसका फिर से प्राप्त करना है, उसे पाकर रहना है।

मेरा जनता – अपनी जिंदगी पर मेरी आत्मा के चिन्हों के साथ रहनी है।

मुझे पहुंचाने की रीति, भगवान के संबंधित

उपदेश कैस देना है, सब जानकारी से रहना चाहिए।

मनुष्यों के रलोक भाषा

आशीर्वाद मेरी जनता मालूम होनी चाहिए।

मेरी जनता – उन्हें दिये गये आशीर्वाद उचित समय में,

प्राप्त करेंगे।

मेरी बात की जलधारा को रेगिस्थान में, मैदानों में, किसी भी प्रकार से जलधार न होने के प्रदेशों में, अनजान में ही वाहन उसे समझते है

मनुष्य को मालूम नहीं होने के कारण मेरी आत्म के उपदेश

जनता के लिए जरूरी हो गयी है। क्यों कि जनता से भगवान सीधा बात करने के दिन यही है।

अंत्यकाल में भगवान का मुख्य दरवाजा

जन्मदिन की शुभकामनाएँ बोलनेवाले, अगले वर्षों को याद करते हैं।

– एक जन्म में एक साल के कीजानकारी देंगे

– उसी तरह बनी हुई एक व्यक्ति के बतवि को समझाएगा।

सब में से अधिक रूप से एक जन्म दिन में, मनुष्य का व्यवहार ऊँचे स्थान पर खडे होकर भगवान के द्वार के पास रहता है इसको जानना चाहिए।

वरताब जो है, कमजोरी सहित रहेगी।

प्रकाश में पैरों के निशान रखते समय, नीति जो है कायम रहेगी।

रात में न उछलकर, दिन में ही उछलने वाली चिडियों से बचाव देखेगी।

भगवान के मुख्य द्वार,

भगवान की आह्वानित करते हुए दी गयी चाव,

खोजनेवाले खटखटानेवाले द्वार,

राज्य की चाबी के जरिये ही उस द्वारा को पहुँच सकते हैं।

राज्य की चाबी के द्वारा ही,

दाई, बाई ओर को पलट करके, बंध करने को और खोलने की सुविधा होनेवाली ही हैं।

यह मनुष्य और भगवान के बीच होनेवाली संबंध की पहली सीढ़ी है।

भगवान से मनुष्य के नाता संबंध की पहली सीढी है।

यह मनुष्य भगवान की कृपा को पान की जगह है

यह भगवान मनुष्यकी स्वतंत्रता को प्रकट करने की जगह

यही – मनुष्य के साल के उत्सव पर आधारित नही होते हैं।

– मनुष्य के ज्ञान पर आधारित नहीं होते हैं।

– मनुष्य की कृषी पर आधारित नहीं होते हैं।

लेकिन मनुष्य की परिशद्ध हृदय पर आधारित होते हैं।

अंत्यकाल में पिन्तेकुस्त दिन

मानव धरती पर पिन्तेकुस्त दिन फिर आने लगे है।

मानव संसार को भरने लगे बैं

मानव संसार में भगवान की परिशुद्धों को फिर से लिखनेवाले हैं।

पिन्तेकुस्त दिन शैतान की गदी से शैतान के दिन को पकडकर ले जा रहे हैं।

– भगवान की आत्माओं को फिर जगानेवाले हैं।

– घटी से सूखी हुई हड्डियों को फिर से लाते हैं।

भक्ति होनेवालों को भगवान की सिंहासन के पास पिन्तेकुस्त दिन बुलानेवाले हैं।

पेन्तिकुस्त दिन प्रायश्चित के लोगों को देखेंगे
सूखी हड्डीयों को, भगवान की आत्माओं से भरते हैं।
मेरी आत्मा आग से प्रकाश होगी, मेरी पवित्रता से
भगवान के डर से वह प्रकाशित होगी
भगवान की आवाज से धैर्य रहेगी
भगवान की इच्छा से धैर्य रहेगी
मेरी आत्मा की प्रकाश से धैर्य ले आयेगी।

मेरी आत्मा की प्राकाश होनेवाली दीप जो है, मनुष्य के लिए भगवान से दी गयी एक्सरे यंत्र की तरह है।

मनुष्य की गहराई को खोजानेवाला आदमी जैसा है।
मनुष्य के शरीर को, आत्मा को, अंतरंग को भी जांच करनेवाली है।
व्यवहार विधान, हृदय और मन को
नीती के लिए, भगवान से स्नेह के लिए,
भगवान से एक स्वीकार के लिए कोशिश करेगी।
इस सहमती के वजह से एक नया करार सूचित होगा।

उसके द्वारा मनुष्य की अस्तित्व, पूर्णता में
पूरे आदर के साथ रहेगी ।
सभी जगहों में प्रवेश करेगी
भगवान से आनेवाले मनुष्य के हक् के लिए उचित लक्षणों को प्राप्त करेगी।

इस पिन्तेकुस्त दिन प्रभु के आरोहण के संबंधित है।

इस पित्तेकुस्त दिन फिर आकर, भगवान की परिशद्ध लोगों के अंत्यकाल के गवाही देनेवाले दिन होंगे ।

क्योंकि ये दिन सन्नद्ध न हाने वालों के दिन नही है।

अल्प विश्वास के लिए,
दो तरीको में कदम रखनेवालों के लिए,
अनुमान से मेरा हुए लोग,
निकालगये लागों के लिए नही है।

थे दिन भगवान के परिशुद्ध लोगों की सेवा के लिए रहे है।

मेष भाग जाने के दिन हैं
मेमन को दूध नहीं मिलने के दिन
गडरिया भेडों के लिए ध्यान रखते हुए
विश्वास से चलने को जानते हुए
नीती को जानते हुए
कृपा को प्राप्त होनेवाले लोग हैं.

जैसे इंतजार करते उसी तरह प्राप्त होंगे
उसको प्राप्त होने के प्रकार हर एक को पुरस्कार प्राप्त होंगे
गडरिय को जाननेवाले अपने व्यक्ति को चाहते हैं।

अंत्यकाल में मेरे बच्चों के आँसू

मेरे बच्चों के आँसू आसानी से नहीं गिरा है,
आसानी से चेहरे पर फिसलते नहीं;
आसानी से उसे छोडा नहीं,
वह उम्र पर आधारित नहीं,
लिंग भेद से नहीं रहेगा,
मनुष्य की संपत्ति की वजह से नहीं रहेगा,
मेरे बच्चों के आँसू – उनकी स्थिति के कारण रहेंगे,
आत्मा में गहराई से विचार करना, भावोद्रेक आगे आने की वजह से होंगे।

चली गयी भावना के कारण, एकांत की स्थिति के कारण,
दूर फेंकी गयी स्थिति, अलग की गयी स्थिति के कारण,
इच्छा को खो जाने की स्थिति, जरूरत को पूरा न होने की स्थिति के कारण आयेंगे।

मेरे बच्चों के आँसू – दूसरों की मारने से,
मारने की स्थिति के कारण,
सभी के सामने कब्जें में रहजाने की स्थिति में,
अन्याय की स्थिति में,
सहमत नहीं होने की स्थिति, भडकाने की स्थिति के कारण बनेंगे।
मेरे बच्चों के आँसू – मेरा राज्य में, आवश्यकतानुसार बोलेंगे
संरक्षण के लिए, छोडे गयी आवश्यकता के अनुसार
खराब हुई फेन्सिंग को ठीक करते वक्त,
ठीक करने का काम रहते वक्त,
अंधे को चलाने की स्थिति को रोकते वक्त

मेरे बच्चों के आसूँ, स्वतंत्र बातों की साक्षी है
दबाये हुए व्यक्ति को,
आवश्यकताएँ पूरी नहीं होते वक्त,
प्रकाश न होने की स्थिति को, एक पर्वत की व्याप्त घुमने को,
भगवान से सत्संबंध टूटा हुइ स्थिति की गवाह हैं।

मेरे बच्चों के आँसू कभी भी छोडने वादे नहीं, उनके विवरण जीवग्रंथ में लिख जायेंगे,
विमर्शा के दिन हर एक देखा जायेगा, कृपा जगहों में गवाही देगा,
विरोध की गयी न्याय, आत्मा में अंधेरी होनेवाले लोगों को प्रकाश देगी।
परिशुद्ध लोगों के आँसू सिर्फ आसानी से आ गये आँस नहीं है,
अधिक ध्यान से ले गये हैं।
वे दर्दसहित लोगों को आश्वासन देने केलिये आ गये देवदूतों से हैं।
पौंछने केलिये एक तखते लिखा गया है।
परिशुद्ध लोगों के आँसू तेजी से ले जाते हैं
ठीक ही मापन में आयेंगे,
आत्मा को नुक्सान न देते हुए बनी है
शरीर को नष्ट न होने केलिये,
अंतरंग को कष्ट न आने केलिये आते हैं

परिशुद्ध लोगों के आँसू, मेरे बच्चों के आँसू, भगवान के पुत्रों के, और बेटियों के आँसू,
भगवान से उनके चलने का सवाल पूछने लायक नहीं
भगवान से उनके मंजिल को, भगवान से उनके
संबंध को खराब करने के लायक नहीं ।
शैतान की कोशीशों के द्वारा हो जायेगा।

अंत्यकाल में मेरे सेवकों की दैविक सेवा

मनुष्य की स्वतंत्रता मेरे सेवकों के विरुद्ध नहीं ले जायेगी,
मनुष्य स्वतंत्रता से बोलने की बाते, उसके पैरों की निश्चित स्थिति,
उनके हाथ, जिस जगह नहीं जाना है उस जगह पर जाना जो है,
इस कृपा युग में मेरे सेवकों के खिलाए व्यतिरेक नहीं गिन जाते हैं,
अपने हृदय भर से मेरा सेवक की मूँह से आ गई बाता के कारण मेरे बच्चे और भी आशीर्वाद पाते हैं
प्रर्थाना के द्वारा पाप में पकडे गये व्यक्ति को
विश्वास के द्वारा मुक्ति देना,
आधीन में आने का सबूत है
भगवान, दृढ करते वक्त, उनके सिंहासन के सामने खडे होने की प्रतिष्ठा भरा काम है।
मेरा सेवकों के मूँह से निकलनेवाली संचालन,
अपनी विश्वास को रखते हुए इंतजार करनेवाले
लोगों को सुनाई देता है,
अपनी आत्माओं से बात करने को
अपनी अंतरंगों को ऊपर की ओर ले जाता है ।
भगवान की इच्छा में मेरे सेवक,
उनके संभालन में,
उनके ज्ञान में
उस दिन की परिज्ञान से
आत्मा पर प्रभाव होनेवाली अंतरंग पर प्रभाव होनेवाली दर्द से
इंतजार कर करने वाला व्यक्ति, भगवान से कृपा केलिये इंतजार करनेवाले पीडित आदमी की स्थिति है

अंत्यकाल में जीवन की समतुल्यता

भगवान की क्रोध से बचजाने को मानव की कुशलता
किसी भी मात्रा में काफी नहीं होगी।
एक चोटी सी बच्ची सागर के तट पर खेलने की तरह है।
धरती पर मनुष्य की कुशलता मनुष्य को ही प्रभावित कर सकती है।
मनुष्य की कुशलता दृढ हो गयी है, बढ कर दिखाई गयी।
शैतन के द्वारा वक्र दिखाकर, मनुष्य की जिंदगी को
नाश करने केलिये किया गया है।
मनुष्य की जीवन विधान उनकी जीवन गमन में भर गयी,
वह उसके प्रयोजन योग्य नहीं,
वह उसको नीचे की ओर ही ले जाती है।
चिल्लाते हुए, जोर से पुकारते रहे, लोगों को इकट्ठा करने को ही रहेगी।
पुकारते, चिल्लाते रहने वाले धरती पर शैतान की
शक्तियों से भाग लेते रहेंगे।
मनुष्य के शरीर में भाग लेते होंगे
शैतान की आत्माओं कलब में उसको सभ्यतव रहेगी।
अपने आप अभिवृद्धि होना जो है उसके द्वारा मनुष्य की
बुरी स्वभाव भरा रहता है।
मनुष्य की इच्छाओं को धन्यवाद से स्वीकार करने की सदस्यता होगी।
शैतन की आत्माएँ दिन भर काम से रहेंगी।
दूसरों को प्रत्युपकार करने में कुशल नहीं से होंगे।
भगवान की सूचनाएँ सुनते हुए वे अपने आप के सभालते है।
छाया को अनुसरण करने से अपने पीठ पलट करने का समय है,
दिखाव भरित मुँह नही रहती है।
अपनी बचपन की शुध्द आत्माएँ, सफेद होकर,
आने वालेदेनों में आसानी से पकडी जाती हैं।
भगवान से फिसल कर, पाप विमुक्ति से दूर होकर
शैतन के अधीन में जाने के बाद, धंटे
बजाते वक्त उसकी दष्ढता समझ जायेगी। वह समाधी को
पहुँचते समय, मनुष्य को ऐसा ही होगी।

मनुष्य की आत्माएँ, अपनी स्वेच्चावाद को शुरु करेंगी
बडी अपमान – अंकों प्राप्त होंगी,
तुरही ध्वनियों को नहीं मिलेगी –
प्रमाण की पुरस्कार से,
उनके सभी की एका एक विशेश स्थान को,
उसके बाहर रास्ता नहीं,
बिना प्रकाश की,
फिर से सीखनेवालों के, बिना उनके लिये स्थान भी नहीं रहे बंध स्थान में ही रास्ता खोजना है।
वह जगह कुछलने के कारण,
वह जगह जनता के बिना रहने के कारण,
समृध्दि के बिना बदलने की वजह से,
मनुष्य के दिन की समृद्धि न होने के कारण
मनुष्य की अंतरंग खेलने की उस जगह को छोड देती है,
मनुष्य की आत्माएँ, दूरदृष्टी के बिना जबरदस्त से लूट लेते हैं।
ज्ञान के बिना जबरदस्त करेगी
रिश्वतों पर जीने को, उसी समय
तात्कालिक रूप में जो मिली है उससे जीने को
भविष्य पीढियों को कुछ भी नही बचाकर जबरदस्त करते हैं।
पीढियों केलिये – जबरदस्त निकलने को
अपनी रोजगारी खोयेंगये लोगों के लिए,
किसी प्रकार से अवकाश के बिना रही भविष्य
पीढियों के लिए जबरदस्त करेगा।
मनुष्य की आत्माएँ – पैसे की थैली को लूट लेते हैं।
प्रतिष्ट किसी प्रकार भी नहीं मिलता है इस बात को जानते समय छोडकर जायेगी।
पीछे छडगये लोगों के बारे में विचार नहीं करेगी।
मनुष्य की आत्माएँ जिद लोगों को आकर्षित करती हैं।
उनके प्रजास्वामिक भावनाओं को आचरण में रखते हैं।
उत्तरदायित्व को कम करेगी।
जिम्मेदारी को स्वीकार नहीं करती है ।
किसी मूल्यवान चीजों को नही छोडते ।
लालयों आक्रमण में जो जगह हैं, उनको छुडवा देते हैं ।
इस स्थिति में रही मनुष्य की आत्माएँ भगवान की ज्ञात में नहीं रहती है
स्वतंत्रता को लाने वाली नहीं रहता है
प्रकाश के संबंधित उत्तम विषय के बारे में नहीं रहती है
भगवान की चीजें नहीं होती है।

अपने सेवकों के साथ नहीं गिन सकते हैं
आश्चर्य कार्य करने की शक्ति नहीं रहेगी,
भगवान से नींव डालने से, ही कार्य करने की शक्ति आयेगी।
सूचना को प्राप्त की गयी नींव पर ही,
सूचना के संबंधि नींव पर निर्माण हुई चीजों ही,
हारना जानने की नींव से,
मेरी आत्मा के द्वारा डाली गयी नींव से
मेरे संदेश पर निर्माण की गयी नींव से,
मूल्यवान पत्थरों के साथ, भगवान की नींव से ही शक्ति आयेगी।
उसकी पूरी हुई दशा, कृतज्ञता और लाभ के साथ रहेंगी।
कई जनता के लिये आराम,
परिसरों को बढाना,
हर सुबह को ले आना बडी उमगों
हर जगह खुशी से भरी स्थिति में रहेगी।
परिपूर्ती के लिए होनेवाले कर्यों का क्रम, उसके द्वारा आने बाते फल से
परीक्षा की जायेगी।
क्यों कि वह फल मनुष्य की कोशिश की सफलता के रूप आनेवाली सफलता है।
वह मनुष्य की जिंदगी है।
उसकी मूल फैसला की गयी है।
परीक्षा करनेवालों के लिए
उसकी मूल प्रकटित की गयी है।
क्यों कि सोने का भविष्य और बडी प्रतिष्टा के लिए
वह तय की गयी इसे समझने वाले सभी के लिए या
हवा में उड घास की यह उस के लिए
तैयार की गयी है
संसार के सभी देशों की हुकूमत करने वाले भगवान,
फिर को यथा स्थिति ले आयेगे और बचायेग
चुनते हैं, निर्माण करेंगे,
सिखायेंगे शिक्षण देंगे
जानकारी रहेंगे उठायेंगे
जनता के भगवान जाँच करके, सजा देंगे
गुस्सा दिखाये, जवाब के लिये पूछेंगे
मनुष्य में सत्य और नीतिमत्व को खोजेगी।
जनता के भगवान मनुष्य की गलतियों को परिशीलन करेगी।
धरती को वापस कपडी से छिपायेंगे
समुद्रको फिर संपत्ति से भरेंगे
मनुष्य की आवास स्थान को फिर से भरेगी।

अंत्य दिनों में मंजिल - मेरे मंदिर

मेरी जनता भगवान की आवाज सुनने को सन्नध्द नहीं है,
परिवर्तन पाने के लिये नजदीक नहीं
निमंत्रण को स्वीकृत न करनेवाले, होशियार न होनेवालों
को खाली नहीं कर सकते,
बात करने समय के आने तक सुनने की आश्वासन नहीं रखेगी।
परिवर्तन के बिना, भगवान के संदेश, को नहीं सुनाते हैं,
भगवान के दिखाई दूर से ही, उपदेश देने की कोशिश मेरी जनता को करनी है।
मेरा आत्मा की विविध भाषाओं का अंतर
समय की फैसला को पार करके करने की विचारों का अंतर
किसी प्रकार की हिलावा के बिना, दिमाग में रखी अनेक बातों के लिए रह गयी दूर
भौतिक रूप में, रोशनी से भी तेजी से जानेवाली जगहों, को दूर से भगवान से तय किये गये हैं।
मेरी जनता अपनी अंत्यकाल की सन्नद्धि में है,
आत्मा को भरना जो है पुरस्कार को कमाने के लिए
जेष भरे रहे हैं।
पिता का वादा, देवदूतों का परिवर्तन, परलोक संबंधी आग को पाने के लिए तैयार हो रहे हैं।
परलोक संबंध चतुर बातों को वृध्दि करने के लिए मेरी
जनता प्रोत्साहित हो रही हैं।
अपनी कोशिशों से अकेले रहते हुए,
इस भाषाओं की परिज्ञान के द्वारा, आत्मा में
अंतरंग में रही भावनाओं के द्वारा पूरी करने को,
भाषाओं के द्वारा, साधित शक्ति के बारे में सुनकर, शरीर आश्चर्य से भर जायेगी
अभिवृद्धि साधित हुई प्रतिष्टा को प्रकटित करने को,
मंदिर की बदलाव को शुरू करते वकत,
साधित हुई महिमा को प्रकटित करेगी।
मंदिर प्राप्त करना शुरू करते ही,
उसको समझना शुरू करते ही,
भगवान के ताराओं के संबंधित भाषाओं की
विचारों को अनुवाद करते वक संख्या विस्तार की जायेगा।
मंदिर, तुरंत बदलते समय
तभी उत्पन्न हुई परिवर्तन के कारण,

आत्मा के द्वारा प्राप्त हुई विविध भाषाओं के द्वारा,
भगवान की संदेश परिशुद्धता से, डर से अनुकरण करके
परिशुद्ध जीवन केलिये सन्नद्ध करने का मंदिर है।
मेरा जनता की भाषाओं को, मेरा आत्मा का होशियार से, अर्थ सहित रहने की तरह करेगी।
मेरी जनता की भाषाओं को परीक्षा करके उन्हें सिखायेंगे ।
मेरी जनता की भाषा को दृढ़ करेगी और विशेष मेहनत
को दी जायेगी।
मेरा जनता की भाषा को धार प्रवाह जैसे संचालन करके
उचित प्रशिक्षण देती है।
मेरी जनता के स्वर यंत्र को ठीक करेगी,
मेरी जनता की भाषाओं की उच्चारण को नवीनता लायेगी और क्रम में रखेगी।
मेरी आत्मा की बातों को विस्तृत रूप से, उचित आरोहण,
अवरोहण क्रम में बात करने की सही पद्धति में ले जायेगी।
उचित समझौता और ठीक निश्चयता की सही व्यक्ति करेगी।
विषय होकर, ठीक तरह से बात करने लायक होकर
यह बात कि आवाज कहाँ रोकना है मालूम करके, शुद्ध बात करनेवाले करते है ।
आवाज ग्रहण कमरे में मेरी आत्मा एक मुख्य सांकेतिक श्रामिक जैसी रहेगी।
दृश्य कमरे में सांकेतिकता से,
परलोक संबंधी सांकेतिक नैपुण्य जैसे, वही
संचालन करेगी। वही मार्ग दिखायेगी।
भगवान की सिंहासन के पास रहनेवाले कमरे से, मंदिर की भाषाएँ रहेंगो।

अंत्यकाल में मजिलि की उत्प्रेरक

भगवान के पास आना था, भगवान से दूर जाना जो है मनुष्य की गतियाँ, मंजिल के लिए की गयी मध्यवर्तित्व या उत्प्रेरक हैं।

वे आत्मा पर प्रभावित करते है।
अंतरंग का निमंत्रण करते हैं।
शरीर पर उनके लक्षण होते हैं।
कान में धीर बोलने की बातें की तरह,
बाजार में की गयी डप की आवाज जैसे,
एक हृदय की स्पंदन की तरह
सुविधापूर्ण जिंदगी को ले सकते हैं।
भगवान से रहने की खुषी का जीवन
सिर्फ भगवान से ही आह्लादित रहने जीवन मात्रा ही रहेगा।
निराशा से दिशा सूझान के बिना रह गया जीवन,
शरीर में घुस गयी तीर की अंकुडा जैसे,
रात में आ गयी कांप की तरह
स्वप्न विचलने की स्थिति में
गरीबी में रहगयी जिंदगी को संचालन कर सकते हैं,
भगवान की सन्निदि के बिना, गरीबि में
निराशा में मनुष्य चलता है।
एक होंठ पर रखी चुम्मा की तरह,
गले से व्याप्त चिन्ह की तरह
एक हृदय की गाति की तरह
पूर्ण अंगीकार योग्य जीवन को स्थापित कर सकते हैं।
भगवसन से पूर्णांगीकार, या मनुष्य एक दूसरे से करने की
सेवा के कारण पूर्णांगिकार प्राप्त कर सकते है।
मंजिल के लिए रही उत्प्रेरक – इच्छाओं के वश में आकर,
इच्छाओं को कम करके,
इच्छाओं को चुनकर,
उन्हें काबू में रख सकते हैं,
जवानी में अलक्ष्य की गयी,
जिंदगी में यों ही बीती हुई बातें,
अनुभव पूरी होकर स्वागत न करने की इच्छाओं को
बुढापे के कारण प्रकटित न हुई इच्छाएँ
बर्ताव में जो इच्छाएँ नहीं

उसके विचार के अनुकूल
भगवान से जाने केलिये उत्प्रेरकों की भावनायें
भगवान से न जाने देने की उत्प्रेरकों की भावना आदी।
अंत्यकाल में मंजिल के लिए तैयार की गयी उत्प्रेरक जो है,
अपनी चुनावा के उचित पद्धति में उपयोग होनेवाले,
कालक्रम में अपनी पद्धतियों का परिवर्तन करनेवाले,
उसे विरोध करते है इस तरह की सुविधान होने के कारण,
कालगमन उनकी वे समाधी को पहुँचने की स्थिति है।
ये उत्प्रेरक, अपने कागकाजों को बदलकर लिखने के काम में रहते है।
इसके पहले प्राप्त न हुई अवकाशों को स्थिर रखने को
आत्मा पर, अंतरंग की आंक्षाओं को बदलने को,
पैदा होते ही काट दी गयी विचारों को, परिस्थितियों का वापस ले आने को।
जिंदगी की कूडे की टोकरी जो है वह मन में उत्पन्न हुई रुकावटों
को एक आकार देती है,
उन्हें ढकेलने देता है।
संपूर्ण स्थिति के लिए अंगीकार न करने की स्थिति
जो गायब है उन्हें फिर निमंत्रण करने केलिये तैयार हैं,
मनुष्य को एक मंजिल अनिवार्य है, वह पहले ही निर्धारित की गयी।
आत्मा के जागने के बाद तुरंत समाधी की सत्य की ओर आगे बढेगी
भगवान के पुत्र वापस उठते ही रहनेवाले व्यक्तियों के सम्मुख के लिए,
उत्प्रेरक मनुष्य की आँखाों के सामने खडे होने की सुविधा की गयी है।

अंत्यकाल में मेरे भेडों की चारा

मेरा भेडों की आहार उनकी संस्कृति के जरिये बदलती है।

वह एकत्रित होने की तरीका है ।

किसी भी कार्यक्रम में भाग लेते समय झंड की विशेषता को निर्धारण करने के रूप में

एक ही होकर घास चरते समय, हवा आयें तो, बचाने के लिये

रहे भगवान के प्रेम को निर्धारण करने की तरह रहता है।

भौतिक और आध्यात्मिक दोनों विषयों के नाते होनेवाली आहार मेरे भेडों का है।

लोकरीति में और परिशुद्धता में

सामान्य रीति में और मिश्रित रूप में रहेगी। मेरी भेडों की चारा, उदर के लिये संपूर्ण और आत्मीय समृद्धि भी होकर रहेगी।

मेरे भेडों की सावधानी के कारण पेट भर आहार ले जा सकती है।

वहाँ घास खाने का अवसर होने से आहार आयेगा।

मेरे भेडों को मारनेवाले भेडियों से चुराया जाती है ।

चारों ओर देरे हुए समूहों के कारण,

बडी स्वतंत्रता से दौड ने वाले रक्षक की वजह से भी नहीं होगा।

जगडों की वजह से वह अदृश्य न होगी, मृत्यु के द्वार खराब न होगी।

बहुत ही कडुवा के कारण बरबाद नहीं होगी

आखिरी बारिश के कारण मेरे भेडों की आहार ज्यादा मिलेगी।

भगवान के शासन के द्वारा जरिये बढ जायेगी,

बहुत खाद से दृढ, और वैविद्य सहित रहेगी।

मेरे भेडों की आहार आत्मीय विषयों पर निर्भर रहेगी।
जो लौकिक है उसे पवित्र आहार की तरह बदलती है।
परिशुद्ध लेखनों के जल में घास खाते हैं।
प्रार्थाना के आलयों में
भाषा के खेतों में खायेंगे।
माँस में पुट्टा पूरी रहती है।
हड्डियों से मज्जा देगी।
देह की रभा के लिए ऊन को देगी
भगवान की आशीर्वाद से पेहनाव करेगा।
भगवान की कवच से पेहनाव करेगा।
मेरा आत्मा की तलवार से याने मुँह पर
आत्मा की तलवार से रहेगी।
मेरी आत्मा के द्वारा भाषाओं को देने वाली वस्त्रधारण रहेगी।
मेरे भेडों की आहार, प्रभु की युद्धनाद को जानने केलिये ले जायेगी। क्योंकि
प्रभु मृत्यु से उठगये, वे अपने कार्य के द्वारा उठ गये हैं।

अंत्यकाल में शैतान के काँटे

शैतान के काँटे चुभ जाते है, भोंकते हैं
पेट में घुस जाते है, और संचालन कर लेते हैं
तेजी से भोंकते है, मारते हैं,
शैतान के काँटे–निराश निस्पृहाओं को लाते हैं
झूठ बोलते हैं और धोखेबाजी करते हैं
झुक जाते हैं और लंगडा रहते है
शैतान के काँटे व्यर्थ रहते हैं।
हिल जाते हैं, डराते हैं
तोड देते हैं, जगडा करते हैं।
शैतान के काँटे जो हैं मनुष्य की जिंदगी में सभी व्यर्थ कहकर फेंकने की स्थिति में लाते हैं
शैतान के काँटे नाश होने के कारण होते हैं
फैसलों को बदल देते हैं,
ऊब का मूल है,
नाश के पथ में ले जाते हैं ।
अवकाशवाद के लोग
फिजूल को बेचनेवाले हैं ।
शैतान के काँटे जो है– डराने की स्थिति को उत्पन्न करनेवाली धोखेबाजे हैं।
दिवा के स्वप्नों के द्वारा तंग देते हैं
दर्द में रहनेवालों से युद्ध करते हैं,
पाप का स्वागत करते हैं।
मनुष्य को बदलनेवाले धोखेबाजे को बनाते हैं,
समस्याओं की जाँच करनेवाले रहते हैं
शैतान के काँटे–निकम्मेव्यक्तियों से संभाषण करते हैं,
लोगों से मिलते ही अनावश्यक बातें करनेवाले
जो राज्यों को उल्टा पल्टा करनेवाले हैं ।
जो स्नेह पात्र नहीं है उनके लिए खोजते हैं ।
इनकिलाब करनेवालों को इकट्ठा करते हैं,
अपराधियों को खराब करते हैं ।
शैतान के काँटे – पहरेदार पर दबाव रखते हैं
पीछे से रक्षा करनेवालों पर दबाव उत्पन्न करेंगे
स्कौट से दबाव पाते हैं

मनुष्य के लिए बुलावा

शैतान के काँटे, बीमारियों को फैलाते हैं,
बुरी को फैलाते हैं,
दर्द देने में विशेष शक्ति रहेगी,
शैतान के काँटे – झगडा करने के लिये तैयार रहते है।
हार जाना उन्हें पसंद नहीं,
हारते समय बहुत जगडाओं को उठायेंगे
बडी ताकते से वापस आते हैं,
अपराध से विमुक्त होनेवालों से युद्ध करते हैं।
शैतान के काँटे – मेरी जनता के लिये लाभदायक नही हैं ।
भगवान की इच्छा को गडबड करने की कोशिश करेंगे
आपस में झगडा करने देते हैं
झूठी बातों से समय को बितायेंगे
जिसे कुशलता नहीं है उन्हें डरायेंगे
झुंडे मेमने को छितरेंगे,
शैतान के काँटे – निमंत्रण करते समय जाना चाहते हैं
अपनी अस्थित्व रखने केलिये जिद रखते हैं
अपनी बातों में बुद्धिहीन दिखते हैं,
उनकी घूँघट जाते ही अच्छे दिखते हैं,
अपनी सेवकों में भगवान की आवाज रहते समय,
भगवान के सेवक कायर होते तो ज्ञान से और परिपूर्णता से आगे बढने की शक्ति रहेगी।
स्वच्छ गाडी में जाने लायक रहेंगे

अंत्यकाल में भगवान के बादल

आक्रमित बादल डर के बिना रहने की तरह, अंधेरी की कोशिशें पर निर्मित हैं।

इसके पहले जो हुइ है उसे बहुत बढिया दिखाते है,

एक नवीन प्रारंभ दिन को धैर्य से प्रकटित करेगी,

ये बादल सुबह आ जाते हैं,

चाबी के साथ दे दिया जाते हैं,

आत्माओं को बचाके रखनेवालों को दिये जाते हैं। आक्रमित बादल एक क्रम में सजा रखे गये हैं और भरकर रहते हैं।

एक आकार में रहता है, एक तरीके से रहते हैं।

वादा के दिन वे बढिया हैं और शोभायमान हैं,

वह – रक्षक की तरह बचाते हैं, झुंड को इकट्ठा करते हैं,

निमंत्रण करके एक सिलसिते में रखते हैं,

ले आकर आगे ले जाते हैं,

वह त्र महानता लाता है और बडप्पन से रहते हैं ।

परदेस का संगीत सुनायेगा ।

महत्व की स्थायी को बढायेंगे पहली स्थान देंगी ।

वे भगवान के राज्य की प्रतिष्टा से भरा परलोक राज्य के प्रतिनिधि की तरह रहते हैं।

कई ज्योतियों से सजाई हुई रंगस्थल पर

अनुकूल परिस्थितियों में हिलते रहते हैं।

अनुकूल परिस्थितियाँ जो हैं वे अधिक स्थायी के संबंधित डर को निकालती है।

भगवान के प्यार को ले आने के लिये

स्थिर रहने के लिये दी गयी प्रमाण को अटल रखने केलिये,

परदेस की महिमा को, निमंत्रण की महत्व को, लाने के लिए इंतजार कर रहीं वधु संघ को अपनाने में सहायता देंगे ।

निमंत्रण दियेगये लोगों का करने को

आदरणीय लोगों को जल्दी निमंत्रण करने को,

मनुष्य के लिए बुलावा

सभी राज्यों प्रभु के बच्चों को, भगवान के लिये जो प्रिय लोग हैं उस जनता को ऊँचे स्थान में रखने को

प्रिय बादल आकर ले जानेवाले जमीन पर रहनेवाले और सुरक्षा सहित लोग

अपना नाम रखनेवालों को एक एक करके वुलाने को आयेगा
प्रिय अपने बादल, भगवान के बगीचे में सजीव दूतों के काम पूरे होने के बाद बडी आनंद के साथ,

निमंत्रण में बहुत ही खुशी वे अपने वश में नहीं रखेंगे।

भगवान का वन

भगवान के वन का आह्लाद जो है, भगवान के प्रियलोगा को देखने केलिये उस बगीचे की प्रतिष्टा तीन भाग हैं,

भगवान की अंश में
भगवान से की गयी उस अंश में
भगवान की इच्छा से वहा रह गयी है ।

लिखी गयी विषय सुची में
भगवान की प्रणाली में, उनसे रक्षा पानेवाले
लोगों केलिये दी गयी मौका है
भगवान के वन के वैभव में चलन और प्राण भी है
आश्चर्य रूप से जो अचेतन है
उनके प्रकाश
इतना ही नहीं चोटी और बढी अपने अपने स्थानों में भरकर रही है।
उस वन की शोभा एक एक कर इकट्ठा नहीं होती हैं ।
सोचने में अवरोध के बिना पूरी आजादी से हैं
किसी को न फेंककर हर एक को अधिक लाभ दिखाती रहेंगी ।
वन की शोभा, सूख जाने वाले फूल था
कभी भी न जलनेवाले जो फूल है, हमेशा हमारे ज्ञानेंद्रियों को संतुल रखने की स्थिति में रहती हैं ।
उस वन के फूलों से सजाया हुआ है
वे, उस शोभा केलिये उपयोगी रहते हैं ।
वनमाली को आश्चर्य चकित करते हैं ।
भगवान की पूरी परिपूर्ण की बगीचे में,
अपने बच्चों के बगीचे में,

अपने परिवार के लिए यानी की भगवान के परिवार के लिए फूल इस्तेमाल होते हैं। उस वन की शोभा, मनुष्य केलिये, समझकर रहना बहुत दूर की बात है

मनुष्य के लिए बुलावा

वहाँ रहनेवाले सभी के लिए,
स्वयं बोलने वाली बातों से भी
एक दूसरे बात करने की तरीका में,
आत्माओं की खुशी के लिए
अंतरण की खुशी के लिए
वह रात के समय नहीं बनी है,
व्याकुल की वजह से नहीं हुई
उसकी ड्योढी में पाप नहीं है,
शिकायत करने की कोई कारण नहीं है,
असंतोष होने केलिये कोई जगह नहीं रही,
व्यतिरेक भावनाओं को मौका नहीं देती,
उस वन की शोभा मनुष्य के समयों को नहीं लेती है,
कोई जल्दबाजी नहीं
किसी प्रकार की निर्देशित मौका नहीं देगी
किसी प्रकार की दबाव की जरूरत नहीं,
उस वन की शोभा समय के बारे में नहीं सोचती है
आके जाने के लिए, सीखने के लिए नई भावनाएँ रहती है।
मनुष्य के ज्ञान के आधार पर, भगवान का दर्शन पाता है ।
उस वन की शोभा, एक आत्मा को तंग करती नही है
श्रद्धा दिखाने केलिये बहुत ही मौका मिलेगी,
परिशीलनाओं को अधिक मान लेंगे
नये विषयों की परिज्ञान के लिए करनेवाली यात्रा में नई शिक्षण देगी,
आत्मा के बगीचे में,
पुत्र के बगीचे में,
पिता के बगीचे में,
अधिक श्रद्ध दिखाता है।
उस वन की शोभा सिंह और मेमन भी भगवान के झुंड में रहेंगे।

अंत्यकाल में मनुष्य की नादानी

मेरी हथेली में इस सृष्टी को रखी हूँ, इस बात को आप संदेश में पढा नहीं है क्या?

इस बात को भी कि मेरे विचित्र मानव को नहीं मालूम होते हैं, क्या आप लोगों ने देखा नहीं ?

समय के अधिपति हूँ मैं, ऐसी मेरी स्थिति के बारे में क्या मेरे वाक्य में लिखा नहीं है ?

कारण और नतीजा के विषयों के बारे में धर्मशास्त्र
को क्या मनुष्य अभी तक समझ नहीं सकता है?
मैं समय को उस तरफ रहते वक्त,
मेरे हाथ के काम जो है उस सृष्टी से मनुष्य की इच्छानुसार
बढी आवाज देते वक्त,
मैं मानव के लिए इस दुनिया निर्माण करके
समय को दिखा दिया हूँ, क्या उस विषय को नहीं समझते है क्या?

मनुष्य अपनी ज्ञान से विचार करके, भगवान को योग्य नहीं समझकर फेंकने को कोशिश करनेवाला बुद्धि हीन है।

अपनी अनुभव में भगवान की जो बातें नहीं, उनको समझाने के लिये कोशिश करनेवाला बुद्धिहीन है,
दूर रहते वक्त,
भगवान से विश्वास सहित यात्रा को आरंभ करने की
यात्रा के लिए जितना चाहे उतना विश्वास नहीं हो तो वह बुद्धिहीन है,
दूसरों की जिंदगी में परिशुद्धात्मा के देनेवाले पुरस्कारों को समझनेवाला,
मेरी आत्मा जिस जगह में समृद्ध रहती है, उस जगह न रहनेवाला बुद्धिहीन है,
पढ रहीं उस विषय के कर्ता जो है उन्हे
विरोध करनेवाला व्यक्ति बुद्धिहीन है, इसके पहले दिये गये
अपनी संपत्ती को त्याग किये गये त्यागशीलों को,
मनुष्य की आत्मा के द्वारा पाये हुए विकास के बारे में न जाननेवाले बुद्धिहीन हैं।

जिस जगह में विश्वास नहीं है, उस जगह ज्ञान के साथ जीवन करना मुश्किल है

साथ नहीं चलने की स्थिति में, जिस आत्मा में सहज शक्ति नहीं हैं,

दूसरी मृत्यु की और सीधा जानेंवाला खराब हुई आत्मा भी बोल रही है।

ये लोग ज्ञान सहित बर्तन करते हुए खराब हुए गये लोग हैं ।

ये अपनी दांतों के किला में बंदी है,

वे भगवान को के निमंत्रण नहीं करते हैं,

जनता को सत्य से लौटानेवाले बुद्धिहीन हैं,

दूसरों के विश्वास के खिलाए करनेवाले,

उसे छुपानेवाले, कि वे जान की कमी में हैं

स्वयं नहीं पहुँचने की मंजिल के बारमें दूर से प्रकट करनेवाले,

गलति को तेज से बोलकर, उसकी प्रतिध्वनि को विश्वास करनेवाले,

जो दुष्ट हृदय से आती है उसी को ज्ञान मानकर प्रकटित करनेवाले मूर्ख है,

बुद्धिहीन होकर स्वयं कियेगये गयी कार्यों के बारे में प्रकट करने केलिये ये सभी लोग आमंत्रण प्राप्त होते हैं,

नाश हेतु अपने कार्यों के लिए

भगवान क हाथ का काम जो है उस सुंदरता को नाश करनेवालों के लिए इंसाफ का पीठ है ।

अपनी सच्चाई को दिखानेवाले बुद्धिहीन को पहचानिए।

खराबहुए फल में रखी ज्ञान हीनता को दिखानेवाले

बुद्धिमान लोगों को देखो बोलकर, अपनी भोलापन को दिखानेवालों को,

बुद्धिमान लोगों को, अकेले बनाने केलिये

बुद्धिमान लोग अपनी पंख पसार कर घास भूमियों को भेजने के लिए रहे बुद्धिहीन को देखिए।

हमेशा यही परिस्थिति रहेगी, यहविषय कि माननेवाले बुद्धिहीन के बारे में ध्यान दीजिए

वे आँख उखाउ कर नहीं देखते, उपनी अस्थित्व केबारे में न सोचनेवालों को

इस मिट्टी के लिए स्थिर रहनेवालों को, किसी भी परिस्थितियों में नहीं समझनेवालों को,

अपनी व्यर्थ संचालन के कारण बडे पर्वत को आसानी से धूमकर आने की इरादा करनेवालों को समझ लीजिये

एक सूखी घास की टाल को अपनी शैली आगे बढनेवाले बुद्धिहीन को समझ लीजिये

क्योंकि ऐसे लोग अपने आपको मर्यादा लेते हैं, दूसरों को सम्मन नहीं देते हैं।

अपने जेब भरने केलिये ही देखते हैं,

अंत्यकाल की चिन्ह की तरह किसी विषय में भी धैर्य नहीं दिखाते हैं।

स्वयं मिलनेवाली सफलता के लिए निकम्मा की तरह तय रहते है,

पालन दिन के लिए किसी भी संपत्ति नहीं रखते।

इसलिए अकलमंद उनको प्राप्त करते हैं

वे फैसला करते हैं,

वे चुन लेते हैं,

पुरस्कार के लिए कोशिश करते हैं,

सत्य की परिशोधन करते हैं,

निंदा को खंडन करते हैं,

हर दिन एक वादा के लिए आगे जाते है।

इसीलिए भगवान का ज्ञान उनके सिर पर पूरे रूप से बरसती हैं

भूमि को शुद्ध करने केलिये

आत्मा के सत्य को जाँच करने केलिये

प्रभु की मजली को समझकर, उनके रास्ते को जानने की ज्ञान प्राप्त होती है।

सभी चीजों को छोडने की ज्ञान भगवान की परिज्ञान उत्पन्न करेगी।

प्रत्येक ऋतुओं में आनेवाले भगवान के आश्चर्य कार्यों को ग्रहण करना।

हर दिन देह को देवालय करने को पूछने लायक होता है।

मूँह को भरने केलिये

हृदय स्थिरता से रहने के लिये

विश्वास क्रियाओं के द्वारा बढने की स्थित हर व्यक्ति ग्रहण करता है।

रचनाकार की नोटः

अंत्यकाल में प्रेम की आधिक्यता

प्यार सभी को हरा देगा ।
प्यार द्वारों को खुलेगा।
प्यार बचायेगा, संरक्षित रखेगा।
ताकत देगा और दृढता देगा।
गले लगायेगा और बचाता है।
प्रोत्साहन देगा और खुशी भी देता है।
प्यार हृदय की खुषी का गीत गायेगा।
प्यार निर्भर योग्य है और विश्वास योग्य भी है।
कोमल है और सीधा भी है।
भूलों के बुमे में फिक्र नहीं करेगी।
डग मगाने को गिनती नहीं।
झूठों की प्राधान्यता नही देता है ।
आत्म की बातों में बुद्धिहीन व्यवहार नहीं करेगा।
प्यार बहुत ही खुशी रहेगा।
दर्द में रही लोगों को खुशी दिलाता है ।
भूखे लोगों को आहार देता है।
घाव हुए लोगों को और दर्द भरित लोगों को स्वस्थ दिलाता है
प्यार, बुद्धि विवेक सहित बातों को विश्वास करेगा।
प्यार, भगवान के आशीर्वाद को लेकर बाँट लेगा।
भगवान की ज्ञान को,
भगवान की सान्निहित्य को बाँटलेगा।
भगवान के प्यार से मिली भाषा की ज्ञान के आशीर्वाद उत्पन्न करेगा।
उन्नत भावों से त्यागी लोगों से मिलकर रहेगा।
प्यार असुविधा में रहनेवाल लोगों को सुविधाएँ देतग है।
चेहरे को खूबसूरत लायेगा।
नरक के किनारे तक भगवान के अद्‌भुत कार्य ले जायेगा।
प्यार प्रायश्चित मन की लोगों के प्रमाणों को पवित्र रखता है ।
अकेले हुई लोगों को, गरीबी लोगों को फिर से दृढ करेगी।
शारीरिक संबंधों को पवित्र बदल देता है।

प्यार अपनी प्रतिस्पंदन को नहीं बदलती है।
दूसरों से अपने तरीके को नहीं बदलती है।
उस समय जिस वास्तव परिस्थिति को रहना है उसको नहीं बदलता है।
रात की वास्तव परिस्थिति को नहीं बदलती है।
जो हमेशा केलिये है उससे रहने के संबंध में,
मनुष्य और भगवान के बीच होनेवाले संबंध में कोई बदलाव नहीं रहेगा।
प्यार – अवरोध के बिना पवित्र करता है।
जो अनुबंध है उसे निश्चय रखता है।
स्वर्ग के धन निधि से, सत्य को छुपाता नहीं और जो चाह उसे दे देता है।
प्यार अनुमान से अतीत रहेगा।
आह्लाद के संबंधित लहर को उठायेगा।
गौरव, आदर जो है उन्हें प्यार से देगा
प्यार माफी मांगे तो यार हद के बिना माफी कर सकता है।
किसी प्रकार की एतराज को पता नहीं देखेगा।
दूसरों को सिर झुकाने की परिस्थिति नहीं उत्पन्न करेगा।
समझौता की वजह से उत्पन्न होनेवाली दर्द या घाव को जगह नहीं देता है।
प्यार हृदय में चक्कर मारते रहेगा।
चेहरे में प्रदर्शित होगा।
बातों के द्वार समझाता है।
शरीर के कार्यक्रम में दिखाता है।
आत्मा के कार्यक्रम में दिखाता है।
मन के द्वारा प्रकट करता है।
भाषाओं के द्वारा प्रकाशित करेगा।
प्यार जिंदगी की सौंदर्य को बढट्पन देता है।
मूल्यवान घर को देकर, उसकी आदर को बढाता है।
मनुष्य को आनंद देनेवाली धरती पर सभी लक्षणों को गौरव देती है।
मनुष्य की आँखों के सामने रखी गयी। अद्भुत से, गले के पास, मूँह के पास, नाक, पैर इतना ही नहीं उनके पास में जो है वे सभी को मूल्य देता है।

ये सब मनुष्य के समझने की रीति में, उनके सामने रखने के कारण वह जाँच करके सजीव भगवान की प्रत्यक्षता केलिये सबकुछ मालूम करता है ।

अंत्यकाल व्यापार की लेनदेन

व्यापार की लेन देन धरती भर घूमते रहेगी।
मनुष्य के आवास स्थान में काम करते घुमते रहते हैं।
सुदूर प्रांतों को जाते बक वक्त भी घुमते रहेगी।
वाणिज्य फल के पाने केलिये चलती रहती है ।
मनुष्य की जरूरतों, को इच्छाएँ संतृप्त करने को चलती रहती है
व्यापार कामकाज – यात्र की सुविधाओं के कारण बदलती रहती है ।
– निर्भर होनेवाली स्थित से बदल जाती है।
– आधारित परिस्थिति की वजह से बदलती है।
मनुष्य के नजरीक रही जगहों केअनुसार रहती है ।
मंजिल को चीजे पहुँचाने के सामर्थ्य से,
भंगवा देनेवाले बोगों की जरूरत के अनुसार भी बदलती है ।
व्यापार के कामकाज में ईमानदारी केसाथ कम रहते हैं ।
नैतिक मूल्यों के संबंधित फैसले कम रहेंगे ।
स्वयं सेवा करनेवाले प्रदेशों में प्राकृतिक संबंध में अधिक नहीं सोचते हैं।
हरदिन की खाता में अधिक रिकार्ड रहने केलिए,
मूल्य को गडबिड करने को,
तेजी से वस्तुको भेजने को,
लाभ वास्तव परिस्थिति में पाने को,
लाभ जितना ज्यादा, बार–बार पाना है इतने अधिक पाने केलिये,
वाणिज्य चक्र मर्यादा से व्यापार नहीं होनेवाले जगाहों को नही जोयेगी ।
बार–बार लेन देन रुकने की जगहों को,
रगडा होने वालों प्रदेशों को,
लूट होने की प्रदेशों को
चोरी रोकने केलिये सिपाही आने केलिये जिन जगहों को नही जाते
पानी पूरे से नहीं मिलने की व्याहों को
चोटे बच्चों को अपनी स्थावरों से
गलत रास्ता में ले जाते हैं ।

वाणिज्य चक्र – पूरे लाभा की स्थिति कहनेवाली तेल से भरी रहती है

उसकी पत्ते कलंकित बूरी धन से लगवाये जाते हैं।

सही प्रकट के बिना धोखेबाजे धन से चलते हैं।

रहस्य में चोरी से कमार्थ धन से व्यापार करते हैं ।

अपनी प्राण के शिवाय दूसरों के बारे में विचार न करनेवाले युद्ध प्रभु के पास रहनेवाले धन से,

कठिन व्यवहार करते हुए जबरदस्त करनेवालो को शिकार होकर गरीबी में रहनेवाले और भूखे रहनेवालों के पास रहते हैं ।

व्यापार चक्र समग्र नहीं है, अपनी टेकों को तेल से भरने केलिये पूरी तरह झूठों से भरकर रहते हैं।

मनुष्य की नाक चिद्र धरती की धूल से भरते समय रोकने की शक्ति इस वाणिज्य चक्रों को नहीं। क्योंकि सांस लेते ही उन्हें मृत्यु प्राप्त होती है।

वह–भीन्न प्रदेशों को मृत्यु व्याप्त होते समय दया दक्षिण्य को जगह नहीं है।

नगरों में, मनुष्य के हाथों में,

कतल करने की भूमि में देखे गये मरे लोगों के की हाथों पर आकर खडे रहेगी।

वाणिज्य चक्र को मृत्यु रेखा नहीं होना चाहिए।

मृत्यु को आमंत्रण करनेवाले या मृत्यु को एक वाहन की तरह भयंकर परिस्थितियों पर खडे होनेवालों से लडाई नहीं कर सकते।

विभिन्न झंडे पर आधारित हुई स्थिति को वाणिज्य चक्र लगे रहते हैं।

गैरों को सौंपने की वस्तु समुदाय पर आधारित वाणिज्य चक्र लड सकते हैं।

यात्रा के साधनों को लाने की कोई जरूरत नहीं।

रक्षा केलिये या अवरोध करने केलिये जरूरी आज्ञाओं को जारी करने की आवश्यकता नहीं।

हमला हुए तो भाग जाने की परिस्थिति नहीं।

वाणिज्य चक्र के लिये प्रशांत व्यापार होना है ।

शांति को प्रोत्साहन देना है। शांति पर रखने की मूल्य को रखना है, उसकी सफलता मनुष्य को उपयोगी में आयेगी।

वाणिज्य चक्र मनुष्य के जीवन को लाभदायक रहते हैं

इसकार्य केलिये सही चीजों को सौंपने केलिये

जो चीजें भगवान को मालूम हैं उनके साथ

मनुष्य के फहदा केलिये ज्ञान समुदाय से लेकर काम करना हैं ।

अंत्यकाल की परिज्ञान

परिज्ञान जो है हमेशा अकल पर आधारित नहीं होगी।
दिन की परिस्थितियों पर कभी–कभी आधारित होगी।
परिस्थितियों के कारण इंसाफ हो जाती है।
अनुभव से भर जाती है।
एक एक प्रश्न के द्वारा फैसला कर सकते हैं।
संदेश से सिखा सकता है।
भगवान से ले सकते हैं।
परिज्ञान मनुष्य के जीवनकाल में प्राप्त होगी।
वह नित्यत्व में बढ कर जायेगी।
वह भगवान के परिवार की परिधि में, चुनने के लिये सिखाती है।
परिज्ञान जो है पूरी तरह से समझौता और विषय से रहेगी।
मनुष्य की समीता को कोई भी जगह नहीं देती है।
भगवान के विचार को घोषणा करगी।
मनुष्य को जो नैतिक मूल्य रहना है उन्को प्रकट करेगी।
परिज्ञान जो है मनुष्य के साथ रहेंगी।
वह आत्मा को और अंतरंग को हमेशा प्रभावित करेगी।
सत्य है और प्रकट करने लायक भी है।
मनुष्य की व्यक्तित्व को पूरी तरह से प्रयोजनकारी है।
भगवान के अंत्यकाल की सूचना रहेगी।
परिज्ञान भगवान से खरीदनेवाली नहीं।
सीखने की आशा अगर ही तो उनको भगवान अपने आप देते हैं।
उसे काम में लाने में होनेवाली मूल्य के अनुसार वह गिना जाती है।
अंतरंग, तेजी से रहते समय, परिज्ञान बाहर निकलती नहीं।
अंतरंग खराब न होते वक्त, आत्मा से वह दबाव नहीं पाते वक्त परिज्ञान बाहर आयेगी।
बुद्धिहीन के समक्ष में परिज्ञान नहीं देखी जाएगी
अकल लोगों के समक्ष में वह गिड्डा रहेगी।
एक समावेश में उसकी स्थान गिनने योग्य रहेगी।

परिज्ञान जो है वह अनंत है ।
वह मानव जीवन काल की हद में नही रहेंगी ।
आत्मा के लिए अंतरंग में प्रार्थना करने से पा सकते हैं।

अंत्यकाल में मानब की मुसीबतैं

मानव की मुसीबतें बहुत अधिक संख्या में हैं।
उनकी सफलता भी अधिक है।
मानव की समस्याएँ उनको घुटने टेक कर रहने की स्थायी को लायेगी।
सांस भी न लेने देती।
उनके हिलावे को दर्द ले आयेंगी।
मनुष्य की मुसीबत उनको हिला नहीं देती है।
जीवन भृति क माने की मौका भी नहीं देती हैं।
उनके हृदय को ठीक से काम करने नहीं देते हैं।
मनुष्य की मुसीबत कभी–कभी स्वयंकृत है
दिन रात आदत हो जाती हैं
मनुष्य के दुश्मन शैतान से होनेवाली ही हैं ये मुसीबतें
मनुष्य की समस्याएँ भगवान से भी होती हैं।
भगवान से निकाल देते हैं ।
भगवान से अंदाजा कर सकते हैं
मनुष्य अपने भगवान को जाच करते समय
भगवान को निंदा करते वक्त
भगवान उनको जो किया है उसे बिरी दिखाते वक्त,
मनुष्य की समस्याएँ प्रकट होंगी
भगवान को उत्पन्न करनेवाली समस्याएँ तात्कालिक या शाश्वत उसकी चाह के अनुसार रहती हैं
मनुष्य की समस्याएँ उनके बर्ताव के अनुसार रहती हैं ।
वे उसके वताव को साक्षी भूत रहती है।
उसका बर्ताव पूर्णरूप से रहती हैं ।
उसके चेहरे पर दिखता है।
उसके अंगों पर, शरीर पर
उसके हाथ, और पैरों पर निर्भर रहेंगी।
मनुष्य की समस्याएँ, मनुष्य के अंतरंग का अनुसरण करेगी।
वक्र आत्मा वक्र चालन को रास्ता निकालती है।

ये, दुश्मन के कामकाज के कारण मनुष्य के जीवन में होनेवाले हैं।
ये आत्मा को, शरीर को, अंतरंग को दर्द देने में स्वतंत्रता से घूमनेवाली हैं।
ये भगवान के मंदिर पर, भगवान से दी गयी समस्याएँ नहीं हैं।
भगवान के मंदिर दुश्मन से पीडित होते हैं।
व्यक्तिगत रूप से भी पीडित होते हैं।

बचाने केलिये सामने करनेवाली रुकावट न होने पर, उसके लिये कारिष भी नही करते तो मुसीबत अयेंगी ।

मनुष्य की मुसीबतों को, कारण समझाने की अवश्यकता है ।
इतिहास को लौटले आने की जरूरत है।
वर्ताव और, मूर्तिपूजा के बारे में, मानव के दुश्मन के कामों से मनुष्य की पीने की आदत के कारण अपने आप खराब करने के विषय के बारे में विचार करना है।

मनुष्य की समस्याएँ उसकी इज्जत को समझती नहीं।
मानव को अपनी इच्चानुसार की बताव के कारण होती है।
भगवान से सूचना देनेवाली घंटा की तरह रहती है।
मनुष्य अपने आप होशियार होने केलिये संकेत जैसे,
और ज्यादा समस्याओं को उत्पन्न करने की सूचनाजैसे वे रहती हैं।

मनुष्य की समस्याएँ भगवान से मुक्त हो जायेंगे।
हृदय परिवर्तन के कारण उत्पन्न होने की आशा करते हैं।
दुश्मन को सामने करने को उद्धेशित होते है।
जीवन विधान में एक परिवर्तन लाने की कोशिश करने वाली जैसी रहती है ।

मनुष्य के जीवन में शराब पीने का गुलामन होकर
वह बहिर्गत न होकर वे रहती हैं।

अनुभव में मनुष्य की कठिनाइयाँ इतनी आसानी से न होंगी।
वे व्याप्त होते वक्त, मजबूत रहती हैं ।
कमियों को बढाते हैं ।
शक्ति की कमी को दूर करती हैं ।

खो गयी चीज के लिए खोजने वालों के विचार ग्रस्त गीत की तरह रहती हैं ।

पहले मनुष्य की मुसीबतें ठीक तरह से मुकाबला की जाती है ।

एक पुट्टा झुकते ही, वह दर्द देते वक्त

एक पुट्टा न हिलाने की स्थिति में सामने कर सकते हैं।

ध्यान से उसे सामने करने से, उस पर पूरी तरह केंद्रीकृत ध्यान रखते हुए सामना कर सकते हैं।

प्रार्थना को, उपवास को ये समस्याएँ वश में आ जाती हैं।

अभिषेक में, स्वस्थ करने के हाथों के सामने झुक जाती हैं।

मनुष्य के ठीक तरह के कोषषों को,

उसके कारण से मुसीबते हिलती हैं ।

मनुष्य की मुसीबतें जो है सिर्फ साधारण ही है।

सिर्फ सर्दी, खाँसी जैसी है।

मनुष्य की कठिनाइया मान को निभानवाली था निकल जोनेवाली हैं ।

वह अपनी ज्ञान से, अकल से उसे पार कर सकते हैं।

इन सारी मुसीबतों को भगवान देख रहे हैं।

अंत्यकाल में एक जाति की दृढता

एक देश की पुष्टी, उसकी समझौते से उसकी अकल के कारण
याने की प्रकटित हुई और दिखाई गयी,
जनता की शांति और संक्षेम पर आधारित दर्शन पर निर्भर होगी।

एक जाति की पुष्टी उसकी आस–पास या पडोसियो से होनेवाली संबंधों पर आधारित है।

पालन में होनेवाली सच्चापन पर, सत्य को ग्रहण करने पर आधारित है।
एक जाति की हठता, पवित्रता पर आधारित जीवन है,
परिवारों पर रखी मूल्य के अनुसार
युवाओं की शिक्षा पर आधारित हैं
एक जाति की पुष्टी, न्याय पर रहे विश्वास पर,
हिंसा और स्वेच्छाचारी के शासन के कारण
ओठों पर बहुत ही झूठ बोलनेवालों को छोडदेने की
आचरण को अपनानेवालों पर आधारित होगी।
एक जाति की पृष्टी उप्तत्ति पर आधारित होगी।
इच्छुकता से काम करने की जनता पर और
घुस रहनेवाले के बिना एक न्याय विधान पर,
होशिया से, कलात्मकता से रहने के प्रधान कार्यकर्ता पर
जिम्मेदारी लेनेवाले अच्ची हृदय से जुडी हुइ द्वार,
के साथ रहने वाले लोगों पर निर्भर है
एक जाति की पुष्टी, केलिये मित्रता को अत्यंत मूल्य वान समझाना है।
स्वतंत्रता को अधिक मूल्य देनेवाली
भगवान को अधिक आदर देना चाहिए।
गरज ने वाले सिंह को जानकर, प्यार करके,
रहनेवाले भगवान को ही साध्य है।
एक जाति की हढता को व्यापार के द्वार को खोलकर रखना है।
कई व्यापार समूहों को निमंत्रण देनेवाले रहना है ।
आचरण में सुंदर टैप की गयी पत्रों को रखना है।

एक जाति की पुष्टी अकेले अधिक समय नहीं रहेगी।
सीमाओं में बंदूक से बचाने के कारण ज्यादा समय नहीं रहेगी।
दूसरे देशों में अपने सोने को छुपानेवाले
लोग और धनिक लोग के रहने से अधिक समय नहीं रहेगी।
फूल अपनी सौंदर्यता के कारण आदर पान की जगहों में
संदर्शकों साफ सुधरे स्थान को दिखनेवाले,
घर में सत्य के बारे में हमेशा चर्चा होनेवाली जगहों में,
जनता की मनोभीष्ट के अनुसार शासन करने की जगहों में,
भगवान की डर सेभरी जगहों में,
उनकी प्यार अधिक मात्र में रहे प्रदेशों में यह शक्ति बढेगी।
एक जाति की शक्ति आनंद पूर्ण जाति को सूचित करेगी।
आनंद से भरी देश,
सत्य मार्ग सहित देश,
मनुष्य के बारे में जहाँ डर नहीं होता उस जगह में,
इतना ही नहीं अपनी पडोसी को अपनी तरह प्यार करनेवाले लोगों के प्रदेशों में रहेगी।

अंत्यकाल में मानव की होनेवाली बीमारी

मानव की बीमारी ज्यादा समय तक रहेगी। वह छोडनेवाली नहीं। वह भूतों से तंग करने की कारण होगी। वे क्रोध को उत्पन्न करती हैं। वे जाकर फिर वापस आते समय द्वार को खोलके रखने की स्थिति के लिए ढूँढती हैं।

मनुष्य की बीमारिया विशेष हैं और स्थिर हैं।

वह बेकार हैं और निश्चित रूप से रहेगी।

वह चलती रहेगी और डर को उत्पन्न करेगी।

मनुष्य की बीमारी – मनुष्य की शक्ति को

उसके अवरोधोंको,

उसकी सहमती को जानती हैं।

मनुष्य की बीमारी – झूठों के कारण, धोखेबाजी के कारण,

हृदय में आत्मीयता में उसकी

उस अवनिती से निर्मित होगी।

मनुष्य की बीमारी – उसके शरीर को, ओर आत्मा को भी होगी।

मच्छर खून को खींचने की तरह,

छिपकाने की तरह का अनजानी में

होनेवाली नुकसान से संबंधित सूचना अनजानी में होगी।

यह बीमारी–मनुष्य की जानकारी के बिना उसको अपमान होने की तरह

उसके मन में फैल होकर,

उसके हृदय के प्रकाश को अंधेरी की तरह व्याप्त करेगी।

मनुष्य बीमारी को समझ लेना है ।

और भी बढने को रोकना चाहिए।

एक दृढ शक्ति की तरह बदलने के पहले ही पहले ही उसे रोकना है।

यह बीमारी जो है आत्म में घुसकर नहीं जा सकती।

भगवान की रक्षा को पारकर नहीं जायेगी।

एक मंदिर में घूस नहीं सकेगी

मनुष्य के लिए बुलावा

मानव की बीमारी से बचाव है
दुश्मनी के कार्य को बदलनेवाली,
यह विखास बीमारी कुछ नहीं कर सकती पूरे रूपसे रहती है।
मानव की बीमारी जो है भगवान से आनेवाली चिन्ह नहीं है।
मनुष्य को संक्रमित अभय के लिए रहने की सूचना नहीं।
अच्छी स्वास्थ्य की चिन्ह नहीं।
मानव की होनेवाली बीमारी जो है वह कृपा के लिए इंतजार करने का चिन्ह भी है।
वह मेरी आत्मा की प्रत्यक्षता की आवश्यकता को दिखायेगी।
एक नए खरार के लिए एक जरूरत है।
मानव की बीमारी, भगवान के चित्त से भिन्न है।

अंत्यकाल में मधुमक्कियों की आवाज

मधुमक्कियों की आवाज, उस परिसर की स्वस्थ विधान को,
उस प्रांत के क्षेत्र फल
उस प्रांत के कामकाज की जानकारी देगी।
मधुमक्कियों की आवाज, गर्मी और सूर्य प्रकाश के बारे में जानकारी देगी।
फूल, शहीद के बारे में जानकारी देती है।
एक–एक मक्की की यात्राएँ, शहीद को इकट्ठा करने के तरीके को, उनकी परिश्रम को, छत्ता के लिए की गयी सेवाओं की जानकारी देती है।
मधुमक्कियों की आवाज – उस परिसर की स्वास्थ्य स्थिति को,
फलदीकरण की स्थिति को,
मनुष्य से की गयी फलवृक्षों की प्रगतणीज्ञ की जानकारी देती है ।
मधुमक्कियों की आवाज – मधुमक्कि की समूह की स्थिति को,
मधुमक्कियों की आवास प्रांतों को खोजने की रीति को,
नई जगहों के विवरण की समीकरण में,
खाली जगहों को पहुँचने केलिये
उडनेवाली मक्कियों की समूह हो सकती है ।
मक्कियों की आहट को धुँए से रोक सकते हैं।
पानी छिडकने होने से, छत्ते को नाश कर सकते हैं।
अच्ची तरह फूलों से भरी हुई पेड से मक्कियों की आवाज को सुन सकते हैं।
फूल से भरी हुई स्थल में,
मधु से भरे हुए छत्ते की नजदीक,
इस आहट को सुन सकते हैं।
बच्चे के खेलने के हैं दान मैदान में आने वाली अवाज
की तरह इस मधुमक्कियों की आवाज रहती है।
पत्तर के बीच जानेवाले प्रवाह से आनेवाली आवाज,
पेडों को काटने की क्रम में आरा से आनेवाली ध्वनि,
बहुत लोगों की भीड से रास्ते से आनेवाली आवाज,

तेजी से घुस जोनेवाले यंत्रों से आनेवाली आवाज जैसे आवाज है। मधुमक्कियों की आहट–बारिष में नहीं सुनाती है, रात में नहीं सुनाती हैं।

खतरनाक तूफान में नहीं सुनायेगी।

दीप की रोषिणी लाल रंग में रहते अभय नहीं सुनायेगी

मधुमक्कियों की आहट्–मनुष्य को सहमती आवाज होनी है।

भगवान को पसंद रहनी है।

अपनी सृष्टी की भलाई के बारे में संकेत भी हैं

अपनी सृष्टी जीव के लिए इंतजार करते हुए, भगवान से सबंध रखने की एक सूचना है।

अंत्यकाल में धरती पर गिलहरी

गिलहरी अपनी आवास स्थान को प्यार करते हैं।

अपनी आवस प्रदेशों को ठीक कर देते हैं।

ज्यादा मिलने से छुपाके रखते हैं।

जब जरूरी होगी तब मिलने की तरह छुपाके रखी चीजें प्राप्त होते हैं।

समृद्धि से प्राप्त होते ही रोक जाते हैं।

मनुष्य गिलहरी सीखने को बहुत है।

भविष्य में जो जरूरी है उसे खराब नहीं करते।

अपने को प्राप्त हुई खाली प्रदेशों को ध्यान से बचाते हैं।

तूफान आदि से अपनी परिवार को ध्यान से बचाते हैं।

जरूरत में कोई आकर पूछते देने को ध्यान देते हैं।

जरूरत होते ही ध्यान से परिशीलन करते हैं।

उनके व्यवहार, उनके मन, उनके आत्मा में विचारों का जानकर, उनके पाप विचारों को जानकर, उनके पाप विचारों को जानकारी रहेगी।

एक ही जगह छुपाने में काफी नहीं मानते हैं।

अपने जीवन की जरूरी चीजों को दूसरों को बिना दिखाके, नहीं ले जाने की तरह छुपाते हैं।

उनके जरूरतों को पारकर रहने की तरह, अकाल न आने को देख लेते हैं।

जबरदस्त से न लूटलेने की तरह सुरक्षित रखना वे जानते हैं।

खराब न होकर रखने की तरह,

जरूरत होते ही, भूख की अनुकूल आहार पाने की तरह छुपाते हैं।

गिलहरी उधर–इधर घूमते हैं।

उनके होनेवाली उपद्रवों को सामने करने की तरह वे रहता है, अभिवृद्धि करते हैं।

उचित ज्ञान से रहता है।

गिलहरी प्रत्युत्पत्ती को अनुकूल, अभिवृद्धि होते हैं। बढते हैं। ग्रहण करके, उचित विधान में व्यवहार करते हैं।

गिलहरी उछलते हैं और समथ के अुकूल मिलनेवाली फल खाते हैं।
ढूँढते–ढूँढते आनंद देनेवाली आहार को छुपाके रखते हैं।
प्रेमपूर्ण भगवान उनके लिए तय किये गये सब को ग्रहण करते हैं।
एक चिडिया के गिरजाने को भी ध्यान से देखनेवाले प्यारे भगवान
सृष्टि में हर एक प्राणी पर अपनी कृपा को दिखाने वाल भगवान,
अपनी स्वरूप में रहे हर एक को, एक पुरस्कार को, छुपा के रखे भगवान,
हर एक को प्रारंभ करने की आज्ञा देनेवाले,
सहमती से अपना घर पहुँचने के लिये
पूरे करने को चाहते हैं।
हर जगह को तय करके,
हर स्वस्थ्य को पाने के लिये
तय किया और उन के लिए, भगवान स्वागत दे रहे हैं।

अंत्यकाल में वश में आनेवाले सागर

समुद्र का वश में आना जो हैं वह भगवान की शांत स्वभाव को दिखा रहा है।

वह धरती की चारों ओर से आनेवाली हवा के कारण होगी।

सागर का वश में आना जो है, बडी भंवर की सूचना होगी।

मनुष्य की निर्माणों को जाच कर सकते हैं।

तूफान में पकड गये जहाज के बारे में विचार करने की इच्छा आयेगी करेगी।

सागर की वश में आने की स्थिति, किनार की तेज से छूते हैं।

सभी प्रकार के डरों को उत्पन्न करेगी।

अपनी इच्चानुसार बढेगी या कम होगी।

सागर की वश में आना जो है, प्रशांत और, धीरे से गुजरना रहेंगे

किनारे पर शाम के लाल रंग से रहेगा।

गर्मी को कम करने के लिये,

बाहर आने की इच्छा करनेवाले तैराक को डुबा देती है।

जल प्रवाहों को एक से दूसरे की मिला देते हैं

झाग को किनारे से अंदर ले जाते हैं।

सागर की वश में आना जो है

जीवन के सामर्ध्य को बढाके रखते हैं।

मनुष्य मे उत्पन्न कीगयी अशुद्धता को धोकर, ठीक कर सकते हैं।

मनुष्य के छुपाके रखनेवाले को लेकर, छोड सकते हैं ।

मनुष्य से छोडी गयी चीज को जमा करते हैं ।

मनुष्य को पुनःनिर्माण करने के काम में आनंद प्राप्त करते हैं ।

दूर प्रांतों को मनुष्य के समीप में लायेंगे।

सागर की वश में आना जो है

वह मनुष्य को संपत्ति देती है।

देश–विदेशों के आहार को पकडेगी।

मनुष्य जिसे मूल्य वान सोचते हैं उसे गहराई से लाकर देती है।

मनुष्य के भोलापन को समझती है।

गहराई में रखीगयी चीजों को लाकर सोंप देती है ।

जो लोग सन्नद्द नहीं उनको पारकर जाती हैं ।

मनुष्य के लिए बुलावा

सागर के वश में आना जो है,

वह मनुष्य को देखने केलिये आश्चर्य रहेगा।

नील गगन की छाया में आराम के लिये आधार रहती है ।

हवा को नही रोको तो वह बहुत शान से, प्रतिष्टा से रहेगी ।

वह घूमते घूमते आगे ले जायेगी।

पानी में डुबाती है और ऊपर उठाती है।

समाधी होजाती है और वश में आती है।

यह दिन के रंगों में शमिल होती है ।

सहज प्रकाश को बढायेगी।

सागर के पानी के बूंद की सहज रोशीनी प्रकाशित होगी ।

वह रात बोलकर स्त्री को दिखायेगी।

रात जो है वह कडी श्रम, और थकावट का चिन्ह है।

जो बातें फिर से प्राप्त नहीं होती उनको छोड देती है।

मनुष्य की जाननेवाली बातों को इकट्ठा करेगी और छोड देगी।

अधिक सुंदरता को प्रतिबिंबित करेगी।

सुंदर रंग अगर बडी मात्रा में आयें तो उनको आँखों के सामने रखेंगी ।

उस का प्रवेश, और निकालने को दिखायेंगी ।

दिन का प्रकाश के जाने के लिये और, गायब होने के लिये सुविधा देगी ।

सागर सकेवश में आना जो है, भगवान की प्रतिष्ट का चिन्ह है ।

मनुष्य के वश में नही रहेगी ।

अधिकार, शक्ति, दृढता आदि को दिखायेगी ।

भगवान की शक्ति को दिखायेगी ।

भगवान के विरोध, अपनी रक्षण के अभाव में साहस करनेवाले लोग मूर्ख है।

भगवान से डर कर रहनेवाले लोग अकलमंद हैं ।

अंत्यकाल में सागर जल की सफेदी

सागर जल की सफेदी जो है, सभी को नाजूक रहेगी।
सागर जल की सफेदी जल को तेज से बहने देती है ।
नरकट को ढूँढेगी।
अपनी अस्थित्व को बचाने के लिये आगे चलेगी।
सागर जल की सफेदी गहंराई जगहों में बहती है ।
कई जगहों में इकट्ठा होगा।
कई जगहों में अदृश्य हो जायेगा।
सागर जल का चमक ते हुए जाल से मनुष्य की पकडने की संपत्ति पर निर्भर है ।
मनुष्य से फैसला किये गये मूल्यों से लिया जाता है ।
लहरों के कारण सहज क्षेत्र के कम होने के कारण होगा ।
बलपूर्वक बहाव के साथ रहनेवाली अनुबंध बहावों के समक्ष में,
लहरों की शक्ति के बिना, अधमस्थिति में युद्ध करेगा।
प्रवाह की तेजी कम होते ही नदियों की ओर–चलेगी।
सागर जलों पर रहनेवाली सफेदी, उचित ऋतु में
नरकट पर अंडा रखते वक्त यानी
प्रवाह के चलने की समय में, उसके साथ नहीं है।
यह मनुष्य के आहार को सहयोग देनेवाली नही है ।
सागर जलों की सफेदी चमक, धनवालों की और, उपेक्षित लोगों की जगहों के छुयेगी नहीं।
अपनी सुविधा की परिस्थितियों के कारण वुलाने की स्थितियाँ नहीं रहेंगी।
मनुष्य के स्वार्थ से या घुणा के अनुसार नहीं चलते है।
अक्रम विधान से चलने केलिये उचित जीवन विधान नहीं रहेगी।
उनके मुँह से आनेवाली अच्ची बातें, सुंदरता के भिन्न रहेंगी।

इसीलिए कम लोग, अधिक लागों को सताते हैं ।
कुछ लोग पुनः जन्म को आतंक करते हैं।
कम लोग अपने जेब को भर लेते हैं।
जो बाकी है उसे वे इकट्ठा करलेते हैं।
नदी के मुख द्वार में रहे बगीचे को सार पूर्ण करने की कोशिश करनेवाले जमा करते हैं।
इसीलिए इस कम लोग अपनी कोशिषों की तारीफ़ करते हैं।
वे जितना चाहते हैं वह सब लेते हैं।
आखिरी तक खींचने की अवकाश भी लेते हैं।
कुछ लोग जाल को अंत करने की कोशिश करते हैं।
अतः इसके पहले कभी नहीं देखे सागर की विशेष प्रांतों को हाथ की ऊँगलियों पर गिनते वक्त 3 या 4 बाहर निकलते है।
वे संपत्ति की पागलपन के लोगों के हृदयों को बलहीन न करते।
फिर भी नदी तब के प्रांतों में रहनेवाले इंतजार करते हैं।
अधिक संपत्ति मिलने की, इच्छा से भरकर
प्रवाह के तेज चलने के दिन के समय
लाभ परंपरा से आ रही प्रदेशों में लाभापेक्षा से खोज सकते हैं।
उस प्रकार से एक जाति की संपत्ति नाश हो जायेगी।
नदी के किनार प्राप्त संपत्ति कम लगते समय,
धरती पर और कहीं पर नहीं मिलते वक्त
भविष्य में मूलधन की तरह इस्तेमाल न होनेवाली चीज,
इसके पहले एक बार मनुष्य को मदद देगी समझकर उन की यादों के साथ वह रहती है ।
अहो! मनुष्य का लालच समीप में होनेवाली चीजों के कारण
अभिवृद्धि करने के कारण,
सुरक्षित रखने के कारण,
समझौते के ज्ञान के कारण,
समृद्ध प्रदेश मनुष्य को संतुष्ट नहीं देते हैं।
समृद्ध की जगहें,
दूर सागर पर रहते हैं ।
सागर की बतखें अपनी जुड को चलने के अवसर

डाल्फिन आनंद से घूमनेवाले प्रदेशों में
सील्लू, उधर पत्तरों पर अपने बच्चों को रखनेवाले प्रदेशों में
दूर प्रांतों में वेल मछलियाँ अपनी प्रतिष्टा को दिखाते हुए घूमने की प्रातों में,
मुँह खोलके अपनी आहार को बाँध कर
समुद्र की चिडियाँ अपनी पंख पसार के उडने की जगह, बडी और छोटी प्राणियों को निगतते घूमने की प्रांतों में संदर्शक देखते ही, ऐसे प्रकाश में घूमनेवाले जीवराशी जहाँ रहती उस जगह पर रहेगा ।

अंत्यकाल में मनुष्य की चिल्लाहट

मनुष्य की चिल्लाहट उसके घर तक परिमित रहेगी।

वे नित्यत्व में बहुत चोटी अणु की तरह हैं।

एक तारा की चमक से भी चोटी है।

कडक के बिना आनेवाली बिजिली की रोषिणी से भी चोटी है।

मानव की चिल्लाहट उसके कान को थकावट दिलाते हैं।

उत्तर विचार करते समय कान की ड्रम को तकाव देते हैं।

उन्हें बार–बार कहते रहने के कारण कान ड्रम थक जाती हैं।

मानव की चिल्लाहट को एक नियमित समय की तालिका में न रहना चाहिएं

बिना अनुभव की स्थिति आना नहीं चाहिए।

हलकी बातों को लेकर आना नहीं चाहिए।

होशियारी आदमी चिल्लाहट को छाडे देते हैं।

वे बुद्धिहीन को हमेशा आश्चर्य में रखती हैं।

जरूरत न होने पर माफी नही माँगते हैं।

एक रंगमंच से आनेवाली आवाज की तरह रहती हैं।

मनुष्य की चिल्लाहट, दूसरों से और भी बढ कर दी जाती है।

आवाज की प्रतिध्वनि नालायक बनेगी।

वह अपनी विशेषता को खो जाएगी।

इतना ही नहीं उस के उपदेश को खराब करेगी।

कुछ जान देने वाली चिल्लाहट आवाज को कम देगी।

उसकी विरोध आवाज आयें तो उसका कुछ फायदा नहीं रहेगा।

अनेक दूसरे आवाज आयें तो ही उस ध्वनी में इस आवाज करे सुन नहीं सकते हैं।

थे चिल्लाहट उन्नत स्थिति में रहते समय सच्ची नहीं लगती, बुरी रहे तो मूल्य रहित होती हैं।

बडी विषय को हम सुन सकते हैं, जो बुरी हैं उनको हम उपेक्षा करते हैं।

मानव की चिल्लाहट दिन के अंत तक कान खराब होते हैं।
उसके बजाय जो काम हलके हैं वे अंदर नहीं चलते हैं ।
चोटी–चोटी विषयों को भी गुस्सा करने की अवकाश है।
मनुष्य की चिल्लाहट, क्षमा खो जाने की स्थिति का चिन्ह है।
पूरे आंदोलन का चिन्ह है,
नियंत्रण के बिना रहे क्रोध का चिन्ह है,
दूसरे व्यक्ति की बातों को नियंत्रण न करने की हालत है ।
वह अपनी मर्जी के अनुसार बलाव करने का एक चिन्ह;
दूसरों को पार करने केलिये किया गया संदर्भ हैं ।

वह अपनी अभिप्राय सुनाने की एक पद्धति, किसी प्रकार के उपयोग के बिना बालने की रास्ता, दूर प्रांतों तक आवाज सुनाने की रीति में बात करने का चिन्ह।

मनुष्य की चिल्लाहट उसकी व्यक्तित्व को कम करेगी।
राजा के पास वह काम नहीं अयेगी
इंतजार कर ने वाले राज से यह आवाज नहीं करना।
इंतजार करनेवाले राजा को इसे इस्तेमाल नहीं करना है,
जिंदगी बरबाद होते समय
ये चिल्लाहट एक सूचना की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं।
वह एक निमंत्रण की जैसे इस्तेमाल कर सकते,
जो खो गये है उसे खोजाने में इस्तेमाल कर सकते,
सुननेवाले अधिक संख्या में इकट्ठा होते तो इसे इस्तेमाल कर सकते, पर मनुष्य की चिल्लाहट विवाद के लिए नहीं है ।
एक बच्चे को असुविधा देने के लिये नहीं।
एक व्यक्ति के खिलाफ अभियोग करने के लिये नहीं।
मनुष्य अपनी ओठों से रोखी बाते करने के लिये यह काम में नहीं आयेगी।
इस मनुष्य की चिल्लाहट जो है, आखिर कोशिश होनी हैं ।

मनुष्य के लिए बुलावा

मनुष्य की चिल्लाहट भगवान से नजदीक रहने के लिये काम आती हैं।
भगवान के डर को पैदा करेगी।
भगवान के कान तक पहुँचने वाली एक संदेश को,
देवदूतों से भरे जगह पर सुना सकते हैं।

अंत्यकाल में मनुष्य के हाथ में गेंद

मनुष्य अपने हाथ में रहे गेंद को मनुष्य मारेगा।

इधर उधर मारेगा,

कोई भी उसे पकडने की कोशिश नहीं करते हैं,

कोई भी उसे लेने की कोशिश नहीं करते हैं,

दूसरों को अच्छा रहता है ।

मनुष्य का गेंद जो है एक रोटी के ऊपर आग लग गये काँटों की तरह रहेगा,

अंगूर की रस पर उड रही जहिर की तरह रहेगी।

जीवन की नदी पर बिछी हुई मृत्यु की चाया की तरह रहती है ।

मनुष्य के गोला का खेल जो है श्रम को दूसरों पर फेंकने की तरह है।

पवित्रता के द्वार बहुती कूडे पदार्थ जैसा हैं।

कोमल अंकर पर बरसने वाली बर्फ की तरह है

कीचड में फेंकी गोला की तरह घुस जायेगा

पानी के रंग में मिलजाने की तरह रहेगा।

बडी मात्रा में बर्फ में पिघल जा जानेवाली बर्फ की तरफ अशुद्ध रहेगी।

भूमि में मिलनेवाले मनुष्य के खून की तरह रहेगा।

मनुष्य का गोला, उत्तरदायी के वश में रहेगा,

भगवान के डर के वश में चलेगा,

एक पर्वत से नीचे दुलकनेवाली बर्फ की ढेल की तरह रहेगा।

आखिर तक जाते वक्त चीजों को तेज से चलाता है।

अपमान से भरी संदर्भोचित गडबिड से मिली स्थिति रहेगी।

बायें और दायें, ओर इतना ही नहीं आगे भी जोनेवाला

गोला ऊपर और नीचे भी हिलता है ।

मनुष्य के लिए बुलावा

एक चोटी सी डिब्बे में रहनेवाली टैंबांब की तरह है,
आग पर रही टिन में वह पूरे सील में रही है।
बडी गरम पानी के साथ एक गिलास में बंध कर दी गयी।
वह अज्ञात प्रदेश में अचानक पिघल हो रहे गोला की तरह रहेगा,
मनुष्य का गोला जो है, कलंकित बताव को याद करेगी।
जो ठीक से अभिवृद्धि नहीं पाई
पूरे रूप से जाँच नही की गयी
अनुकूल परिस्थितियों में मिली चीजें रहती हैं ।
कुछ दूर तक नियंत्रण में रखी गयी भावनाओं को याद करेगी उसके मन के विचारों के साथ रहनेवाली भावानाओं के
आंदोलन के साथ रही मूर्ती की भावनाओं से,
धन के लिए दुराशा की भावना से है।
मनुष्य के विचारों के खिलाए उछल पडेंगी
कमजोरी हालत में
विचारों के भिन्न, खोजानेवालों को वापस इकट्ठा करने की पद्धति में
लाभ छोडने की तरह रहेगी।
मनुष्य के विचारों के खिलाए गेरों के लिये अनुकूल जीवन से रहेगी।
गोला मनुष्य के खिलाए उड जायेगा।
सच्चापन को, कीर्तिपद जीवन के खिलाए उछलेगा,
सभी से मिलकर रहते वक्त, और अकेले रहते वक्त,
संपत्ति में और संतोष में भी उसकी गति रहेगी,
मनुष्य की स्वतंत्रता को गौरव न देकर, भगवान से की दीगयी स्थिति को पार करके गोला उछलता हैं ।

अंत्यकाल की रेगिस्थान की आवाज

रेगिस्थान में आवाज को, मनुष्य की आवाज से अलगकर समझना मुश्किल है।

उसके अस्थित्व से अलग करना मुश्किल है।

उस संदेश को समझना मुश्किल है,

दूर से आवाज करते समय,

विवरण से नहीं बोलें तो

लापरवाही कानों में आनेवाली आवाज को समझना मुश्किल है।

जंगल की आवाज बहुत बढिया संदेश को दे सकती हैं,

विचार करने लायक, परिवर्तन लानेवाली,

भगवान को पसंद देनेवाला एक संदेश दे सकता है।

अरण्य के विलाप जो है मूल्यवान विचारों को पैदा करता है।

पूर्व में जो हुई है, उनको वर्तमान में बदलने केलिये जबरदस्त कोशिश करेगी।

उस दिन के आनंद की समग्रता को जाँच करेगी,

अंत्यकाल में मनुष्य के आवसों की स्थिति को आँखों के सामने रखेगा।

अरण्य का विलाप, सोनेवालों को, ऊँधनेवालों को जगायेगा।

वे देखे बिना आगे जाने वाले जगहों को देखने की स्थिति लाते हैं।

काम से भरे लोगों को और सोचने की सुविधा न होनेवालें को,

लालची लोग और इकट्ठा करने वाले लोगों को,

स्वार्थ लोगों को, लूट लेनेवालों को,

चोरों को और लूटलेनेवालों को,

बचत रखने के सभी लोगों को

उनके मूल्यों पर, उनके मूल्य को बढाने में मन लगानेवालों को जगायेगी।

संभारण ठीक तरह से न करने के कारण हुई कृत्रिम कमी के बारे में विवरण देगी।

दूसरों के खो जाने के बारे में वह बात नहीं करेगी।

सामान्य रूप से बुरी को ही प्रकटित करेगी,

उसके पडसों से सही व्यवहार न करनेवालों को

सामान्य रूपसे प्रकाश में ले आयेगी।

अरण्य में विलाप जो है अकल से बात करेगी।

भविष्य को दृष्टी में रखकर करने के कार्य के अनुकूल, रूप में,

विरोध न आने की ध्यान से, अगर उपदेश न पसंद होते तो,

या सुननेवाले अच्ची तरह बैठें तो,

अरण्य में चिल्लाहट जो है आसानी से रोक सकते हैं,

परिहास से पैदा हुई भवन में,

सहमत न करनेवालों से मिलकर रहने के कारण,

सही योग्यता के बिना पैदा हुए भवन में,

काम में न आनेवाले लोग और ठीक विधान में न रहनेवालों के द्वारा पैदा हुए एक भवन में

झूठ अधिक होने के कारण से, सत्य परिहास पात्र होते वक्त आवाज बंध हो जा सकती हैं ।

इस संदेश पर ऊपर के कारणों के द्वारा उपेक्षा नहीं रख सकते है,

उसे समझने के पहले ही, यह संदेश मूर्खता में मिल जायेगी।

अगले सुबह के लिए सन्नद्ध की गयी संदेश उस रात को शायद रोक जायेगी।

धैर्य न करनेवाले सिपाही समझ सकते है।

स्वयं जानकारी जो है उसे प्रसार करने की उचित मौका उनको अपनें प्रयोजन के लिए नहीं समझकर

इसीलिए जो सुने हैं उसे दुबारा नहीं सुनायी गयी

उस रात में प्रकटित किये लोग या दिन में प्रकटिता लोग किये फिर नहीं सुनाते,

वह मनुष्यों के द्वारा सताथे गये लोगों की आवाज नहीं, वह शैतान की घमंडी अवाज है।

वह भगवान का अनुकरण करेगी।
प्रवक्ताओं के मुँह से कह गयी भगवान की आवाज होगी।
मनुष्य को बरबाद करने केलिये शैतान की आवाज भी होगी। या
भगवान से मनुष्य को दी गयी नित्यजीव के संबंधित सृष्टी की उनकी महिमा होगी।

क्योंकि ऐसे ही दिनों में आज मानव आवस कर रहे हैं।
होनेवाले अंत्यदिनों के बारे में मनुष्य को सूचित किया गया जमये प्रक्ताएँ अपनी प्रकटन के द्वारा भगवान की इच्चा को प्रकटित करने से उन्होंने सुनी या ग्रहण किये

उनकी स्वर उनके प्रवक्ताओं की मुँह से सुनाई पडी
निश्चित रूप से गलती के बिना
भगवान की परिशुद्ध लेखन को याद करने में,

ज्ञान से, अकल से मनुष्य जाति को आगे ले जाते रहते और सूचना करने केलिये वह नियमित किया गया।

भगवान की कुंज में रहे मानव सजीव होकर अपनी वधु संघ के लिए वापस आनेवाले ईसा मसीह का सामना करने केलिये सन्नद्ध होते हैं।

अंत्यकाल में पुनरुज्जीवन प्राप्त करने केलिये सवाल

रचनाकार से लिखागया विशय ।

a). यह अंश पहले अपनी विषय के रूप में दी गयी। यह सभी के लिये प्रकटित करने को प्रभु की सहमती हुई।

b). कोटेशन चिन्ह में जो है, उसको भूमिका के रूप में लेना हैं इसे प्रभु ईसू बोल रहे हैं।

रचनाकार के सवाल इटालिक्स में हैं, उन्हें पहचानने को अनुकूल है।

1. आपके एक संध में उत्साह पाने केलिये प्रभु आपका शिष्य होने केलिये जरूरी स्थिति के बारे में जानना मुझे अधिक पसंद हैं ?

उत्साह जो है वह स्तुति और आराधना से
मेरी जनता पाती है । बहुत पवित्र जगहों में,
नालायक निरूपित होकर, प्रवेश केलिये अयोग्य होकर, अब्रहाम के भगवान को विज्ञापन करनेवाले लोग की जगहों में रहेगी।

2. आग को शोभित करना बहुत मुश्किल लग रही है। क्यों कि प्रभो हर व्यक्ति, बिकी, इस्तेमाल न होने की चीजों को आग से जलाने को कोशिश कर रहे हैं।

सिर्फ, मनुष्य की कोशिशों के द्वारा ही आग शोभित न होगी।
मेरी आत्मा की ज्वाला से ही आग जलेगी।

भगवान की सहायता लेकर,
मेरे संघ मे सभी विषय अच्चा रहते समय,
मेरा नेतृत्व सहमती के योग्य होते तो,
कार्यों में नेतृत्व होशियार से रहे तो
नेतृत्व में सब लोग भगवान के डर के साथ रहे तो, अपनी
जीभ पर दूध रहे तो, दांतों से चबाने को माँस रहे तो

मेरी जनता, अपनी जीवन में जो कमी है ओ
और अभी तक जो नहीं थी उसे समझकर
उसके लिए ढूंढने पर,
राज्य की चाबी निकट से रहकर
उसे अपनाने की परिस्थिति में,
मेरी जनता भगवान की चित्त को समझकर उसे पाने केलिये इच्चा रखे तो
मेरी आत्मा के फल ग्रहण करके वे अपने जीवन में आचरण करें तो
मेरी आत्मा को स्वीकृत करके उनके विचारों को स्वीकृत करके
विश्वास के लिए जो आहत साक्षी हुए हैं,
अनादिकाल में ज्ञानी से बोलते हुए भगवान के बारे में श्रद्धा से रहे तो, आग शोभित होगी।

3. मेरे प्रभो,
मेरा आग कैसे शुरू होगी, इस को मैं नहीं जनता हूँ।
मेरे नेतृत्व में ऐकयता भाव से रहकर,
आग के लिए प्रार्थना करने की एक ही प्रार्थाना से रह कर,
आग को ग्रहण करने की मूँह होते तो,
उसके लिए अधिक आशा से रहकर,
दूसरों की इच्छुकता से पाये हुए उत्साह के लिए
हृदय से उस को आचरण में रखे तो,
प्रकट करने में ध्यान से रहकर,
व्यवहार में सत्यमार्ग को अपनाकर,
आत्मा की निश्चयता होने से यह हो जायेगी।
उस तरूण के बाद भी कोशिश करने के कारण,
मेश आगे जाने के लिये शुरू होने देखकर,
अपनी पडोसी प्रदेशों से तंग हुए लोग या न चिल्लानेवाले अगर नहीं हो तो,
परिशुद्धात्मा के लिए इंतजार करनेवाले और एक परिशुद्ध पहाड के लिए जाते वक्त,
वे अपनी कोशिश को आगे न लेकर, अपनी शपथ को छोडते ही
स्वातंत्रता पालन करने के प्रदेशों में आग नीचे आयेगी
मेरी आत्म उसे निमंत्रण करते ही, साक्ष्य देगी।

ज्ञानी लोगों को प्रभु के लिए इंतजार करना मालूम है ।
पवित्रता कहाँ उतरती,
कहाँ भगवान की डर अधिक रहेगी,
पाप जूहाँ दृढ रहती है
कहाँ व्याप्त न होगी,
जो पकडीगयी लोगों को भेजनेवाली है,
फिर से प्यार दिखानेवाले भगवान से
संबंध रहने से आग शोभित होने की बाते समझना है।

3. A. उसे किस प्रकार पालन करे तो उसी प्रकार बढेगी।
आग को मन बदलाव, और धन्यवाद कहने की तेल हैं ।
यह बढते ही अग्नी प्रकाश वान हो जायेगी।
यह आग एक बडी भट्टी होगी।
ठीक करनेवाली अग्नी, जिस तरह जंग को निकलती है उसी तरह रहती है ।
ये कम होते ही अग्नी कम हो जाना शुरू होगी।
बडी प्रकाश न होगी,
सिर्फ आग का कण ही जलता रहेगा
किसी के देखे बिना बुझ जाते हैं ।

4. शक्ति खतम होकर, जनता जल कर में रहे लोगों की तरह रहते हैं ।
प्रभु विचार करने से लगता है कि बहुत ही कम समय में
क्यों उत्साह और प्रतिभा दिखाई देते हैं ।
उत्साह जो है बढ़ना और आग चलना है, इसके लिए इंधन चाहिए।
उत्साह बस जाना जो है वह संध के लोगों की थकावाट के कारण से नहीं,
उसकी जन्म में जरूरी नई इंधन खतम होने के कारण ही है।
विशाल धरती पर यात्र कर रही चमक की तरह,
वह संघ और उनके प्रांतों में आगे जाते रहेगी।
सजा करने की तरह सभी को इकट्ठा करके घुमाव, बदलाव को ध्यान से देखने केलिये

उत्साह के साधन हर एक संघ को क्रम में जाने के लिये,
मेरे संघ को अब भी ज्ञान, विवेक को पाना चाहिए।
आग का कण बचगयी संघ से पहले पाना चाहिए।
आग की ज्वालएँ दिखाये बिना, गर्मी को भी दिखाये बिना रही स्थिति को समझना है।

फिर दृढ अग्नी को पाने के लिये, वह साधन किसी भी प्रकार से कोशिष न करने की स्थिति में
देरी न होकर ज्वाला को बढाने की परिस्थिति चाहिए।

5. क्या उत्साह के लिए आगे जाने की कोई रास्ता है ?

''हाँ,
उत्साह जो है गॉव के प्रांतों में चलती है,
गहराई पानी में कूदने को,
ठंडा प्रदेश और सूखा प्रांत,
नमी प्रांत और मरूस्थल में
झाडों में और ऊँचे प्रांतों में
छोटी सी कुटी में और बडे भवन में भी होगी।

5.A. क्या वह तेरे अशिर्वाद के संबंधित एक ही कार्यक्रम है ?

''हाँ,
उत्साह जो है आशीर्वाद के संबंधित विशेष कार्यक्रम है।
चमन करने की विशेषता होनेवाला एक नेक कार्यक्रम हैं,
कालगमन में निराला हैं ।
पूरी आत्मा ठीक है यह बात मालूम होने पर
उत्साह स्थापित होगी।

जो अपनी विश्वास से आगे देखनेवाले हैं उन लोगों के लिए उत्साह प्राप्त होगी।

5.B. क्या वह अभी भी भगवान का एक अद्‌भुत रह गया हैं ?

''उत्साह अब तक प्रकटित हो गयी इस के कारण वह अद्‌भुत नहीं है। लेकिन, अंत्यकाल की सन्नध्दता के लिए वह भगवान के हृदय का समीप हुई है। भगवान के नजदीक होनेवाले लोगों की समूह के लिए वह हुई हैं।

5.C. क्या उत्साह की स्थापना के बारे में तुम प्रवक्ताओं से बात करते हो ?

''प्रवक्ताओं के सवाल पहुंचते ही प्रतिस्पंदनायें रहेंगी ।

सवाल बढते ही प्रतिस्पंदनायें भी बढती हैं।

6. हम आपकी जनता है का हम से तुम कुछ चाहते है ।

वह न होने के कारण हमें निरूपयेग लोगों के समान मानते है क्या?

''हाँ, जो छोडीगयी वह बहुत मुश्किल है लेकिन असाध्य तो नहीं। वह संघ को हिलनेवाली है।

समझकर मेरे संघ को घुटनों की प्रर्थना को आना चाहिए।

वह मेरी आत्मा से आ गई सुझाव हैं,

उसे किस प्रकार होना है उसको एक समूह में कैसे रखना है,

मेरे संघ की सेवा के नाम से वह मूल्य प्राप्त करेगी।

प्रेमपूर्ण भगवान, संघकी एकता के लिये

सभी प्रकार के नाते को,

चेलापन को, सहवास को,

कोशिश केलिये और इच्छा केलिये

पिता, पुत्र और परिशुद्धात्म एक ही समान रहते समथ

प्रभु की वधु कलंक रहित सफेद गौन से सजाई जाती है ।

अनैक्यता जो है वह भगवान का नहीं।

वह पाप गिन गया है।

वह टुकडे होते ही, टूटे होते ही,

अलग होते ही, गुगुनाहट सुनाई देती है ।

बाधाएँ प्रकटित होगी,

उनकी संरक्षण में रहे झुंडों से, मेरे संघ का

नेतृत्व अपमान हो रहा है,

उनकी समग्रता के अभाव से उनके भक्ति तत्व और भक्ति उनसे निकाल देती हैं।

7. प्रभू, आप हमारे हृदयों को जानते हैं। हमें इस्तेमाल करने के लिये, दूसरी क्या कोई बात हैं ?

''हृदयांतरंग में जो है वे पूर्णरूप से भगवान जानते है।

उस दिन की परिस्थितियों में अपने काम हो, अपनी बात हो मनुष्य किस प्रकार मानते हैं वे सब जानते हैं।

8. प्रभु! हमें आप से उत्पन्न होनेवाली उत्साह में पूरा डूबने को, हम किस प्रकार योग्य हो सकते हैं ?

''एकता में आगे बढते भगवान से विलाप करने वाले होने के कारण''

9. यहाँ न्यूजिलांड की हामिल्टन चर्च में इस उत्साह केंद्रीकृत होना है प्रभु या संसार में होनेवाले सारे संघ संघों में होना ?

''मनुष्य की घूमने वाली सभी प्रदेशों में, मेरी आत्मा का संचार एकता से, स्वतंत्र से सभी प्रदेशों में रहेगी।

10. (अनुबंध) प्रभू तुम्हारा साधन आगे कैसे जायेगी? हर नये प्रदेश में उत्साह किस प्रकार अभिवृद्धि होंगी?

''इसीलीए वह से नीचे आ गयी।

सवाल की जाची हुई है।

ध्यान से रहनेवालों को, ध्यान से सुननेवालों को जवाब चाहिए। इसलिए उत्साह के लिए साधन, उसकी संबंधित ज्ञान जिस को नहीं है, उसे दी जाती है।

यात्रिकों के लिए इंतजार करते हुए रुक गयी बस जैसी है यह साधन,

उत्साह अभी तक न आने की परिस्थितियों में, मेरी आत्मा की स्थिति पर निर्भर है ।

मेरी जनता से मिलकर रहने की इच्छा समृध्दि रहने के कारण

उत्साह के लिए रही साधन, शक्ति से अंत्यकाल की उत्साह दृढ से, अधिकार से, बहुत ही प्रतिज्वलित आग से उत्साह रहेगी।

शैतान के दूताओं को एक ओर फेंक कर,
मेरे बारे में गवाह देनेवाला मनुष्य रहता है।
उत्साह की साधन दंड, भगवान की अंत्यकाल की हस्ताक्षर हैं।
भगवान की हस्ताक्षर से लडने वाला को श्रम है,
भगवान की हस्ताक्षर को दृढ नहीं करनेवाले को श्रम हैं,
भगवान की हस्ताक्षर छोडकर भाग जानेवालों को भी श्रम है।
उत्साह की दंड के नीचे, फिर से जन्म लेनेवाले धन्य हैं।
उनकी की दंड के नीचे वापस आनेवाले धन्य हैं,
जो अपनी यात्राओं को खसकर पकडनेवाले धन्य हैं,
जो अपनी वादा को स्थाई रखने को निश्चय करनेवाले,
अपनी निर्णयों को पकडनेवाले धन्य है
उत्साह के दंड से स्थापित हुई पवित्र विश्वास रहनेवाले धन्य हैं।
मेरे राज्य में आनेवाले धन्य हैं।
मेरी कृपा को प्राप्त होनेवाले धन्य हैं।
त्याग के संबंधित पवित्र पात्रों को,
नए करार की स्थिति उसकी प्रयोजन को गौरव देनेवाले धन्य हैं।
पूर्व के मेरे शिष्य गण को, अनुकरण करनेवाले धन्य हैं।
शिष्य बनकर मेरे साथ आनेवाले धन्य हैं,
अपने पडोसों के साथ प्रेम से, विश्वास सहित सेवक बनकर मेरे साथ आनेवाले धन्य हैं।
उत्साह साधन, भगवान के आग को बहुत ही लोगों को पहुँच देती हैं।
शुध्द करनेवाला आग, सिर्फ लग गयी बहुत ही लोगों से अभी पूरा आग को उत्पन्न करेगी।
वे अपने सजीव भगवान से समय व्यतीत करने केलिये एक गवाही के साथ रखकर ही साथ आनेवालों को ले जायेगी।

इस तरह ''जलाने के सेवक यानी सजीव भगवान के सेवक जलाने के लिये जरूरी इंधन को ले आयेंगे । वह उछलते हुए जलाकर

विस्तार देता है और बडे होने को
मनुष्य मिलते ही अद्‌भुत और आश्चर्य कार्य दिखाने केलिये
गवाहियों का विस्तार और शक्ति जो है, साक्षी में पैदा होते हैं ।

शक्ति सहित लोगों के बीच पैदा होनेवाली
कृपा से भरे जगहों में,
मनुष्य के हृदय में पैदा होगी,
पुनः जन्म के साथ रहनेवाले परिवार फकता में आजाते हैं,
सभी एक ही मंजिल की ओर पहुंचने को,
यानी अंत्यकाल विश्वास को स्थिर रखने को इसे अपना भेडों ।

उज्जीव दल यानी अंत्यकाल में भगवान के सेवक,
यानी भविष्य का देखने लायक और अच्छे लोग,
सही लोग और अत्साह से भरे लोग,
दूसरों पर रखने योग्य, आग होनेवाले हाथ

परिशुद्धात्मा की शक्ति के द्वारा, दृढ़ शक्ति सहित जो हैं,

वे पुत्र की महिमा के लिए, भगवान इस धरती पर अपने राज्य को स्थापित करेंगा।

उज्जीव दत्त जो है, वह कई लोगों के नये गहों को जाना देवता हैं ।

भगवान के लिए कई आत्माओं को सुरक्षित रखना, भगवान के अधिकार में होगी,

अगर अवरोध होते तो उनसे लडाई करने को सही संख्या में और शरपूर्ण रूप से लोग,

आग पूरी तरह से जलाने तक रहनेवाले शुरूआत सभी दिनों में पर्यवेक्षण के लिए,

भगवान के वश में लाने केलिये पूरा इंधन खतम होने तक भगवान की आग खडे होगी।

इसीलिए उज्जीव दण्ड, भगवान की इच्छानुसार नये प्रदेशों को आगे बढेगी

इतना ही नहीं अंत्यकाल में मेरी जनता को, धरती भर आग को फैलाने की इच्छा से रहेंगी।

अंत्यकाल में बहती हुई कृपा

कृपा का बहना जो है वह विशालता और वैविध्य भरित दशा हैं।
स्वर्ग की हवा से भरी रहेगी।
हर एक बारिष की बूँद में रहेगी ।
अंत्यकाल में करोड लोगों को काफी रहती है ।
कृपा बहना जो है बहुत खामोश हैं लेकिन मनुष्य की आत्मा से बात करेगी।
वह सच्ची है लेकिन मनुष्य उसे नहीं छू सकता,
पुनः एकता की हालत लाती पर उसे नहीं भेज सकते था
करीद सकते।
कृपा की बहोव पूर्णता से मनुष्य को घेरे हुए रहेंगी,
मनुष्य को अपनी पाप में घेरी रहेंगी,
मन बदलाव के जोशये मनुष्य को घेरी रहेगी,
एक नवीन शुरूआत दशा को आ जायेगी
भगवान के असली सत्य रूप के कारण मनुष्य को घेरे रहता है,
नित्यत्व के असती खुश में व्याप्त करेगी
प्रभु की वधु संघ को लाभदायक होकर व्याप्त होगी।
कृपा बवाह बलहीन को, बलवान लोगों को विनयशील करेगी,
अकेल रहनेवालों को, परिवार सहित रहनेवाले लोगों को,
शांत रहनेवालों को, ज्यादा बात बोलनेवालों को
मूर्ख लोगों को, अकल मंद व्यक्तियों को,
ढूँढनेवालों को और संतुष्ट लोगों को,
निस्सहाय लोगों को और संपन्नवालों को
धर्म को पालन करनेवालों को और नास्तिक लोगों को समझइदार बनाते हैं।
कृपा का बहना जो है सभी को कृपा सिंहासन के सामने लायेगी,
कृपा के द्वारा की गयी त्याग सभी को आगे लायेगी।
पूर्व से अभी तक, अब से भविष्य को कई विषय भविष्य के लिये पढायेगी।
कृपा का बहना जो है, पाप के परिणाम से नहीं रहेगी,
पाप के प्रकार के कारण या,
पाप की स्थिति के कारण या,
पाप का अनुभव करने की विधान के कारण या,
पाप की परिणाम कारण या,
पाप की समय के कारण या,
पाप की वादा के कारण से भी नहीं रहेगी,

वह भगवान की क्षमा गुण को प्रफलित करेगी,
भगवान से अंगीकार,
भगवान के परिवार मे स्वागत होनेवाले व्यक्ति को उत्पन्न करना।
वह भगवान की शुध्द करने की शक्ति के कारण होगा ।
उस घर में एक नवीन अतिथी को प्रतिष्टित करेगी,
भगवान की समृद्धि के लायक मार्ग की दिखायेगा,
भगवान से एक नवीन संबंध लायेगा
उनकी आत्मा से आनेवाले आशीर्वादों को दिखायेगा,
भगवान की नजर में मनुष्य को ठीक व्यक्ति बनायेगा,
मनुष्य की नवीन शुरूआत में,
पुरानी स्थिति को भूलजाने की स्थिति को,
मनुष्य की जिंदगी की शक्ति फ़िर पाने को,
मनुष्य की उमंगों की चमक वापस मूल्यों को बनाने के लिये
पवित्र और परिशुद्धता को वापस मूल्यवान बनाने का विधान रहेगा।
कृपा प्रवाह, मित्रों को और दुश्मनों को भी बदलती है।
परिवर्तन को समझा जाता है ।
भगवान की अस्त्रों से मनुष्य को भर देते हैं
कृपा प्रवाह सत्य मार्ग और प्रशांतता की ओर ले जायेगी।
मनुष्य की आत्मा का निश्चय के लिये आवश्यक उचित सफलता देती है,
भगवान की वादा के लोग बनायेगी
पहले जानेवाले लोगों की व्यवहार शैली को बदलायेगी,
सभी को जीत करनेवाले मनुष्य को बनाने केलिये उचित हढता देती है।
आत्मा के द्वारा नयी दर्शनों को प्राप्त कर नई रीति में बढने देती है ।
कृपा का प्रवाह जो है वह मानव जीवन में एक प्रधान अंश है,
मनुष्य इस जिंदगी में
मनुष्य के इंसाफ की दशा में एक प्रधान अंश है ।
भगवान से अनुग्रहित आत्म की सुंदरता की जरूरी स्थायी को खोलने की बात यह है कृपा प्रवाह।''

अंत्यकाल में हृदय की कटाई

सुन्नति जो है उस को मनुष्य की जननेंद्रिय के संबंधित नहीं होना चाहिए।

अंत्यकाल में सुन्नति जो हैं
हृदय की सुन्नति समझना है।
पाप से उसे विमुक्त करना
सब कमरों को विमुक्त करना
उस अंधेरी कमरों को साफ करना
उन कमरों को साफ करना

अंत्यकाल की सुन्नत जो है –
हृदय की जरूरी प्रार्थनाएँ करना
हृदय के विचार में विश्वास
उसको पाप से विमुक्त करना,
हृदय की एकता
हृदय स्पंदन की विश्वसनीयता कही जाती है।

अंत्यकाल की हृदय सुन्नति जो है,
दृढ से भरे सच्च और बुराईयों को जाँच करेंगी,
अभी भी बहन कर रही पैर के भार को जाँच करेंगी।
अभी भी माफ न हुई, और माफी मांगनेवालों को भी जाँचती है।
आत्मा में तैर रही शौक को परिशीलन करेगी,
आत्मा में विवाद सहित मानव उद्धेश्यों को जाँच करके ठीक करेगी,
अंत्यकाल की हृदय सुन्नति जो है,
मनुष्य की असमानता को ठीक करेगी,
वह झुकतेवाली विचारों को ठीक करेगी,
सीधा खडे होने की शक्ति को प्रदान करेगी।
अंत्यकाल में हृदय सुन्नति जो है,
छिपाके रखे पैरों को निकालेगी,
दूसरों के प्रभाव के कारण,
इसके पहले की गयी गलतियों के कारण
अनावश्यक, प्रस्तुत को पालन करनेवाली गलतियों को
प्रभु ईसा के वधु संघ में छिप के रहे दोषों को निकालेगी

अंत्यकाल में हृदय सुन्नति जो है
एकत्व को स्वीकार करेगी,
गडबिड को भाग देगी

विश्वास सहित लोग, और दृढ लोगों को भी निमंत्रण करेगी।

अंत्यकाल की हृदय सुन्नति अच्ची स्वास्थ्य की सूचना हैं,
सत्यपथ को निकलेगी,
जितने कपडे है सभी को साफ करके साफ सुधरे रखेंगी
मेमन के लिए उन्हें दिखायेगी।
देवदूत के समान देखा जायेगा,
खाली तख्ती को न्याय सम्मत करेगी,
निकालने योग्य सभी अभिलेखों को निकालेगी।
वह जलूस की पद्धति को अपनायेगी,
होनेवाली काम–काज,
विचार में पवित्रता, बातों में पवित्रता को
क्रिया में भी पवित्रता को, खोजती है।
वह सूली पर पाप को मिठायेगी,
सत्य में वह नाता हुई अंधेरी को पाप को सोंपेगी,
वधु – संघ से पाप को अलग करेगी।
वह सत्य को जाँच के लिये खडा रखेगी,
सत्यमार्ग की बर्ताव में सत्य के साथ रहेगी।
भगवान से डरकर सत्य को अपनायेगी।
हृदय की सुन्नति जो है।
फैसला लेने की स्थान में पूरी होगी।
समाधि क लिये तैयार रही स्थिति में,
परिवर्तन पाने की उस समय के आगे खडे रहेगी।
वह वधु संघ को तैयार रहने की आवश्यकता के बारे में
साफ करने की जरूरत को, आखिर शरीर संबंधित मुक्ति के लिए तैयार होगी।
अंत्यकाल में हृदय की सुन्नत
भगवान की परिवार में, प्रभु क्रीस्तु की वधु संघ का प्रवेश करना निश्चय रहेगी।

भगवान के समक्ष में न्याय की इंसाफ प्राप्त लोगों को पवित्र लोगों के साथ भेजेगी।

फैसला लेकर निश्चित रहनेवालों को, संरक्षण प्राप्त हुए लोगों के साथ कृपा में जमा करेगी।

सजीव प्रेमपूर्ण भगवान की शिष्य होकर गवाही देने के कारण साथ जानेवाले, भगवान के तारा के बीच निमंत्रण किये गये हैं।

अंत्यकाल में मानव की समझौता

अंत्यकाल के मानव का समझ जो है
मनुष्य की स्वतंत्रता की एक उदाहरण है।
उसकी जरूरतें पूरी न होने की एक उदाहरण है।
चारों ओर रही परिसर की वैविध्य को स्वीकार करना,
स्वयं वहाँ वह पहुंचते ही अपने आपको कैसे देखेगा
जिंदगी को अनुभव करने का कारण मालूम होना है।
अंत्यकाल में मानव की समझौता जो है–
जिसका निभाया उसको होना,
ज्ञानर्जन की एक स्थिति है
दैनिक जरूरतों की प्रतीक है,
जो हुई है उन्का रक्षण साधन है,
एक सूचना को परी तरह से गंभीर रखना है।
अंत्यकाल में मानव की समझौता जो है वह भगवान से उसका इतिहास,
भगवानने उसको कैसे देखा, किस प्रकार वह विचार कर रहे है जो है,
यह विषय कि जिंदगी में व्यक्ति की जरूरतों को किस प्रकार संभाल कर सका आदि को याद करना है
भगवान की समूह से उसने किस प्रकार निमंत्रण प्राप्त किया है,
उसने अपने जिंदगी में भगवान की सत्य को कौन सी स्थायी में समझा,
अंत्यकाल में मानव की समझ कई रंगों में है।
जो लोग ऐसे बोलते हैं कि वे भगवान को जानते है।
उसकी रिश्ता के कारण कोई शरतों के बिना उसकी
परीक्षा करने की उद्धेश्य है।
एक परिवार हो, एक व्यक्ति हो, पूर्ण रूप से जानने केलिये एक विषय पर श्रद्धा होते तो,
उसकी श्रद्धा को बढानेवाले, जिंदगी की गवाह रखनेवाले विषय होगा,
अंत्यकाल में मनुष्य की समझौता जो है उसके सहचरों के कारण दृढ होगी,
भगवान से उन के जो गौरव है,
भगवान से उन के जो विमर्श है,
भगवान से दिखाया गया वैद्य को देखे होंगे

मनुष्य के लिए बुलावा

मनुष्य की अंत्यकाल की समझौता जीवन में प्रधान मोड है ।
एक फैसला, एक जीवन विधान को बदलते वक्त,
जिंदगी को प्रभावित करें तो,
एक परिवार को निर्माण करने को प्रभावित करे तो,
उस समय की नीति को प्रभावित करे तो, भगवान की नीती को निश्चय करने में प्रभाव रहेगा।
अंत्यकाल में मनुष्य की समझौता,
निराशा की चौखाटा में बडे, बडे वृत्त
खामोश रहने की वृत्त
व्यतिरेक कहने की मध्यभाग से बडी वृत्त पकड कर रहेंगे।
ग्रहण करना जो है मनुष्य की रास्ते में जो रोकनेवाले है उनको देखने को,
अनुभव के द्वारा बडी हो रही अकल को ढूँढते हुए,
घंटों की गिलास में रही रेत की तरह, उनके साल बडे होने को समझेगी।
उसका स्वास्थ्य की क्षीणता को ग्रहण करती रही, उसका समय समीप होते ही,
उसका जीवनकाल में बदल रही मूल्यों को ग्रहण करना ही है।
अंत्यकाल के मानव की समझोता –
बूमरेंग डालनेवाले को ग्रहण करेगी,
उसे दोनों हाथों से पकडना मालूम होगी।
गगन में उसका काम और उसकी कोशिशों की पता होगी।
अंत्यकाल में मानव की समझौता
भगवान से एक कोशिश से होगी।
थोडी सी इतिहास को दूंढने की बर्ताव रखना है ।
उसका थोडी सी जीवन के जीतों को,
मनुष्य के समान बीत यह बाजू में रहते ही उसका स्वीकार करना।
अंत्यकाल में मनुष्य की समझौता
जीत से रोकना है,
फैसला को प्रकटित करते वक्त उपस्थिति होना है।

तारा के पास एक अच्ची रास्ता को बनाना

भगवान से दियेगये इन जगहों में खडे होना

हरेक आत्मा पर कृपा पुरस्कार के बारे में, उसकी गौरव के बारे में ग्रहण करना,

अपनी आत्मा से, अंतरंग में हुई परिवर्तन को निरंतर कृतज्ञता भाव को प्रकट करना है।

Journaling and Notes

रचनाकार के बारे में

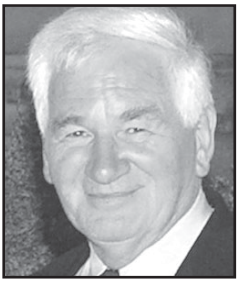

आंथोनी जी का उम्र 71 वर्षा है, वे 'अड्रिन' जी को शादी करके 48 सालों से वैवाहिक जीवन बिता रहे हैं। उनके पाँच बच्चे हैं, वे सब शादी सूदे हैं। कारोलिन, अलन, मारी, एम्मा, शारा। दस पोते और पोतियाँ हैं। मात्यू, एल्ला, फिरिप्पा, जोनातानु, जेरेमी, नेरी, जेके, बिजोर्न, गीट्रा और मीनाका ये सब उनके नाम है।

आंथोनी जी सन् 1940 की आदि में न्यूजिलांड की कथांटरबरी से संबंधित स्पिंगठन में जन्मा हुआ, 1962 में कयांटर बेरी विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र, गणित विषयों में बि. एस. सी. को उपाधी प्राप्त किया। पहले उन्होने पारिश्रामिक रसायन शास्त्री का काम कर बाद में तेल परिश्रम में ब्रिटन, आस्ट्रेलिया और न्यूजिलांड में काम किया। रसायन परिश्रम में बचेने की शाखा में नाम कमाया।

1976 तक वह परिवार प्लोंटे कूपे को बदला है। आंथोनी जी ने 1990 तक अंतिम कार्यक्रम निर्वाहण संस्था में न्यूजिलांड की हामिल्टन में काम किया। उसमें वे भागस्वामी है। इस संस्था से बहुत ही दूसरे संस्थाओं से देश में बहुत प्रदेशों से संबंध है। आंथोनी जी ने फकांटि में व्यापार की निर्वहण में, कम्पूटर काम–काज में भी अधिक अनुभव कमाया है।

अंतिम कार्य निर्वाहण संस्था से विराम लेने के बाद 2000 वर्ष में उन्होंने अपने आप स्वयं एक साफ्टवेर प्रोग्राम को सन्नद्ध किया है। वह न्यूजिलांड मौसम की उचित विधान ठीक होने जैसे निर्वाहित किया। इसमें जातीय प्रतिष्टा को कमाई आंथोनीजी ने इससे भी 2007 में विरमण किया। आंथेनीजी उनके मॉ–बाप के साथ मेथडिस्ट विश्वास में रहे थे। इसके पहले बाप्टिस्ट डिना मिनेपन में से बाद 1990 से पिन्तेकुस्तु विश्वास में रहे हैं।

उन्होंने अपनी पत्नी के साथ एशिया खण्ड की बहुत ही देशों को आये थे। (2011–2012) में भारत देश आकर प्रभु की सेवा में पुनीत हुए हैं।

समाप्ति शब्द

इस संकलन में हर एक शब्द अपनी ज्ञान को समझाती है। मानव की ज्ञान के द्वारा हो, विचार शक्ति के द्वारा हो ये नहीं आये।
इसी प्रकार हर एक को समझना है। उनका जन्म, उद्धेश्य, सत्य हुआ विषय, समग्र परिशीलन करे तो वह समझ में आयेगा।

यह ग्रंथ किनारों में मनुष्य की अस्थित्व, उसकी इच्छाएँ, ज्ञान, समझौते के साथ मनुष्य की अभिवृद्धि और भगवान से मनुष्य की सहवास के संबंधित है। इसी प्रकार और तीन ग्रंथ, आत्मीय आहार के संबंधित है, दैविक विवरण के साथ, दैव वाक्यों की गहराई के बारे में समग्र लिखी गयी है, आजकल ही प्रकाशित हुई है (पेज – 4)

प्रभु ईसू पर विश्वास, क्रीस्तू मात्रा ही भगवान के पास जाने का मार्ग है, ईसू ही एकैक व्यक्ति, भूमी के इतिहास में महत्वपूर्ण व्यक्ति ईसू ही है। उनको आसानी से छोडना नहीं, क्यों कि मानव की भक्ति, विश्वासों केलिए वही कर्ता है।
बहुत ही सारे हत साक्षी अपनी आक्रंधन के द्वारा, वे स्वयं विश्वासों खून छिलकाने के द्वारा गवाही दे रहे हैं।

मनुष्य की समाधी के बाद होनेवाली जीवन, अस्थित्व के बारे में इस पुस्तक के बुलावों को कायम कर रहे हैं। इतना ही नहीं मर्त्य इस जीवन काल में मनुष्य किस प्रकार ज्ञान को कमाना है, किस प्रकार का सन्नध्द होना है आदि विषयों को सिखा रही हैं।

मनुष्य की मंजिल एक ओर अंधेरी की अधिपति शैतान की तरह काली या ईसाई की तरह सफेद रहती है।
इन दोनों में जो चाहे वह आसानी से मनुष्य को प्राप्त होगी। अंधेरी जो है एक आग की तुफान जैसे–देर के द्वारा, अवधि के कारण, बुरी अभिप्राय के कारण खोजना जो है उसे छोडने के कारण– इस जीवन मष्त्यु को पहुंचकर आँखें बंध करने तक संभावित होगी। उस समय अच्छी उच्चे विषय नहीं दिखेगी। विवाद करने की विषय न मिलेगी, विनती करने को कोई भी विषय न मिलने के कारण अंधेरी उस दिन पर हमला करेगी।

यह किताब बहुत सारे नये मौके को, नवीन जीवन के मार्गों को दिखाने की एक सीढी और एक प्रारंभ श्रत की तरह दिखा रही है। प्रभु से दिये गये इन कागजों में कही गयी मर्त्थता से छडाव को, सत्य को, चाहने के विधान में है। ये प्रभू ईसू क्रीस्तू, भगवान की मेमन, यूदा के शेर, राजाओं का राजा, सभी जगत मानव पापों का विमोचक, गलत रास्ते में जानेवालों को बचानेवाले प्रभु क्रीस्तु इसू ही है।

मेरे सेवकों की अंन्यकाल की सेवा

इस कपायुग में
आदमी की मनमाना बर्ताव, मेरे सेवकों के खिलाफ गिना नहीं जाता है ।
मानव की बातों के दोष,
उनके पैरों की वक्र बर्ताव,
उनके हाथों के दोष भी. मेरे सेवकों के खिलाफ गिना नहीं जाते हैं ।
मेरे बच्चे और मेरे सेवक अपने दिल से बातचीत करेते हुए आगे चलते हैं और आशीर्वाद पाते हैं ।
हर एक दिल से आनेवाली प्रर्थना, विश्वास के साथ पापी की विमुक्ति देनेवाली भरोसा,
उसको वश में लाने का काम होता है ।
वह आदर लाने का काम है, वह भगवान की सहायता के लिऐ,
उनकी गद्दी के सामने, रहनेवाला एक काम है ।
मेरे सेवकों के मुँह से आनेवाली बातों का सिलसिला,
उनके विश्वास को मजबूत करने केलिये,
उनके निवेदन, उनकी अत्माओं से बात करने के वास्ते,
उनकी अंतरंगों को दिखाई देनेलिये मदद देते हैं ।
मेरे सेवक, भगवान की इच्छा के अुनुसार काम करते हैं ।
चालचलन में, जान में, उस दिन के भौतिक जान से सेवा चलाते हैं ।
वह आत्मा पर प्रभाव रखते हुए,
अंतरंग पर प्रभाव रखते हुए,
रोते हुए निवेदन करने वाले के शरीर के बारे में ध्यान रखते हुए, भगवान की सहायता ढूँढती हैं ।

इस किताब के साथ और तीन किताब हैं । उनके साथ यह किताब संपूर्ण हो चुका है । वह भगवान की संपूर्णता और मानव के साथ आदि में जिस तरह रहते थे और आज की संपूणता पाने तक, जो बदलाव रहे, उसके बारे में समझाती है ।

मानव के लक्ष्य, भगवान के साथ रहने केलिये पवित्र की गयी हैं । कई बार मानब केलिये चेतावनी दी गयी, मगर वह अपने आप सुधार नहीं किया और कई बार सलाह दिये गये, मगर सत्य और झूठ के बीच रहने वाली फरक को दिखाई दी यह झूठ मानव को गुलाम करती है । इस दशा को मानव समझ नहीं पाता है ।

भागवान के मार्ग, मानव केलिये बहुत उपयोगी रहते हैं । शैतान से रहनेवालों में शत्रुत्व पैदा होता है । उसको, हम, ऊँचे लोक के काामकाज में, देख सकते हैं । भगवान के दूत जिनहोने गलत मार्ग को अपनाये, उनके लक्ष्य भी गलता हुई और शैतान के साथ खराब होगये ।

अब तक बहुत देर हो गया ऐसा समझना नहीं और निकम्मा न होकर, आज ही सोचना है । उससे जो लक्ष्य तुम्हें पहुँचना है उसकी ओर बढकर आगे जाना है । गलती हुई है । उसी में पडे रहना नहीं ।

ISBN: 978-0-9922547-1-1
9 780992 254711